lोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–22

दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

दक्षिण की परियों की कहानियाँ

चार्ल्स औगस्टस किनकैड

1914

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken-22
Book Title: Deccan Ki Nursery Ki Kahaniyan (Deccan Nursery Tales)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Deccan

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक् और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

दक्कन की नर्सरी की कहानियॅ

ये नर्सरी की कहानियॅ सी ए किनकैड ने मराठी से अनुवाद कर के अंग्रेजी में लिखीं और फिर इन्हें 1914 में प्रकाशित किया गया।[2] यह पुस्तक यद्यपि सन् 1900 से बाद की प्रकाशित पुस्तकों में आती है पर इसे इस आधार पर चुना गया है कि यह एक क्लासिक पुस्तक है और भारत की लोक कथाओं की सभी अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद करने की योजना के अनर्गत आती है।

इस पुस्तक में कुल 20 कथाऐं दी गयी हैं। आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद कर के अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। आश्चर्यजनक रूप से ये सारी कथाऐं कहीं न कहीं भगवान और देवी देवताओं से सम्बन्धित हैं और एक ही जगह "अटपट" से इकट्ठी की गयी हैं।

लेखक किनकैड का लिखना है कि "ये कथाऐं सबसे पहले "टाइम्स औफ इन्डिया" नामक अखबार में प्रकाशित की गयी थीं। मैंने इनको मराठी भाषा से शब्द ब शब्द अनुवाद करने की पूरी कोशिश की है पर मराठी और अंगेजी भाषाओं की शैली में अन्तर होने के कारण कहीं भाव बदल गया है। कभी कभी मूल रूप के मिलने के अभाव में भी भाव बदल गये हैं। कही कहीं मैंने हिन्दू रस्मों का विस्तृत वर्णन काट दिया गया है ताकि अंगेजी पढ़ने वाले थकें नहीं।"

आशा है कि ये लोक कथाओं की यह क्लासिक पुस्तक आप सबको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये ये भारत की मराठी की नर्सरी की कहानियॅ हिन्दी में अब पहली बार।

---

[2] "Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from the South:. By CA Kincaid. 1914. 20 tales. Here these stories are given in Hindi. This book is available in English at : http://www.gutenberg.org/files/11167/11167-h/11167-h.htm
Deccan, the entire southern peninsula of India, south of Narmada River up to the Southern tip of India. It extends over eight Indian states including – Telanganaa, Maharashtra, Andhra Pradesh, Karnatak and Tamil Nadu.

1 रविवार की कहानी[3]

जब अंग्रेज लोग बच्चे होते हैं तब वे सुनहरे बालों वाली बच्ची और तीन भालू की, सिन्डरैला और राजकुमार की, भेड़िये और लिटिल रैड राइडिंग हुड की कहानियाँ सुनते हैं। जब वे बड़े हो जाते हैं तो धीरे धीरे उनके दिमाग से ये कहानियाँ धुँधली पड़ने लगती हैं।

फिर एक समय आता है जब वे और बड़े हो जाते हैं और उनके अपने बच्चे हो जाते हैं तो वे उनको उन्हीं कहानियों को सुनाने में ज़्यादा आनन्द लेते हैं जिनमें उनको अपने बचपन में खुद ज़्यादा आनन्द आता था। इसी तरह से ये पुरानी नर्सरी कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी कहती सुनती चली आ रही हैं।

भारत में भी यही होता है। वहाँ भी जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और फिर उनके बच्चे हो जाते हैं तो वे भी अपने बच्चों को वही कहानियाँ सुनाते हैं जिनको सुन सुन कर वे बड़े हुए थे।

वहाँ की नर्सरी कहानियों में यूरोप की नर्सरी कहानियों के मुकाबले में धार्मिक पुट ज़्यादा होता है पर फिर भी इस वजह से उनकी वहाँ कोई कम महत्ता नहीं है।

इस पुस्तक की पहली छह कहानियाँ यह बताती हैं कि दिनों के नाम और दैवीय ग्रहों के नामों में क्या सम्बन्ध है। इस तरह हफ्ते के हर दिन की अपनी एक कहानी है।

---

[3] The Sunday Story (Tale No 1)

और सारे अगस्त भर यानी सावन के महीने भर क्योंकि शायद उस महीने में सारा महीना बारिश होती है दक्कन की मॉऐं हर हफ्ते ये कहानियॉ कहती हैं और बच्चे भी उनको बहुत ध्यान से सुनते हैं।

क्योंकि नर्सरी में, चाहे वे भारत की हों या इंगलैंड की, बच्चे अपनी पुरानी कहानियॉ ही सुनना ज़्यादा पसन्द करते हैं जिनमें उनको उन कहानियों का अन्त मालूम होता है। इस तरह से वे उन छोटी छोटी गोल गोल ऑखों वाले सुनने वालों की समझ में ज़्यादा अच्छी तरीके से आती हैं।

यह कहानी वहॉ सावन के महीने के हर रविवार को कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि अटपट नाम का एक शहर था। उसमें एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह लकड़ियॉ चुनने और घास काटने के लिये रोज जंगल जाता था।

एक दिन वहॉ उसे कुछ परियॉ मिलीं जो सूरज भगवान के लिये कुछ पूजा कर रही थीं। ब्राह्मण ने उनसे पूछा — "यह तुम लोग यहॉ क्या कर रही हो।"

परियों ने जवाब दिया — "अगर हम तुम्हें यह बता देंगी तो तुम बहुत घमंडी और बेकार हो जाओगे और फिर तुम उन रीतियों का ठीक से पालन नहीं करोगे।"

ब्राह्मण ने वायदा किया — “नहीं। मैं घमंडी भी नहीं होऊॅगा और में बेकार भी नहीं होऊॅगा और मैं वैसा ही करूॅगा जैसा कि तुम मुझे बताओगी।”

तब उन्होंने उसे बताया कि अभी सावन का महीना आने वाला है तो सावन के पहले रविवार को वह लाल चन्दन से सूरज भगवान की एक तस्वीर बनाये। फिर उस तस्वीर को फल फूल अर्पण करे। और वह ऐसा छह महीने तक करे। उसके बाद वह कुछ लोगों को खाना खिलाये और गरीबों को दान दे। इसका तरीका भी उन्होंने उसको बताया।

यह सुन कर ब्राह्मण घर चला गया और सावन का पहला रविवार आने पर उसने सूरज भगवान की उसी तरह से पूजा की जैसी कि उन परियों ने उसे बतायी थी। उसकी पूजा से सूरज भगवान बहुत खुश हुए। उनकी कृपा से वह ब्राह्मण दिनों दिन अमीर होता चला गया।

अब ऐसा हुआ कि वहॉ के राजा की रानी ने उसको बुला भेजा। रानी जी का बुलावा सुन कर तो ब्राह्मण की कॅपकॅपी छूट गयी वह सोचने लगा कि रानी जी ने मुझे पता नहीं क्यों बुलाया है। पर रानी जी का हुक्म वह कॉपता हुआ रानी जी के पास पहुॅचा।

उसको इस तरह कॉपता हुआ देख कर रानी ने उसको तसल्ली दी — “हे ब्राह्मण कॉपो नहीं। डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने

तुम्हें यहाँ इसलिये बुलाया है कि तुम अपनी बेटी हमारे घर में दे दो।"

ब्राह्मण फिर भी काँपते हुए बोला — "रानी जी। मेरी बच्चियाँ तो गरीब हैं तो क्या आप उन्हें अपनी दासियाँ बनायेंगी?"

रानी बोली — "नहीं मैं उनको अपनी दासियाँ नहीं बनाऊँगी। मैं उनमें से एक की शादी एक राजा से कर दूँगी और दूसरी की शादी किसी मन्त्री से कर दूँगी।"

ब्राह्मण इस बात पर राजी हो गया और जब मार्गशीर्ष यानी दिसम्बर का महीना आया तो उसने अपनी दोनों बेटियों की शादी कर दी – एक की राजा से और दूसरी की एक मन्त्री से। शादी के बाद से 12 साल तक ब्राह्मण ने अपनी बेटियों को फिर नहीं देखा।

तब एक दिन वह अपनी बड़ी बेटी को देखने गया जिसकी शादी राजा से हुई थी। उसने अपने पिता को बैठने के लिये एक लकड़ी का स्टूल दिया ताकि वह उस पर बैठ कर खाना खा सके और उसके पैर धोने के लिये पानी दिया और बोली — "पिता जी खाने के लिये खीर है और पीने के लिये पानी है।"

ब्राह्मण बोला — "इससे पहले कि मैं कुछ खाऊँ या पियूँ मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाना चाहता हूँ।"

पर बेटी बोली — "पर पिता जी। अभी तो आपकी कहानी सुनने का मेरे पास बिल्कुल भी समय नहीं है। राजा साहब शिकार

पर जा रहे हैं और मैं उनको खाने के लिये इन्तजार नहीं करवा सकती।"

ब्राह्मण को यह अपना अपमान लगा और वह वहाँ से उठ कर बाहर चला गया। वहाँ से चल कर वह अपनी दूसरी बेटी के घर पहुँचा जो एक मन्त्री को ब्याही थी।

उसकी दूसरी बेटी ने उसका स्वागत किया और खाना खाने के लिये उसे एक स्टूल दिया। पैर धोने के लिये पानी दिया और बोली — "पिता जी खाने के लिये यह खीर है और यह पीने का पानी है।"

ब्राह्मण ने उससे भी यही कहा — "बेटी इससे पहले कि मैं कुछ खाऊँ या पियूँ मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाना चाहता हूँ।"

बेटी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं पिता जी। आप सुनाइये न। जब तक आप सुनाते रहेंगे तब तक मैं सुनती रहूँगी।"

फिर वह अपने अन्दर वाले कमरे में गयी और वहाँ से छह मोती ले कर आयी। उसने तीन मोती अपने पिता के हाथ में रखे और तीन मोती अपने हाथ में पकड़े।

फिर उसके पिता ने उसे बताया कि कैसे एक दिन उसको जंगल में कुछ परियाँ मिली थीं और कैसे उन्होंने उसको बिना कोई गलती किये सूरज भगवान की पूजा करना बताया।

फिर उसने खीर खायी पानी पिया और अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसकी पत्नी ने अपनी बेटियों के बारे में पूछा तो उसने

उसको सब कुछ बता कर कहा कि हमारी बड़ी बेटी ने मेरी बात नहीं सुनी इसलिये उसके ऊपर जरूर कुछ दुख आयेगा।

और फिर ऐसा ही हुआ।

उसका राजा पति एक बार बहुत बड़ी सेना ले कर दूर किसी दूसरे देश गया और फिर कभी वापस नहीं आया। लेकिन उसकी छोटी बेटी जिसने उसकी कहानी सुनी थी वह आराम से खुश खुश रही।

जैसे जैसे समय गुजरता गया ब्राह्मण की बड़ी बेटी गरीब और और ज़्यादा गरीब होती चली गयी। एक दिन वह अपने सबसे बड़े बेटे से बोली — "बेटा तुम अपनी मौसी के घर जाओ और उनसे कुछ माँग कर लाओ। और वह जो कुछ भी तुम्हें दे उसे ले कर घर वापस आओ।"

अगले रविवार को वह उस गाँव गया जहाँ उसकी मौसी रहती थी। गाँव के तालाब के पास खड़े हो कर वह चिल्लाया — "ओ दासियों तुम लोग किसकी दासियाँ हो?"

तो उन्होंने जवाब दिया — "हम मन्त्री जी की दासियाँ हैं।"

तो लड़का बोला — "जाओ मन्त्री की पत्नी से कहना कि उसकी बहिन का बेटा यहाँ है। उसको कहना कि वह गाँव के तालाब के पास खड़ा हुआ है। उसका कोट बहुत पुराना हो गया है उसके कपड़े फट गये हैं। वह उसको अपने पिछले दरवाजे से घर के अन्दर आने देने की कोशिश करे।"

मन्त्री की दासियाँ पिछले दरवाजे से उसे घर के अन्दर ले गयीं। उसकी मौसी ने उसको नहलवाया कपड़े पहनाये खाना खिलाया। फिर उसने एक कद्दू[4] के अन्दर का गूदा निकाल कर उसमें सोने के सिक्के भर कर उसको दे दिये।

जब वह उसको ले कर जाने लगा तो उसने पीछे से कहा — "इसे गिरा मत देना और इसको रख कर कहीं भूल भी मत जाना बल्कि इसे सँभाल कर घर ले जाना।"

जब बेटा घर पहुँचा तो उसकी माँ ने उससे पूछा कि उसकी मौसी ने उसे क्या दिया। बेटा बोला — "माँ उन्होंने तो मुझे बहुत कुछ दिया पर मेरे कर्मों ने उसे मुझसे छीन लिया। जो कुछ भी मेरी मौसी ने मुझे दिया मैंने वह सब कुछ खो दिया।"

अगले रविवार को उसने अपने दूसरे बेटे को भेजा। वह भी गाँव के तालाब के पास जा कर खड़ा हो गया और ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "ओ दासियों तुम्हारा मालिक कौन है।"

उन्होंने जवाब दिया — "हमारे मालिक मन्त्री साहब हैं।"

बेटा बोला तो मन्त्री जी की पत्नी से कहना कि उनका भानजा यहाँ खड़ा है गाँव के पालाब के पास। उसको भी घर के पिछले

---

[4] Translated for the word "Pumpkin". In North India it is called "Kaasheephal" or "Kumhadaa" etc. See its picture above.

दरवाजे से घर में अन्दर ले जाया गया। वहाँ उसको नहलाया गया कपड़े पहनाये गये खाना खिलाया गया।

फिर उसने एक खोखली डंडी में सोने के सिक्के भरे और अपने भानजे को देती हुई बोली — "इसको कहीं गिराना नहीं कहीं भूलना नहीं इसको सँभाल कर घर ले जाना।" रास्ते में सूरज भगवान एक गड़रिये का वेश रख कर आये और उसकी डंडी चुरा कर ले गये।

जब लड़का घर पहुँचा तो माँ ने पूछा — "बेटा तुम अपनी मौसी के घर से क्या ले कर आये।"

तो इस बेटे ने भी जवाब दिया — "माँ भाग्य ने तो बहुत कुछ दिया पर कर्मों ने सब छीन लिया।"

तीसरे रविवार को उसने अपने तीसरे बेटे को भेजा। वह भी गाँव के तालाब के पास जा कर खड़ा हो गया। उसका भी उसकी मौसी ने उसके दोनों भाइयों की तरह से स्वागत किया। उसे नहलवाया कपड़े पहनवाये खाना खिलाया।

जब वह जाने लगा तो उसने उसे एक नारियल को खोखला कर के उसमें सोने के सिक्के भर कर दिये और उससे भी यही कहा — "इसको कहीं गिराना नहीं कहीं भूलना नहीं इसको सँभाल कर घर ले जाना।"

जब यह लड़का घर जा रहा था तो इसने अपना नारियल एक कुँए की जगत पर रख दिया।[5] जैसे ही उसने उसे वहाँ रखा तो वह लुढ़क कर कुँए में जा पड़ा।

जब वह अपनी माँ के पास पहुँचा तो उसकी माँ ने उससे भी वही सवाल पूछा। उसने भी माँ को वही जवाब दिया — "माँ किस्मत ने तो बहुत कुछ दिया पर मैंने सब कुछ खो दिया।"

चौथे रविवार को चौथा भाई गया। मौसी ने उसका भी वैसे ही स्वागत किया और जाते समय एक मिट्टी का बर्तन भर कर सोने के सिक्के दिये। पर रास्ते में सूरज भगवान एक चिड़िया का रूप रख कर आये और उसके हाथ से वह मिट्टी का बर्तन छीन कर भाग गये।

अगले रविवार को माँ ने खुद जाने का फैसला किया। वह उठी और अपनी बहिन के गाँव चल दी। मन्त्री की पत्नी ने अपनी बहिन को अपने घर के पिछले दरवाजे से घर में अन्दर घुसाया।

उसने उसको भी नहलाया कपड़े पहनने के लिये दिये खाना खिलाया और फिर उससे कहा कि यह सब तुम्हारी परेशानी इस लिये आयी है कि क्योंकि तुमने पिता जी की कहानी नहीं सुनी। सो

[5] See the picture of a well. The low wall around it is called "Jagat" in Hindi. Here in this picture a bucket is kept on the Jagat. He put the coconut there and it rolled down in the well.

उसने उसको वह कहानी सुनायी। राजा की पत्नी ने वह कहानी ध्यान दे कर सुनी।

फिर राजा की पत्नी अपनी बहिन के पास अगले सावन तक रही। तब उसने वहाँ सूरज भगवान के योग्य पूजा की।

तुरन्त ही उसकी किस्मत खुल गयी। सालों से लड़ते हुए उसका हारा हुआ पति थका हारा दुश्मन को जीत कर और बहुत सारी सम्पत्ति ले कर घर आ गया।

जब वह घर आ रहा था तो रास्ते में मिनिस्टर का गाँव पड़ता था। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसकी पत्नी तो अपनी बहिन के पास रह रही थी तो उसने उसको घर ले जाने के लिये उसके योग्य लोग भेजे।

जब मौसी के बच्चों ने राजा का छत्र आता देखा तो चिल्लाते हुए अन्दर भागे — "मौसी मौसी देखो तुमको ले जाने के लिये कितनी बड़ी छतरी आयी है। और कितने सारे लोग आये हैं और घोड़े की पूँछें और सिपाही।"

हर आदमी यह जुलूस देखने के लिये बाहर निकल आया। कई साल अलग रहने के बाद राजा और रानी भी आपस में एक दूसरे से मिले। बहिनों ने एक दूसरे को कपड़े दिये। फिर राजा अपनी रानी को ले कर अपने राज्य चला गया।

यात्रा में पहली बार जहॉ नौकरों ने खाना बनाया रानी ने राजा की थाली भरी और फिर अपनी भरी और फिर उसने उस कहानी के बारे में सोचा जो उसकी बहिन ने उसे सुनायी थी।

उसने अपने नौकरों को गॉव में भेज कर किसी एक ऐसे गरीब आदमी को लाने के लिये कहा जो इतना गरीब और भूखा हो कि अपना खाना न खरीद सकता हो।

पर उस गॉव में तो उनको वैसा कोई आदमी मिला नहीं हॉ जब वे वापस लौट रहे थे तो उनको एक लकड़हारा मिला। वे उसको ले आये और उसको रानी को ला कर दे दिया।

उन्होंने उससे कहा कि रानी जी जो कहानी तुम्हें सुनायें तुम उसको ध्यान से सुनना। रानी छह मोती निकाल कर लायी। तीन मोती उसने लकड़हारे को दे दिये और तीन मोती उसने अपने पास रख लिये।

तब उसने उसे अपने पिता की और परियों की कहानी उसे सुनायी। लकड़हारे ने उसे बड़े ध्यान से सुना। लो जैसे ही उसने उसे सुना तो उसके लकड़ी के टुकड़े तो सब सोने के हो गये। वह खुशी खुशी घर चला गया। उसने इरादा कर लिया कि वह भी हर हफ्ते इसी तरह से कहानी कहा सुना करेगा।

अगले दिन उनका कारवॉ एक दूसरी जगह रुका। वहॉ भी नौकरों ने उनके लिये खाना बनाया तो फिर रानी ने राजा की थाली भरी फिर अपनी थाली भरी और फिर अपने एक नौकर को पास के

गॉव में किसी ऐसे आदमी को लाने के लिये कहा जो बहुत गरीब हो और भूखा हो।

उनको एक गरीब किसान मिला जिसका सारा खेत सूखा सा पड़ा था। वह अपने खेत के पास बैठा हुआ था जब उन्होंने उसको अपने साथ चलने के लिये पुकारा।

वह उनके साथ उनके कैम्प की तरफ चल दिया। रानी छह मोती निकाल कर लायी। तीन मोती उसने किसान को दिये और तीन मोती अपने पास रख लिये। तब उसने वहॉ जा कर रानी से उसके पिता और परियों की कहानी सुनी और अपने घर चला गया।

जैसे ही उसने रानी की कहानी सुनी तो उसके कुँए में पानी आने लगा और उसके खेत हरे होने लगे। यह देख कर उसने भी सोचा कि वह भी सूरज भगवान की पूजा हर रविवार को करेगा।

अगले दिन यानी तीसरे दिन कारवॉ फिर से रुका। खाना पकाया गया। रानी ने पहले राजा की थाली भरी फिर अपनी थाली भरी और फिर अपने नौकरों को पास के गॉव से किसी गरीब भूखे को लाने के लिये भेजा।

इस बार उसके नौकर एक बुढ़िया को ले कर आये। उसका बड़ा बेटा जंगल में कहीं खो गया था। उसका दूसरा बेटा कहीं तालाब में डूब गया था और उसका तीसरा बेटा सॉप के काटे से मर गया था।

उन्होंने उससे रानी की कहानी सुनने के लिये कहा। वह वहाँ गयी और उसने रानी की कहानी सुनी। जैसे ही उसने रानी की कहानी सुनी उस बुढ़िया का पहला बेटा जो जंगल में खो गया था कैम्प में घुसा।

उसके पीछे पीछे उसका दूसरा बेटा जो तालाब में डूब गया था वह भी आता नजर आया। और आखीर में जो उसका बेटा साँप के काटे से मर गया था वह भी वहीं आ गया।

बुढ़िया तो खुशी से रोती हुई अपने तीनों बेटों को साथ ले कर घर चली गयी और सोचती गयी कि अब वह हर रविवार को सूरज भगवान की पूजा किया करेगी।

अब वह कारवाँ चौथे दिन फिर एक जगह रुका। वहाँ खाना पकाया गया। खाना पकाया गया। रानी ने पहले राजा की थाली भरी फिर अपनी थाली भरी और फिर अपने नौकरों को पास के गाँव से किसी गरीब भूखे का लाने के लिये भेजा।

अबकी बार नौकर लोग उसके लिये एक ऐसा आदमी ले कर आये जिसकी आँखें इतनी टेढ़ी थीं कि वह मुश्किल से देख पाता था। न उसकी बाँहें थीं और न उसके पैर। और तो और उसका कोई नाम भी नहीं था।

जब उन्होंने उसको देखा तो वह तो बस माँस का एक लौंदा सा लग रहा था। वह अपने मुँह के बल लेटा हुआ था। जब वे लोग

उसको ले कर आये तो रानी ने उसको उसकी पीठ पर लिटाया और उसके ऊपर पानी डाला।

फिर वह छह मोती निकाल कर लायी। तीन मोती उसने उसके पेट पर रखे और बाकी के तीन मोती उसने अपने पास रखे। तब उसने उसको अपने पिता और परियों की कहानी सुनायी।

उसने वह कहानी बड़े ध्यान से सुनी। जैसे जैसे वह यह कहानी सुनता जा रहा था उसकी बॉहें और पैर निकलने शुरू हो गये और आखीर तक तो वह बिल्कुल ठीक हो गया। वह भी खुशी खुशी घर वापस चला गया। उसने भी इरादा किया कि वह भी परियों के ब्राह्मण को बताये अनुसार सूरज भगवान की पूजा किया करेगा।

अगले दिन शाम तक राजा और रानी अपने महल पहुँच गये।

फिर शाम को वहाँ खाना बनाया गया और जैसे ही राजा और रानी खाना खाने बैठे तो सूरज भगवान खुद वहाँ प्रगट हुए और वह भी उनके साथ ही खाना खाने बैठे। राजा ने अपने सारे दरवाजे खोल दिये और जैसा खाना वह खा रहा था उसने उससे भी शानदार खाना पकाने के लिये कहा – छह रस[6] के छप्पन भोग।

जब राजा और सूरज भगवान खाना खाने बैठे तो सूरज भगवान के पहले कौर में एक बाल निकल आया। इससे सूरज भगवान बहुत गुस्सा हो गये। वह चिल्लाये — "यह किस पापिन स्त्री का बाल है?"

---

[6] In Indian Ayurvedic there are six types of taste of any food – sweet, sour, savory, bitter, hot etc.

यह सुन कर बेचारी रानी को याद आया कि अपनी गरीबी के **12** साल में वह हमेशा पत्तों के नीचे ही कंघी करती रही सो यह उसी के सिर का बाल होगा जो इस समय सूरज भगवान के खाने में आ गया है।

पर सूरज भगवान तो उसको माफ नहीं किया जब तक कि उसने एक काला कम्बल नहीं ओढ़ लिया पेड़ की एक डंडी नहीं तोड़ ली और फिर शहर के बाहर जा कर उसने उस डंडी और बाल को अपने बॉये कन्धे के पीछे की तरफ नहीं फेंक दिया।

उसके बाद वह फिर से हॅस हॅस कर बात करने लगे और खाना खत्म किया। उसके बाद फिर सब लोग – राजा रानी ब्राह्मण किसान सब सूरज भगवान की पूजा करते रहे।

2 सोमवार की कहानी[7]

एक बार की बात है कि अटपट नाम के एक शहर में एक बहुत ही संत किस्म का राजा रहता था। एक दिन उसने कुछ ऐसा इरादा किया कि वह शिव जी यानी चन्द्र देव, का मन्दिर उसकी छत तक दूध से भर दे।

उसने इस बारे में अपने प्रधान मन्त्री से राय की और उसने तुरन्त ही ढिंढोरा पीटने वालों को सारे शहर में भेज दिया कि शहर के सारे लोग अगर हर सोमवार को शिव जी पर चढ़ाने के लिये दूध ले कर नहीं आये तो उनको सजा मिलेगी।

शहर के लोग तो यह सुन कर डर गये सो वे अगले सोमवार अटपट के शिव जी के मन्दिर में अपना सारा दूध ले कर आ गये। उन्होंने गाय के बछड़ों और अपने बच्चों के लिये भी एक बूँद दूध घर में नहीं छोड़ा।

हालाँकि हर सोमवार को लोगों ने अपने अपने घरों का सारा दूध शिव जी के मन्दिर में डाला फिर भी मन्दिर दूध से नहीं भरा।

पर एक दिन एक बुढ़िया मन्दिर आयी। पहले उसने अपना घर का सारा काम किया। अपने बच्चों को खिलाया पिलाया। अपनी छोटी छोटी बहुओं को नहलाया धुलाया।

---

[7] The Monday Story (Tale No 2)

फिर उसने कुछ बूँदें दूध की लीं कुछ पिसा चन्दन लिया कुछ फूल लिये **8–10** चावल के दाने लिये और शिव जी की पूजा करने शिव जी के मन्दिर पहुँच गयी।

वहाँ पहुँच कर उसने शिव जी की पूजा की और प्रार्थना की — "हे भगवान शिव। क्योंकि जब राजा का डलवाया हुआ इतना सारा दूध तुम्हारे मन्दिर को छत तक नहीं भर सका तो निश्चित रूप से मेरा यह थोड़ा सा दूध तो तुम्हारे मन्दिर को किसी तरह नहीं भर सकता। फिर भी यह थोड़ा सा दूध मैं तुम्हें अपने दिल से अर्पण करती हूँ।"

उसके बाद वह वहाँ से उठी और घर चली गयी। तभी एक अजीब सी बात हुई कि जैसे ही बुढ़िया ने मन्दिर की तरफ से अपनी पीठ फेरी मन्दिर छत तक दूध से भर गया।

मन्दिर के पुजारी ने जैसे ही यह देखा तो वह यह बात बताने के लिये राजा के पास दौड़ा गया पर कोई यह नहीं बता सका कि यह कैसे हुआ। अगले सोमवार को राजा ने सिपाही मन्दिर के दरवाजे पर खड़ा कर दिया।

उस दिन भी वह बुढ़िया आयी और अपनी पूजा कर के चली गयी। और उस दिन भी मन्दिर छत तक दूध से भर गया। सिपाही तुरन्त ही राजा के पास दौड़ा गया और जा कर राजा को सब कुछ बताया। पर वह भी उसका कारण नहीं बता सका।

तीसरे सोमवार को राजा खुद वहाँ आया और छिप कर बैठ गया। उसने देखा कि वहाँ एक बुढ़िया आयी और जैसे ही वह अपनी पूजा कर के वहाँ से गयी कि मन्दिर छत तक दूध से भर गया।

राजा उसके पीछे दौड़ गया और उसको जा कर पकड़ लिया। बुढ़िया ने उससे अपनी ज़िन्दगी बख्श देने की प्रार्थना की। राजा ने उसकी यह बात इस शर्त पर मान ली कि वह उसको सच बतायेगी।

बुढ़िया बोली — "हे राजा। आपने सब लोगों को यह हुक्म दिया था कि वे पूरे अटपट का दूध ला कर इस मन्दिर में डालें पर इसका क्या फल निकला। सारे बछड़े रँभाने लगे। सारे बच्चे रोने लगे क्योंकि उनमें से किसी को दूध नहीं मिल रहा था।

इससे सारे बड़े इतने परेशान थे कि वे नहीं जानते थे कि वे क्या करें। भगवान शिव इस बात से बहुत नाराज थे इसलिये उन्होंने मन्दिर को भरने ही नहीं दिया।

इसलिये आपको यह करना चाहिये कि सबसे पहले बछड़ों को और बच्चों को दूध मिलना चाहिये उसके बाद ही जो दूध बचे वह मन्दिर के लिये लाना चाहिये। इससे मन्दिर तुरन्त ही छत तक दूध से भर जायेगा।"

राजा ने उस स्त्री को जाने दिया और उसने दोबारा से शहर भर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि शहर के सारे लोग उतना ही दूध

मन्दिर में चढ़ायें जितना उनके पास बछड़ों और बच्चों को पिलाने के बाद बच गया हो।

यह सुन कर शहर के लोग बहुत खुश हुए। सो अगले सोमवार से केवल उतना ही दूध मन्दिर में आया जो बछड़ों और बच्चों के पीने के बाद बच गया हो। बछड़ों ने रँभाना छोड़ दिया बच्चों ने रोना छोड़ दिया और बाकी बचा दूध ही मन्दिर लाया गया।

राजा ने भगवान शिव की मन से प्रार्थना की और लो मन्दिर तो छत तक दूध से भर गया। राजा ने बुढ़िया को बहुत इनाम दिया।

फिर वह अपने घर चली गयी। घर जा कर उसने घर का काम किया बेटियों और छोटी छोटी बहुओं को नहलाया धुलाया।

3 मंगलवार की कहानी[8]

एक बार अटपट शहर में एक बनिया रहता था जिसके कोई बेटा नहीं था। एक साधु उसके घर रोज आया करता था और उसके दरवाजे पर आ कर आवाज लगाता था — "मुझे भगवान के नाम पर कुछ दे दो। मुझे भगवान के नाम पर कुछ दे दो।"

पर जब बनिये की पत्नी उसको भीख देने जाती तो वह उससे भीख लेने से मना कर देता क्योंकि उसके कोई बच्चा नहीं था। यह बात उसने अपने पति से कही तो उसने उसे एक चाल खेलने की सलाह दी।

वह अपने घर के दरवाजे के पीछे छिप गयी और जैसे ही वह भीख माँगने के लिये वहाँ आया तो उसने उसके बर्तन में एक सोने का सिक्का डाल दिया। पर साधु को पता चल गया और वह उससे बहुत गुस्सा हो गया। उसने उसको शाप दिया कि अब कभी उसके बच्चे नहीं होंगे।

वह बहुत डर गयी और उसके पैरों पर गिर कर उससे माफी माँगने लगी। तब उसको दया आ गयी और वह बोला — "तुम अपने पति को कहो कि वह नीले रंग के कपड़े पहन कर नीले घोड़े पर सवार हो कर जंगल जाये।

---

[8] The Tuesday Story. (Tale No 3)

वह वहाँ तब तक चलता चला जाये जब तक उसे एक घोड़ा न मिल जाये। घोड़े के मिलने पर वह अपने घोड़े से उतरे और वहाँ खुदायी करनी शुरू करे। आखीर में उसे पार्वती जी का एक मन्दिर दिखायी देगा। वहाँ वह उनकी पूजा करे और उनकी प्रार्थना करे तो वे उसे बच्चा दे सकती हैं।"

जब उसका पति घर वापस लौट कर आया तो उसने उससे वह सब कहा जो उस साधु के साथ हुआ था। पति ने तुरन्त ही नीले कपड़े पहने एक नीले घोड़े पर चढ़ा और जंगल की तरफ चल दिया।

जैसा कि साधु ने उसे बताया था वह तब तक चलता रहा जब तक कि उसको एक घोड़ा नजर नहीं आ गया। घोड़े के दिखायी देते ही वह वहाँ उतर गया और वहाँ की जमीन खोदने लगा।

जमीन खोदते खोदते उसे आखीर में जा कर पार्वती जी का एक मन्दिर मिल गया। वह मन्दिर सारा का सारा सोने का बना हुआ था। उसके हीरे के खम्भे थे और उसका गुम्बद लाल[9] का बना हुआ था।

मन्दिर देख कर वह बहुत खुश हुआ और उसने पार्वती जी की प्रार्थना करनी शुरू की — "मेर पास घर हैं जानवर हैं घोड़े हैं पैसा

---

[9] Laal means Ruby in English – one of the nine precious gems. See its picture above.

है और बहुत सारी किस्म की चीज़ें हैं। उसके बाद भी मैं बहुत दुखी हूँ। मेरे कोई बेटा नहीं है।"

देवी को उस पर दया आ गयी तो उन्होंने उससे पूछा — "तुम कैसा बेटा लेना पसन्द करोगे अच्छा पर कम उम्र वाला या फिर बहुत जीने वाला पर अन्धा?"

बेचारा बनिया यह सुन कर कुछ गड़बड़ा गया पर फिर आखिर बोला — "मुझे ऐसा बेटा चाहिये जो अच्छा हो चाहे वह जल्दी मर जाये।"

पार्वती जी बोलीं — "ठीक है। तो तुम मेरे पीछे खड़े हो जाओ। वहाँ तुमको गणपति[10] की एक मूर्ति मिल जायेगी। उसके पीछे आम का एक पेड़ है। तुम गणपति के पेट पर चढ़ जाना और उस पेड़ से एक आम तोड़ लेना।

उसे ले कर घर चले जाना और अपनी पत्नी को उसे खाने के लिये दे देना। तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।" इतना कह कर पार्वती जी गायब हो गयीं।

पति पार्वती जी की मूर्ति के पीछे गया तो उसे गणपति जी की मूर्ति दिखायी दी और साथ में उनके पीछे खड़ा आम का एक पेड़ भी। वह गणपति के पेट पर चढ़ गया और पेड़ पर से जितने उससे खाये गये उतने आम खा लिये। फिर उसने एक थैला भर कर आम और तोड़ लिये और पेड़ से नीचे उतर आया।

---

[10] Ganapati means Ganesh Ji who is the son of Parvati Ji Herself.

पर जब उसने जमीन पर पैर रखा तो देखा कि उसके थैले में तो केवल एक ही आम था।

ऐसा तीन चार बार हुआ तो गणपति जी चिल्लाये क्योंकि वह बनिया उनके पेट को कई बार कुचल चुका था — "तुमको केवल एक ही आम मिलेगा इसलिये अब घर जाओ।"

बनिया यह सुन कर डर गया और चुपचाप वह एक आम ले कर अपने घर भाग गया। घर जा कर उसने वह आम अपनी पत्नी को खाने के लिये दिया। पत्नी ने उसे खा लिया और नौ महीने बाद एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया।

जब वह लड़का आठ साल का हुआ तो उसका जनेऊ संस्कार[11] किया गया। उसको जनेऊ पहनाया गया तो उसकी माँ ने कहा — "अब हमको इसकी शादी के बारे में सोचना चाहिये।"

पर बनिया बोला — "मैं तो अभी इसकी शादी के बारे में सोच भी नहीं सकता जब तक यह बनारस[12] की यात्रा न कर आये।" तो उसके मामा ने कहा कि वह उसे बनारस ले कर जायेगा।

सो दोनों मामा भानजे तैयार हो कर बनारस की तरफ चल दिये। कुछ दिन बाद मामा भानजे दोनों एक गाँव में ठहरे। वहीं कुछ छोटी छोटी लड़कियाँ खेल रही थीं।

[11] Thread Ceremony

[12] Benaras or Varanasi is a religious place in Eastern side of UP.

उनमें से एक लड़की ने दूसरी लड़की से कहा — "तू तो नीच विधवा है।"

दूसरी लड़की बोली — "हमारे परिवार में तो कभी कोई विधवा रही ही नहीं। मेरी माँ पार्वती जी की पूजा करती हैं तो मैं तो कभी विधवा हो ही नहीं सकती।"

मामा ने उसकी यह बात सुनी तो सोचा कि "अगर उसका भानजा इस छोटी लड़की से शादी कर सका जो कभी विधवा नहीं होगी तो वह छोटी उम्र में भी नहीं मरेगा।" इस तरह से वह अब उस लड़की से अपने भानजे की शादी उस लड़के से करने के बारे में सोचने लगा।

इत्तफाक से उसी दिन उस लड़की की शादी होने वाली थी। पर जिस लड़के से उसकी शादी होने वाली थी वह शादी होने वाले दिन सुबह को ही बीमार पड़ गया।

लड़की के माता पिता इस बात को ले कर बहुत परेशान थे। उन्होंने सोचा कि इस लडकी को हमेशा के लिये कुँआरी रखना तो उचित नहीं लगता सो जैसे ही कोई पहला यात्री इस गाँव से गुजरेगा वैसे ही मैं इसकी शादी उससे कर दूँगा।

सो वे लोग वहाँ की धर्मशाला गये और वहाँ जा कर पूछा कि क्या वहाँ पर कोई यात्री ठहरा हुआ है। वहाँ उन्होंने मामा और भानजे को बैठा पाया। सो उन्होंने अपनी बेटी की शादी उसके भानजे से उसी शाम कर दी।

शाम को दीवार पर शिव और पार्वती जी की तस्वीर बनायी गयी और उन्होंने उन दोनों बच्चों को उसके नीचे सुला दिया।

रात को सपने में पार्वती जी लड़की के सपने में आयीं और उससे कहा — "बेटी कल रात को एक साँप तेरे पति को काटने के लिये आयेगा तो उसको तू दूध पीने के लिये देना। उसके पास ही एक मिट्टी का घड़ा रख लेना।

जब वह साँप दूध पी लेगा तो वह उस मिट्टी के घड़े में घुस जायेगा। तब तू तुरन्त ही अपना ब्लाउज़ उतार कर उस घड़े में ठूँस देना और अगले दिन वह घड़ा तू अपनी माँ को दे देना।"

अगले दिन शाम को वैसा ही हुआ जैसा पार्वती जी ने कहा था। जैसे ही लड़की का पति सो गया तो एक साँप वहाँ आया। उसने उसको पीने के लिये दूध दिया। साँप ने दूध पिया और अपने आप ही घड़े में चला गया। बच्ची ने भी तुरन्त ही अपना ब्लाउज़ निकाला और उसको घड़े में ठूँस दिया।

अगली सुबह उसके पति ने उसको एक अँगूठी दी और उसने उसको एक मिठाई दी। इसके बाद मामा भानजे ने बनारस के लिये अपनी यात्रा जारी रखी।

जब वे चले गये तो वह मिट्टी का घड़ा जिसमें उसने साँप बन्द किया था अपनी माँ को दे दिया। माँ ने जब घड़ा खोला और उसमें से ब्लाउज़ निकाला तो उसको साँप तो कहीं दिखायी नहीं दिया

बल्कि उसमें तो केवल एक फूल माला रखी हुई थी। सो मॉ ने उसे अपनी बेटी को पहना दिया।

कुछ हफ्ते बीत गये पर न तो मामा ही लौटे और न भानजा ही लौटा। बच्ची के माता पिता को अब चिन्ता होने लगी थी।

उधर वह बीमार लड़का जिससे बच्ची की शादी होने वाली थी अब ठीक हो गया था पर अब उस बच्ची की शादी उसके साथ नहीं की जा सकती थी। और जिससे उसकी शादी हो चुकी थी वह दूर चला गया था। उसके लौटने का भी कोई अता पता नहीं था।

नाउम्मीद हो कर बच्ची के माता पिता ने एक घर बनवाया जिसमें वह हर आने जाने वाले को इस आशा में ठहराते थे खाना पीना खिलाते थे कि शायद कभी कोई ऐसा यात्री यहॉ आ जाये जो हमारी बच्ची का पति हो। हर यात्री को मॉ पानी देती, बेटी उनके पॉव धोती, भाई चन्दन का लेप देता और पिता सुपारी देता।

पर यह सब बेकार ही हो रहा था। लड़की के पति ने जो ॲगूठी लड़की को दी थी वह किसी भी यात्री की ॲगली में नहीं आ रही थी। और न ही कोई यात्री वह मिठाई दिखा पा रहा था जो लड़की ने अपने पति को उसकी ॲगूठी के बदले में दी थी।

इस बीच मामा भानजे दोनों बनारस पहॅुचे। वहॉ पहॅुच कर उन्होंने बहुत सारा दान दिया और भी कई पवित्र जगह गये। ब्राह्मणों के आशीर्वाद लिये।

एक दिन बच्चा बेहोश हो गया तो सपने में उसने एक यमदूत देखा। मृत्यु के देवता यमराज ने उसको लेने के लिये अपना एक दूत उसके पास भेजा हुआ था।

पर तुरन्त ही उसने देखा कि माँ पार्वती उसकी रक्षा के लिये उसके पीछे पीछे आ रही हैं। दोनों में कुछ लड़ाई हुई और पार्वती जी ने यमदूत को पीछे धकेल दिया।

लड़का जब उठा तो उसने अपना यह सपना अपने मामा को बताया। उसका मामा तो यह सुन कर इतना खुश हो गया इतना खुश हो गया कि उसको लगा कि बस अब उसके भानजे की मौत का समय टल गया। अब वह छोटी उम्र में नहीं मरेगा।

उसने अपने भानजे से कहा — "चलो बेटा तैयार हो जाओ। अब हम घर वापस चलते हैं।" अगले दिन उन्होंने बनारस छोड़ दिया और अपने घर चल दिये।

चलते चलते वे फिर उसी गाँव में आये जहाँ उस लड़के की शादी हुई थी। जब वे गाँव के तालाब के पास नाश्ता कर रहे थे तो एक नौकरानी उनको उस घर में बुलाने के लिये आयी जो लड़की के पिता ने यात्रियों को आराम देने के लिये बनवाया था।

पहले तो मामा ने वहाँ जाने से मना कर दिया पर जब उनको लाने के लिये एक पालकी भेजी गयी तो मामा भानजे उस पर सवार हो कर चले।

वहाँ पहुँचने पर बच्ची ने अपने पति के पैर धोये तो उसने उसको पहचान लिया। उसने उससे अँगूठी पहन कर देखने के लिये कहा तो वह भी उसकी उँगली में आ गयी तो उसने भी बच्ची को उसकी दी हुई मिठाई दिखायी।

बच्ची के माता पिता यह देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने लड़के के माता पिता को वहीं बुलवा लिया। बच्चे की माँ तो आते ही अपनी बहू के पैरों पर पड़ गयी और उसके बेटे की जान बचाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

फिर वहाँ एक बहुत बड़ी दावत हुई। सब बहुत खुश थे। बाद में सबने मिल कर पार्वती जी की पूजा की।[13]

[13] Author’s Note : Although Tuesday is the day of Mangal (Mars) but it is a popular error to connect the Tuesday with Mangalgauri or Parvati, Shiv’s wife.

4 बुधवार और गुरुवार की कहानी[14]

एक समय की बात है कि अटपट गाँव में एक राजा रहता था जिसके सात बेटे थे और सात बहुऐं थीं। राजा के घर रोज एक ब्राह्मण और उसका भतीजा भीख माँगने आया करते थे। पर जब वे भीख माँगने आते थे तो उसकी बहुऐं यह कहलवा देती थीं कि उनके पास इतना समय नहीं था कि वे उनको कुछ दे सकें।

कुछ समय बीतने पर वह राजा बहुत गरीब हो गया। उसका सारा धन चला गया। वे दोनों ब्राह्मण फिर उनके यहाँ भीख माँगने आये तो सबसे बड़ी बहू ने कहा — "अब हमें कोई काम तो नहीं है पर अब हमारे पास देने के लिये भी कुछ नहीं है। अगर हमारे पास कुछ होता तो हम आपको जरूर देते।"

पर सबसे छोटी बहू बहुत होशियार लड़की थी। उसने सोचा "इस तरह से तो ब्राह्मण तो हमसे बहुत गुस्सा हो जायेगा। जब हमारे पास पैसे थे तब तो हमने उसे कुछ दिया नहीं और अब इसलिये नहीं दे रहे हैं क्योंकि अब हमारे पास देने के लिये कुछ बहीं है।"

यह सोच कर वह बड़े वाले ब्राह्मण के पैरों पर गिर पड़ी और बोली — "हम लोग बहुत नीच हैं। हम लोग गरीब होने के ही

[14] The Wednesday and the Thursday Story (Tale No 4)

लायक हैं। पर मेहरबानी कर के हमें माफ कर दीजिये और हमें बताइये कि हम लोग पहले की तरह से अमीर कैसे हो सकते हैं।”

बड़ा ब्राह्मण बोला — “बेटी हर बुधवार को और हर गुरुवार को तुम एक ब्राह्मण को खाना खिलाओ और अगर तुम्हारे पास इतना पैसा न हो कि तुम उसको खाना खिला सको तो अपने पैसे रखने वाले बक्से के ऊपर गाय के दो खुरों की एक तस्वीर बना लो। अगर तुमको खाने के लिये गेंहू चाहिये तो वह तस्वीर अपने गेहॅू के डिब्बे पर बना लो।

उनकी पूजा करो और फिर ब्राह्मणों को खाना खाने के लिये बुला लो। तुमको अपने पैसे वाले डिब्बे में पैसे मिल जायेंगे गेहॅू रखने वाले डिब्बे में गेहॅू मिल जायेंगे। समय के साथ साथ तुम लोग फिर से अमीर हो जाओगे।”

सबसे छोटी बहू ने वैसा ही किया जैसा उस ब्राह्मण ने उससे करने के लिये कहा था। अब जब भी वह ब्राह्मण को खाने के लिये बुलाती तो वह गाय के खुरों के निशान पैसे के डिब्बे पर और गेहॅू रखने के डिब्बे पर बनाती और उसको ब्राह्मण को खाना खिलाने लायक काफी खाना मिल जाता।

कुछ दिन बाद की बात है कि वह जब सोयी हुई थी तो सपने में उसने देखा कि बुध और बृहस्पति जी उसके पास खड़े हुए हैं और उससे कह रहे हैं — “ओ छोटी बच्ची। तुम्हारा पति अब एक बड़े देश का राजा बना दिया गया है। तुम उसके पास जाओ और जब

तुम उसको ढूँढ लो तब तुम हमारी पूजा करना और ब्राह्मणों को खाना खिलाना न भूलना।"

इसके बाद उसकी आँख खुल गयी तो उसने यह बात अपनी छहों जिठानियों को बतायी तो वे तो उससे जलने लगीं और बहुत गुस्सा हुईं। वे उसको अक्सर मारतीं और ज़ोर से उसके कान ऐंठतीं कि वह बेचारी अपने पैसे के और गेहूँ के डिब्बे पर गाय के खुरों की तस्वीर बनाना ही भूल जाती।

इससे न तो उसको पैसों के डिब्बों से उसे पैसा मिलता और न गेंहूँ के डिब्बे से गेंहू। इससे वे फिर से गरीब और और गरीब होते जा रहे थे।

पहले सारे नौकर भागे। फिर घर के सब आदमी चले गये। आखीर में सातों बहुऐं अकेली ही घर में रह गयीं। वे भूखी थीं पर उनको यह पता नहीं था कि वे खाना कहाँ से लायें।

एक दिन उन्होंने सुना कि एक पड़ोसी देश का राजा अपने देश में एक तालाब बनवाना चाहता था सो उसने जगह जगह से मजदूर बुलाये थे। सो उन्होंने वहाँ जाने का निश्चय किया और वहाँ जा कर कुलियों जैसा काम करने लगीं।

अब आप क्या सोचते हैं कि यह राजा कौन था जो तालाब बनवा रहा था। वह अटपट के राजा का सबसे छोटा बेटा था और सबसे छोटी बहू का पति।

जब राजा का सारा पैसा खो गया तो उसका सबसे छोटा बेटा घर से बाहर चला गया। चलते चलते वह एक शहर में आया जिसका राजा तभी तभी मरा था। उसके कोई बच्चा या सम्बन्धी भी ऐसा नहीं था जिसको उसके बाद राजा बना दिया जा सके।

जनता कुछ सोच ही नहीं सकी कि उसको बाद अब राजा किसको बनाया जाये सो उन्होंने एक हथिनी को फूलों की माला दे दी और उसे खुला छोड़ दिया कि जिसके गले में भी वह फूलों की माला डाल देगी उसको राजा बना दिया जायेगा।[15]

हथिनी सीधे राजा के पास गयी और उसने उसके गले में माला डाल दी। शहर के लोग यह देख कर बहुत गुस्सा हुए उन्होंने राजकुमार के गले में से माला मिकाल ली और राजकुमार को पीछे धक्का दे दिया।

उन्होंने हथिनी को फिर से वह माला पहनाने के लिये दे दी पर हथिनी ने फिर से उसी राजकुमार के गले में माला डाल दी। उन्होंने राजकुमार के गले में से फिर से माला निकाल कर हथिनी को दे दी और हथिनी ने फिर से राजकुमार के गले में डाल दी।

जव हथिनी तीन बार राजकुमार के गले में माला डाल चुकी तो उन्होंने उसको अपना राजा स्वीकार कर लिया। उन्होंने उसे ऊपर उठा लिया और उसे अपना राजा घेषित कर दिया।

---

[15] It seems that this practice was common all over India as this practice is mentioned in Bengal’s folktales and Kashmir’s folktales, and now in Southern India too.

एक रात बुध जी और बृहस्पति जी दोनों उसके सपने में आये और उन्होंने उसको उसकी पत्नी की याद दिलायी और कहा कि वे अब बहुत गरीब हो गये हैं। पर इस समय वह अपना राज्य छोड़ कर वहाँ नहीं जा सकता था।

इसके लिये उसने एक तरकीब सोची कि वह अपने देश में एक तालाब खुदवाये जिसको खोदने के लिये वह बाहर से भी मजदूरों को भी बुलवाये।

चारों तरफ से वहाँ मजदूर काम करने के लिये आने लगे। राजा रोज वहाँ जाता था और उन मजदूरों में अपनी पत्नी को ढूँढता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी को वहाँ पहचान लिया तो उसने उसे अपने पास बुलाया।

तब उन दोनों ने एक दूसरे को बताया कि किस तरह से बुध और बृहस्पति दोनों उन दोनों के सपने में आये थे और कैसे उन्होंने एक दूसरे के बारे में एक दूसरे से कहा। तुरन्त ही उसने अपनी पत्नी को उस देश की रानी घोषित कर दिया।

सो सबसे छोटी बहू रानी बन गयी। पर उसने अपनी जिठानियों को जो वहाँ तालाब पर काम कर रही थीं अपनी खुशकिस्मती का पता नहीं चलने दिया।

रानी बनने के बाद छोटी बहू ने तालाब पर काम करने वाले सब लोगों को एक दावत दी। पर अपने महल में उसने गेहूँ के आटे को मल कर कुछ आदमी के हाथ और पैर बनाये।

जब उसकी जिठानियाँ मजदूरों को दी जाने वाली दावत खा रही थीं तो वह उन सबके पास गयी जिन्होंने उसे हाथ से मारा था उसको उसने आटे का हाथ दिया और जिसने उसे पैर से मारा था उसको उसने पैर दिया।

तब सबने उसको पहचान लिया और वे उसके पैरों पर गिर पड़ीं और अपने किये की माफी माँगी। छोटी रानी ने सबको माफ कर दिया। फिर वह उन सबको अपने महल में ले गयी और सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

5 शुक्रवार की कहानी[16]

एक बार की बात कि अटपट नाम का एक शहर था। वहाँ एक बहुत ही गरीब ब्राह्मण रहता था। उसकी एक पत्नी थी जो उतनी ही गरीब थी जितना कि वह ब्राह्मण।

एक बार वह अपने गरीबी से तंग आ कर पड़ोस में गपशप करने चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपनी पड़ोसन से अपनी गरीबी का सारा हाल कहा।

पड़ोसन भी उसको इससे ज़्यादा कुछ और सलाह न दे सकी कि वह शुक्र देवी[17] की पूजा करे। सो उसने उस ब्राह्मण स्त्री को सलाह दी कि वह सावन के हर शुक्रवार का व्रत करे।

व्रत के बाद किसी शादीशुदा स्त्री को अपने घर बुलाये। उसके पैर धोये उसको मीठा दूध पीने को दे उसकी गोद में गेहूँ की रोटी और नारियल के कुछ टुकड़े रखे। वह शुक्र देवी की पूजा इसी तरह हर शुक्रवार को एक साल तक करे। व्रत के बाद में शुक्र देवी उसके लिये कुछ न कुछ जरूर करेंगी।

ब्राह्मणी ने उसकी इस सलाह को बहुत अच्छा समझा और उसने हर शुक्रवार को शुक्र देवी की पूजा करनी शुरू कर दी। और उस दिन एक शादीशुदा स्त्री को भी खाने के लिये बुला लिया।

---

[16] The Friday Story (Tale No 5)

[17] Shukra means Venus

इस ब्राह्मणी का एक अमीर भाई था जो उसी शहर में रहता था। एक दिन उसने 1000 ब्राह्मणों को खाना खाने के लिये न्यौता दिया। उनके अलावा उसने शहर के और लोगों को भी बुलाया पर अपनी बहिन को नहीं बुलाया।

ब्राह्मणी ने सोचा कि शायद उसका भाई किसी वजह से उसको बुलाना भूल गया है पर अपने भाई के घर बिना बुलाये जाने में तो कोई हर्जा नहीं है ऐसा सोच कर उसने अपनी सिल्क की साड़ी पहनी और अपने बच्चों को ले कर वहाँ चली गयी।

वहाँ जा कर वह अपने बच्चों के पास ही बैठ गयी और खाना खाने लगी। जब भाई ने अपनी बहिन को देखा तो वह चिल्लाया — "तुम्हारे पास न तो अच्छे कपड़े हैं और न ही ठीक से पहनने के लिये गहने ही हैं। यहाँ आ कर तुमने तो मेरी हँसी उड़वा दी है। मैं इस समय तो तुमको छोड़े देता हूँ पर तुम यहाँ कल मत आना।"

अगले दिन वह वहाँ नहीं जाना चाहती थी पर उसके बच्चे जिनके मुँह में कल के खाने का स्वाद अभी भी आ रहा था उससे जिद कर रहे थे कि वह उन्हें वहाँ ले चले।

सो एक बार फिर वह अपने भाई के घर गयी और जा कर अपने बच्चों के पास ही बैठ गयी। जब उसका भाई घी देने के लिये उधर आया और उसने उसको वहाँ बैठे देखा तो चिल्लाया — "लगता है कि यहाँ कोई भिखारिन आ गयी है और यह तो कहने के

बावजूद नहीं जा रही है। पर देखो कल नहीं आना अगर तुम आयीं तो मुझे तुम्हें बाहर निकालना पड़ेगा।"

तीसरे दिन वह अपने बच्चों के कहने पर उनको साथ ले कर अपने भाई के घर फिर से गयी। अबकी बार वह गेट के पास पहुँची ही थी कि उसके भाई के नौकरों ने उसको पकड़ लिया और उसको खाने से पहले ही बाहर निकाल दिया।

वह दुखी होती हुई घर चली गयी और जा कर शुक्र देवी की पूजा की। देवी उससे उसकी पूजा से उसकी भक्ति से बहुत खुश थी सो उसको उस पर दया आ गयी। देवी ने उसके पति की इतनी जल्दी सहायता की कि वह बहुत जल्दी ही एक अमीर आदमी बन गया।

जब वह बहुत अमीर हो गयी तो एक दिन उसने अपने भाई को खाना खाने के लिये बुलाया लेकिन भाई को याद था कि उसने अपनी बहिन के साथ कैसा व्यवहार किया था सो उसको अपनी बहिन का न्यौता स्वीकार करने में बहुत शर्म आ रही थी।

सो उसने अपनी बहिन से जिद की कि पहले वह उसके घर खाना खाने आये और इतनी ज़्यादा जिद की कि उसको मानना ही पड़ा।

अगले दिन उसने अपने सारे गहने पहने सबसे अच्छे कपड़े पहने और भाई के घर चली। वहाँ उसके भाई ने उसके बैठने के लिये लकड़ी की एक चौकी दी। खाने के लिये केले के पत्ते दिये।

खाना खाने से बैठने से पहले उसने अपना सोने से कढ़ा हुआ शाल उतार कर अपने खाने के पत्ते के पास ही रखा। उसके भाई ने यह सब देखा तो उसको लगा कि शायद कमरे में उसको गर्मी लग रही होगी इसलिये उसने ऐसा किया होगा।

उसके बाद उसने अपना सारा गहना उतार कर लकड़ी की चौकी पर रखा। यह देख कर उसके भाई ने सोचा कि शायद उसको यह गहना भारी लग रहा होगा।

फिर उसने चावल का एक कौर बनाया और अपने गले के हार पर रख दिया फिर उसने चावल का एक कौर अपने पैन्डैन्ट पर रख दिया और एक मीठा टुकड़ा अपने शाल में जड़े हुए तारे पर रख दिया।

अब उसके भाई से नहीं रहा गया तो उसने अपनी बहिन से पूछा — "बहिन तुम यह क्या कर रही हो।"

तो वह बोली — "मैं तुम्हारे उस मेहमान को खाना खिला रही हूॅ जिसको तुमने खाने के लिये बुलाया है।"

पहले तो उसकी समझ में नहीं आया सो बोला — "तुम खाना शुरू क्यों नहीं करतीं।"

वह बोली — "तुमने मुझे खाने के लिये नहीं बुलाया भैया। यह खाना तो तुम मेरी अमीरी को खिला रहे हो मुझे नहीं।"

यह सुन कर उसका भाई बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह अपनी बहिन के पैरों पर गिर पड़ा और अपने किये की माफी मॉगने लगा। उसने उसे माफ कर दिया और तब वह खाना खाने बैठी।

इसके बाद फिर भाई भी उसके घर खाना खाने गया। और फिर जब शुक्र देवी दोनों भाई बहिन से खुश हो गयीं तो वे भी आपस में खुश खुश रहे।

6 शनिवार की कहानी[18]

एक बार की बात है कि अटपट शहर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था जिसके तीन बहुऐं थीं। वह ब्राह्मण बारिश के मौसम में भी जल्दी उठता था और रोज सुबह का नाश्ता कर के अपनी बहुओं और बच्चों के साथ खेत पर चला जाता था।

एक बार सावन के महीने में शनिवार के दिन जैसे वह रोज उठता था वह उठा तो उसने अपनी सबसे छोटी बहू से कहा — "बहू आज शनिवार है। तुम आज घर पर ही ठहरो और हालाँकि घर में बहुत कम है फिर भी तुम कुछ खाना बना कर तैयार रखना। जाओ ऊपर जाओ और घर में जितना भी अनाज पड़ा है वह सब समेट लाओ और उसकी रोटी बना लेना। और सब्जी की जगह बाहर से तिपतिया घास[19] तोड़ लाना और उसकी चटनी बना लेना।"

जब ब्राह्मण खेत पर चला गया तो छोटी बहू ने वैसा ही किया जैसा उसके ससुर ने उससे करने के लिये कहा था। जब वह ऊपर गयी तो उसने देखा कि वहाँ तो केवल इतना ही अनाज था जिसमें केवल आधी ही रोटी बनती। सो उसने उसकी बहुत ही छोटी छोटी रोटी बना लीं और बाहर से पत्ता ला कर चटनी पीस कर रख ली।

---

[18] The Saturday Story (Tale No 6)

[19] Translated for the word "Clover grass". See its picture above.

उसके बाद वह घर में ही बैठ कर खेत से अपने परिवार के लौटने का इन्तजार करने लगी। जब वह बैठी हुई इन्तजार कर रही थी तो शनिदेव एक भिखारी का वेश रख कर उसके पास आये। भिखारी का सारा शरीर घावों से ढका हुआ था।

वह आ कर बोले — "मेरे सारे शरीर में बहुत दर्द है तुम मुझे गर्म पानी से नहला दो। शरीर पर मलने के लिये कुछ तेल दे दो और फिर कुछ खाना दे दो।"

उस भिखारी के देख कर उसे बहुत बुरा लगा। बह घर के अन्दर गयी कुछ बूँद तेल ले कर आयी। उसके नहाने के लिये पानी गर्म किया और उसे एक छोटी वाली रोटी खाने के लिये दी।

भिखारी सन्तुष्ट हो गया और उसे दुआ दी कि "तुम्हें कभी किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी।"। फिर उसने अपने खाना खाने वाल पत्ता मोड़ा और वहीं पास के एक कोने में फेंक दिया और गायब हो गया।

कुछ देर बाद ही उसका परिवार खेत से वापस आ गया तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो उनके लिये बहुत ही बढ़िया शानदार खाना लगा रखा है। उन्होंने अपने मन में सोचा कि हमारे घर में तो ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे इतना अच्छा खाना बनाया जा सके फिर यह इतना बढ़िया खाना कहाँ से आया।

अगले शनिवार को वह ब्राह्मण अपनी बीच वाली बहू को घर छोड़ कर गया तो उस शनिवार को भी शनिदेव एक भिखारी का रूप रख कर आये जिसके शारे शरीर पर घाव थे।

उन्होंने उससे भी उनको नहाने के लिये थोड़ा सा गर्म पानी घावों पर लगाने के थोड़ा तेल और कुछ खाना देने के लिये कहा।

पर उस बहू ने कहा — "मेरे पास तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

शनिदेव ने उससे जिद की कि वह उनको कुछ तो दे दे पर बहू फिर बोली "तुम्हें देने के लिये मेरे पास कुछ नहीं है।"

इस पर शनि भगवान बोले — "तेरे पास जो कुछ थोड़ा बहुत है भी वह भी अब नहीं रहेगा।" और यह धमकी दे कर वह वहाँ से गायब हो गये।

जब शाम का खाना बनाने के लिये वह ऊपर से अनाज लाने गयी तो उसे किसी भी बर्तन में कुछ भी नहीं मिला। थोड़ी देर बाद ही उसका परिवार खेत से वापस आ गया। जब उन सबने देखा कि वहाँ तो कोई खाना नहीं था तो ब्राह्मण उस पर बहुत नाराज हुआ। बहू ने उसको दिन में हुआ सारा हाल बताया तो भी ब्राह्मण ने उसको बहुत डाँटा।

फिर तीसरा शनिवार आया तो अबकी बार तीसरी बहू घर पर रही। उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा और दोनों बहुओं के साथ हुआ था और उसने भी वही किया जैसा दूसरी बहू ने किया।

उसने भी शनिदेव को न तो गर्म पानी दिया न तेल दिया और ना ही कुछ खाने के लिये दिया। तो उन्होंने उससे भी यह कहा — "जो कुछ तुम्हारे पास है वह भी अब सब नहीं रहेगा।"

परिवार को घर आने पर उस दिन खाना नहीं मिला तो उन्होंने अपनी तीसरी बहू को भी बहुत डॉटा।

अब चौथा शनिवार आया तो इस बार फिर से सबसे छोटी बहू के घर में रहने की बारी थी। शनिदेव अपने उसी वेश में फिर से आये और पहले की तरह से गर्म पानी थोड़ा सा तेल और थोड़ा सा खाना माँगा।

छोटी बहू ने उनको वैसे ही सब कुछ दिया जैसे पहले दिया था। खा पी कर जब वह जाने लगे तो उसको आशीर्वाद देते गये "भगवान तुम्हें हमेशा अमीर और खुश रखे।" कह कर उन्होंने जिन पत्तों में खाना खाया था उनको उसके घर की छत में ठूँस दिया और गायब हो गये।

जब शाम का खाना बनाने का समय हुआ और वह ऊपर अनाज निकालने के लिये गयी तो उसके तो सारे बर्तन कई तरह के अनाजों से भरे पड़े थे। इसने उनसे एक बहुत ही शानदार खाना बनाया।

जब उस परिवार शाम को खेत से वापस लौट कर आया तो वे सब बहुत खुश हुए। अबकी बार वे अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाये और छोटी बहू से पूछा कि इतना अच्छा और इतना सारा खाना कहाँ

से आया तो उसने एक ब्राह्मण भिखारी के आने की कहानी सुना दी।

उसकी कहानी की सच्चाई देखने के लिये उन्होंने उस भिखारी के खाने के पत्ते खोल कर देखे तो उनमें तो जवाहरात भरे पड़े थे। इससे ब्राह्मण को विश्वास हो गया कि भिखारी के वेश में शनिदेव थे।

अब उसकी यह बात भी समझ में आ गयी कि उसकी दोनों बड़ी बहुऐं उसको खाना क्यों नहीं खिला सकीं क्योंकि वह हमको शाप दे गये थे और घर में कुछ भी नहीं था।

सो वे सब शनिदेव के आगे झुके तो शनिदेव ने उन दोनों बहुओं को माफ कर दिया जिन्होंने उनको कुछ नहीं दिया था। पर वह सबसे छोटी बहू से बहुत खुश थे जिसने उनकी अपने पास कुछ न होते हुए भी उनकी सेवा की थी।

उसके बाद वे सब खुशी खुशी रहने लगे। शनिदेव हमसे भी इसी तरह प्रसन्न रहें जैसे कि वह छोटी बहू से रहे।

7 महालक्ष्मी और दो रानियाँ[20]

एक बार अटपट शहर में एक राजा रहता था जिसके दो रानियाँ थीं। उनमें से राजा अपनी एक रानी को बहुत प्यार करता था जबकि दूसरी को उतना प्यार नहीं करता था।

जिस रानी को वह बहुत प्यार करता था उसका नाम था पद्माधवरानी और जिसको कम प्यार करता था उसका नाम था चीमादेवरानी।[21]

राजा का एक बड़ा दुश्मन था जिसका नाम था नन्दनबनेश्वर। वह उसका एक बहुत ही भयानक सा दुश्मन था। वह चाहे तो बादलों में कूद सकता था और चाहे तो समुद्र में छलाँग लगा सकता था। एक पल में वह स्वर्ग तक पहुँच सकता था और दूसरे ही पल नरक में डूब सकता था।

ऐसे दुश्मन के डर की वजह से राजा बेचारा सूख सूख कर काँटा हो गया था वह इतना पतला दुबला हो गया था जैसे सूखी हुई डंडी।

एक दिन जब वह अपनी तरफ से बिल्कुल निराश हो चुका था तो उसने अपने सब लोगों को बुलाया और उनसे अपने इस शत्रु को ढूँढने और मारने को और ढूँढने लिये कहा।

---

[20] Mahalaxmi and the Two Queens. (Tale No 7)

[21] The King of Atpat had two queens – Padmadhavrani and the other one to whom he did not love much her name was Chimadevrani.

उसके सब दरबारी बोल पड़े कि हॉ हॉ अवश्य। हम करेंगे यह काम। सब लोग नन्दनबनेश्वर को ढूॅढने निकल पड़े।

अब उस गॉव में एक गरीब विधवा भी रहती थी जिसके एक बेटा था। राजा का यह ऐलान सुना तो वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ मॉ। मुझे कुछ रोटियॉ बॉध दे मैं बाहर जा कर राजा के दुश्मन को मारने जा रहा हूॅ।"

बुढ़िया बोली — "अरे तू बेवकूफ मत बन। तू तो एक बेचारा गरीब लड़का है। तू यह काम कैसे कर सकता है। जो भी यह सुनेगा वही तुझ पर हॅसेगा। इस वक्त तो तू यह रोटी ले और जा कर किसी पेड़ के नीचे बैठ कर खा ले।"

लड़का बोला "ठीक है।" उसने मॉ से रोटी ली और दूसरे गॉव वालों के साथ साथ ही नहीं बल्कि उनके आगे आगे नन्दनबनेश्वर को ढूॅढने चल दिया।

चलते चलते शाम हो आयी तो अभी तक तो नन्दनबनेश्वर कहीं मिला नहीं था सो सारे गॉव वाले घर लौट आये। जब राजा ने यह सब सुना तो वह बहुत दुखी हुआ। पर विधवा का बेटा घर वापस लौट कर नहीं आया। वह वहीं पास के एक जंगल में ही रुक गया था।

तो लो देखो आधी रात के करीब में ही कुछ नाग कन्या[22] और जंगल की कुछ परियाँ वहाँ आ गयीं और उन्होंने महालक्ष्मी की पूजा करनी शुरू कर दी।

लड़का पहले तो उनको देख कर घबरा गया पर आखिर उसने हिम्मत कर के उनसे पूछा — "यह महालक्ष्मी की पूजा कर के क्या होता है।"

पाताल की नाग कन्या ने कहा — "अगर तुम्हारा कहीं कुछ खो गया है तो तुम उसे फिर से पा जाओगे। और जो भी तुमको चाहिये वह तुम्हें मिल जायेगा।"

लड़के ने तय किया कि वह भी महालक्ष्मी की पूजा करेगा। सो वह पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों के साथ लग गया और वे सब महालक्ष्मी को प्रसन्न करने लिये रात भर मिट्टी के घड़ों पर फूँक मारते रहे।

सुबह होने पर महालक्ष्मी ने उनको अपने दर्शन दिये। सभी नाग कन्याओं जंगल की परियों और लड़के ने उनके आगे सिर झुकाया और उनसे आशीर्वाद माँगा।

उन्होंने लड़के को यह आशीर्वाद दिया — "तुमको अटपट का आधा राज्य मिल जायेगा और राजा का आधा खजाना भी तुम्हारा

[22] Naag Kanya – These are maidens of the race of the Nagas, who are said to have sprung from Kadru, the wife Kashyap Ji. One of them named Uloopi married the hero Arjun. They lived in Paataal Lok the lowest of the seven Lokas (underground regions).

हो जायेगा। वह तुम्हारे लिये एक वैसा ही घर बनवायेगा जैसा उसका अपना है। वह तुम्हें "नवलवत" नाम देगा।

क्योंकि आज सुबह ही राजा की ताकतवर सेना नन्दनबनेश्वर का गला घोंट कर मार देगी और वह राजा के महल के ऑगन में मरा हुआ पाया जायेगा।"

यह कह कर देवी वहॉ से चली गयीं और कोल्हापुर उड़ गयीं और वह गरीब ब्राह्मणी का बेटा भी अपने घर चला गया।

सुबह को जब पद्माधवरानी उठी और राजा के महल के ऑगन में गयी तो वह तो यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गयी कि वहॉ तो नन्दनबनेश्वर का सिर कटा पड़ा था।

यह देख कर वह बहुत खुश हुई और राजा को यह बताने के लिये दौड़ी चली गयी। राजा ने तुरन्त ही पूछा कि उसको किसने मारा तो लोगों ने जवाब दिय — "इसको उस विधवा के बेटे ने ही मारा होगा क्योंकि जब सब लोग नन्दनबनेश्वर को मारने गये थे तो केवल वही पीछे रह गया था।"

राजा ने बुढ़िया विधवा के बेटे को बुलवाया। राजा का बुलावा सुन कर विधवा का बेटा बहुत डर गया। जैसे ही वह शाही महल में पहॅुचा तो वह चिल्लाया "मैंने किसी के खिलाफ कोई झूठ नहीं बोला है तो राजा ने तुम लोगों को मुझे पकड़ने के लिये क्यों भेजा है।"

राजा उसे शान्त करते हुए बोला — "तुम डरो नहीं। मेरा दुश्मन नन्दनबनेश्वर मर गया है और हर एक आदमी यह कह रहा

है कि इसे तुमने मारा है। मुझे तो बस यह बतादो कि क्या यह सच है?"

लड़का बोला — "नहीं महाराज यह सच नहीं है। यह तो महालक्ष्मी की कृपा से मारा गया है।"

राजा ने पूछा — "तुम उनसे कहाँ मिले?"

लड़का बोला — "हम सब उसको दिन भर ढूँढते रहे। वह हमें नहीं मिला तो बाकी सारे लोग तो घर चले आये मैं वहीं जंगल में रह गया। आधी रात को वहाँ नाग कन्याऐं और जंगल की परियाँ आयीं और उन्होंने महालक्ष्मी की पूजा की। उन्होंने मुझे भी उनकी पूजा करनी सिखायी।

सुबह को उन्होंने दर्शन दिये और मुझसे कहा कि नन्दनबनेश्वर अभी सुबह में ही मर जायेगा। फिर आप मुझे अपना आधा राज्य आधा खजाना दे देंगे मेरे लिये अपने जैसा एक महल बनवायेंगे और मेरा नाम "नवलवत" रख देंगे।"

जैसा महालक्ष्मी ने उस लड़के से कहा था राजा ने उसके लिये सब वैसा का वैसा ही कर दिया। उसने उसको अपना आधा राज्य दे दिया आधा खजाना दे दिया उसके लिये उतना ही ऊँचा महल बनवा दिया जितना कि उसका खुद का महल था। और उसको "नवलवत" का नाम दिया।

जब पद्माधवरानी ने यह सब सुना तो उसने उस लड़के को बुला भेजा और उससे पूछा कि महालक्ष्मी की पूजा कैसे करते हैं।

उसने रानी माँ को वह सब कुछ बता दिया जो उसने नाग कन्याओं और जंगल की परियों को करते देखा था। उसने रानी माँ से यह भी कहा कि आश्विन महीने के आठवें दिन वह अपनी कलाई पर **16** धागों का एक धागा बाँध लें और फिर उसे सारा महीने पहने रहें।

सो जब आश्विन महीने का आठवाँ दिन आया तो रानी **16** धागों का एक धागा बाँध लिया और सोच लिया कि वह उसको सारे महीने बाँधे रहेगी पर एक दो दिन बाद ही राजा पद्माधवरानी के महल में आया और वहाँ आ कर उसके साथ चौपड़ खेलने लगा।

जब वे खेल रहे थे तो उसने रानी की कलाई पर एक धागा बँध देखा तो उससे पूछा कि वह क्या है। उसने उसे बताया कि नवलवत ने उसे ऐसा करने के लिये कहा।

पर राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। उसने कहा कि मेरे महल में पहनने के लिये फूल हैं बेलें हैं इस बेकार के धागे को फेंक दो। मैं तुम्हें इसे पहनने नहीं दूँगा।

रानी ने वैसा ही किया जैसा राजा ने उससे करने के लिये कहा। उसने अपनी कलाई से धागा निकाला और फर्श पर फेंक दिया।

अगले दिन जब उसकी दासियाँ कमरे की सफाई करने आयीं तो उनमें से एक ने रानी का फेंका हुआ वह धागा नीचे पड़ा देखा सो उसने उसे उठा लिया और जा कर नवलवत को दिखाया तो वह

बहुत गुस्सा हुआ। उसने भी तुरन्त ही उस धागे को लिया और राजा अपनी जिस रानी को प्यार नहीं करते थे उस चीमादेवरानी के पास ले गया।

उसने उसे बताया कि क्या हुआ था तो रानी ने उससे विनती की कि वह उस धागे को उसे दे दे और उसे बताये कि महालक्ष्मी की पूजा कैसे करनी थी। पर वह बोला कि आप पागल हो जायेंगी और फिर आप वैसा नहीं कर पायेंगी जैसा कि मैं आपको बताऊँगा।

उसने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी जैसा कि वह उसे बतायेगा। सो जैसे उसने पद्माधवरानी को उसने बताया था वैसे ही उसने चीमादेवरानी को भी बता दिया।

एक साल तक सब कुछ ठीकठाक चला पर अगले साल जब आश्विन का आठवाँ दिन आया तो एक बड़ी अजीब सी घटना घटी।

देवी महालक्ष्मी ने एक भिखारिन का रूप बनाया और अटपट में आ गयीं। पहले तो वे पद्माधवरानी के महल की तरफ गयीं तो वहाँ तो उनकी पूजा करने वाला कोई नहीं था। हालाँकि उस दिन आश्विन महीने का आठवाँ दिन था जो उनका खास दिन था।

महालक्ष्मी तो इस बात पर बहुत नाराज हो गयीं और जब उन्होंने पद्माधवरानी को देखा तो उससे कहा — “ओ रानी पद्माधवरानी ओ कई बेटों की माता आज तुम्हारे घर में क्या है।”

रानी बोली — "आज मेरे घर में कुछ नहीं है।"

पर बुढ़िया कहती रही — "अगर तुम मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो तुमको तुम्हारे सारे राज्य के लिये बहुत पुन्य मिल जायेगा।"

रानी बोली — "अगर मैं तुम्हें ताँबे की गागर भर कर भी पानी पिलाद्रूँ तो भी वह मेरे सारे राज्य को कोई पुन्य नहीं दे सकता।"

बूढ़ी भिखारिन बोली — "ओ रानी पद्माधवरानी ओ कई बेटों की माता। अगर तुम मुझे थोड़े से दही चावल दे दोगी तो तुम अपने राज्य के लिये बहुत सारा पुन्य कमा लोगी।"

रानी बोली — "अगर मैं तुम्हें बहुत सारा केवल दही चावल भी खाने के लिये दे दूँ तो भी कोई मुझे मेरे राज्य के लिये काफी पुन्य नहीं दे सकेगा।"

इस पर भिखारिन बहुत गुस्सा हो गयी और उसने रानी को शाप दिया — "तुम आधी मेंढक और आधी आदमी की शक्ल की हो जाओगी और तुम अपनी सौत के नहाने वाले कमरे के पास खड़ी रह कर मेंढक की तरह से टर्र टर्र करती रहोगी।"

पर रानी ने उसकी किसी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि इतनी ज़ोर से हॅसी कि ऐसा लगा जैसे दो लोहे की जंजीरें आपस में टकरा गयी हों।

महालक्ष्मी गुस्से में भर कर वहाँ से फिर चीमादेवरानी के महल में चली गयीं। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि उनकी पूजा की तो

सारी तैयारी हुई रखी है। महालक्ष्मी की एक तस्वीर भी दीवार के सहारे खड़ी हुई है।

वहॉ पहुॅच कर वह बुढ़िया बोली — “ओ रानी चीमादेवरानी ओ कई बेटों की माता। आज तुम्हारे घर में क्या है।”

चीमादेवरानी बोली — “आज हमारे घर में महालक्ष्मी की पूजा है।”

बुढ़िया बोली — “मैं महालक्ष्मी हूॅ।”

रानी को शक हुआ तो उसने पूछा — “मैं तुम्हें कैसे पहचानूॅ कि तुम महालक्ष्मी हो।”

देवी बोलीं — “सुबह को मैं एक छोटी बच्ची बन जाऊॅगी। शाम को में एक नयी शादीशुदा स्त्री जैसी बन जाऊॅगी और रात को में फिर से एक बुढ़िया बन जाऊॅगी।”

जब देवी ने ये तीनों शक्लें ले लीं तो चीमादेवरानी ने उसके अपने महल में बुलाया। उसको नहलाया और उसको तेल लगाया फिर उसको सिल्क की एक स्कर्ट पहना कर एक चौकी पर बिठाया।

फिर उसने नवलवत को बुलवाया दोनों ने मिल कर उस देवी की पूजा की और उनकी शान में मिट्टी के बर्तन बजाये। जब मिट्टी के बर्तनों को बजाने की आवाज राजा के कानों में पड़ी तो उसने अपना एक नौकर इधर भेजा जिधर से बतनों के बजने की आवाज आ रही थी।

उसने उनसे कहा कि देख कर आओ कि चीमादेवरानी के महल में से आज यह कैसी आवाज आ रही है। कुछ समय बाद वह राजा के पास लौटा और उसे बताया कि वहाँ ऐसा ऐसा हो रहा था। तो राजा ने कहा कि राजा ऐसे दृश्य को अपनी आँखों से देखना चाहेगा।

सो वह अपने नौकर के पीछे पीछे चल दिया। राजा को अपने महल में आया देख कर चीमादेवरानी महल से बाहर आयी और राजा को अपने महल में ऊपर ले गयी। वहाँ वे काफी रात गये तक चौपड़ खेलते रहे। सुबह हो गयी।

इस बीच सारी रात महालक्ष्मी उनके साथ बैठी बैठी उन दोनों का खेल देखती रही। सुबह को चीमादेवरानी ने महालक्ष्मी से उनका आशीर्वाद माँगा तो उन्होंने रानी को आशीर्वाद दिया और कहा —

"राजा तुमको अपने साथ अपने महल ले जायेगा और तुम्हारी सौत आधी मेंढक और आधे आदमी की शक्ल में जब तक तुम नहाती हो तुम्हारे नहाने के कमरे के पास मेढक की आवाज में टर्र टर्र करती रहेगी।"

पर चीमादेवरानी ने देवी से प्रार्थना की कि वह पद्माधवरानी को इतना भयंकर शाप न दें। पहले तो देवी ने कुछ माना नहीं पर फिर वह मान गयीं और बोलीं — "तो ठीक है राजा 12 साल के लिये उसे जंगल छोड़ आयेंगे।"

यह कह कर वह गायब हो गयीं और कोल्हापुर उड़ गयीं।

जब सुबह को सूरज उगा तो राजा ने चीमादेवरानी को अपने रथ में बिठाया और उसे अपने महल में ले गया। फिर उसने पद्माधवरानी को बुला भेजा कि वह भी उनके साथ मिल कर बैठे।

कुछ देर बाद रानी पद्माधवरानी फटे कपड़े पहने वहाँ आयी। उसने एक स्कर्ट पहन रखी थी उसके बाल खुले हुए थे। उसके सिर पर जलते हुए कोयलों का एक बर्तन था। वहाँ आ कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी।

राजा यह सब देख सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और पूछा — "यह कौन है जो इतनी ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रही है। यह कोई भूतनी है या फिर कोई शैतान है?"

नौकर बोला — "सरकार न तो यह कोई भूतनी है और न ही कोई शैतान है यह तो आपकी बड़ी रानी पद्माधवरानी हैं।"

राजा तुरन्त बोला — "ले जाओ इसको जंगल में और इसे मार दो वहाँ।" फिर वह अपने महल में चीमादेवरानी के पास चला गया और खुशी खुशी रहने लगा।

राजा के नौकर रानी पद्माधवरानी को जंगल ले गये और वहाँ जा कर उससे कहा कि राजा ने उन्हें उसे मारने का हुक्म दिया है। यह सुन कर तो रानी ने फिर रोना शुरू कर दिया।

रानी को रोते देख कर राजा के नौकरों का नर्म दिल और भी नर्म हो गया। वे उसके लिये बहुत दुखी थे। वे बोले — "रानी जी आप रोइये नहीं। हमने आपके हाथों से रोटी खायी है आपके हाथों

से पानी पिया है इसलिये हम आपको मार नहीं सकते। हम आपको ऐसे ही यहाँ छोड़ जाते हैं पर आप अब कभी इस राज्य की तरफ नहीं आना।"

इस तरह राजा के नौकर रानी को वहीं छोड़ कर अटपट वापस चले गये। रानी बेचारी वहाँ जंगल में इधर उधर मारी मारी फिरती रही और फिर एक दूसरे शहर में आ पहुँची जहाँ वह एक ऐसी सड़क पर पहुँच गयी जहाँ ताँबे का काम करने वाले लोग रहते थे।

उस सड़क पर एक ताँबे वाला एक राजकुमारी के लिये बहुत सुन्दर ताँबे के कंगन बना रहा था। वह राजकुमारी अभी अभी उस देश की रानी बनी थी। पर अचानक से कोई भी कंगन आपस में जुड़ कर ही नहीं दे रहा था।

ताँबे का सामान बनाने वाले को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने चारों तरफ देखा कि ऐसा उसके साथ कैसे हो रहा था। फिर उसने अपने नौकरों से पूछा कि "क्या उन्होंने वहाँ किसी नये आदमी को आस पास से गुजरता हुआ देखा?"

उन्होंने खड़े हो कर इधर उधर देखा तो उनको रानी पद्माधव रानी एक छिपी हुई जगह खड़ी मिल गयी। उन्होंने जा कर अपने मालिक को बताया तो मालिक और उसके नौकरों ने उसको खूब पीटा और उसको वहाँ से भगा दिया।

यहाँ से पिट कर वह एक और सड़क पर निकल गयी जहाँ सड़क पर बहुत सारे कपड़ा बुनने वाले काम कर रहे थे। इनमें से

एक बुनने वाला नयी रानी के लिये एक साड़ी बुन रहा था कि अचानक उसके दोनों धागों में से कोई भी धागा आगे नहीं चल रहा था। उन्होंने भी मालूम करने की कोशिश की कि वहाँ कोई अजनबी उधर आया था क्या।

कुछ देर की खोज के बाद उन्होंने भी रानी को देख लिया तो उन्होंने भी उसको बहुत मार मारी। अबकी बार वह वहाँ से भाग कर वापस जंगल चली गयी।

वहाँ वह फिर से बहुत देर तक इधर उधर घूमती रही जब तक कि वह एक साधु के पास नहीं पहुँच गयी। उस समय साधु अपने ध्यान में मग्न था। उसने अपने समय की कोई परवाह नहीं की बल्कि साधु के ध्यान के खत्म होने का ही इन्तजार करती रही।

जब वह ध्यान से उठते तब वह उनकी झोंपड़े में आती उसकी सफाई करती उनकी पूजा के बर्तन साफ करती और फिर उनकी झोंपड़ी में से जंगल में चली जाती।

ऐसा **12** साल तक चलता रहा। वह साधु को पता नहीं चलने देती थी कि वह उसकी झोंपड़ी साफ कर जाती है। पर वह अपने दिल में उसकी सेवाओं से बहुत खुश था।

एक दिन उसने बहुत ज़ोर से आवाज लगायी — "यह कौन है जो रोज आ कर मेरी गुफा साफ कर जाती है। जो भी यह काम करती है वह मेरे सामने आये।"

तो रानी उसके सामने गयी और उसके पैरों पर गिर पड़ी।

वह बोली — "अगर आप मुझे सजा न देने का वायदा करें तब मैं आपको सारी बात बताती हूँ।"

साधु ने उसे सजा न देने का वायदा किया और उसने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। साधु ने अपनी जादू की पुस्तकें निकालीं और उनको पढ़ कर पता चलाया कि उसको महालक्ष्मी का शाप मिला हुआ था।

सो उसने उसको महालक्ष्मी की पूजा करने का तरीका बताया और सारी रात वे मिट्टी के बर्तनों पर फूँक मारते रहे और उसकी खुशी के लिये रस्मो रिवाज करते रहे।

सुबह को देवी प्रगट हुईं तो रानी ने उनसे माफी माँगी। पर देवी रानी से अभी भी बहुत गुस्सा थीं। यह देख कर साधु ने भी रानी की तरफ से माफी माँगी। आखिर देवी प्रसन्न हुईं।

उन्होंने रानी से कहा — "उस पेड़ के नीचे पाँव धोने के लिये पानी भरा एक तसला रख दो। चन्दन का लेप रख दो। कई थाल भर कर फल रख दो।

कपूर रख दो। खुशबूदार घास के बने हुए पंखे रख दो। उनसे थोड़ी देर तक हवा करो ताकि उनकी खुशबू चारों तरफ बिखर जाये जिससे राजा को तुम्हारी याद आ सके कि यह खुशबू तुम इस्तेमाल करती थीं।

कल को राजा यहाँ आयेगा। वह प्यासा होगा सो वह अपने नौकरों को पानी की खोज में इधर उधर भेजेगा। जब वे यहाँ आयेंगे और सब चीज़ें तैयार पायेंगे तो वे यहाँ से वापस चले जायेंगे और जा कर राजा को सब कुछ बतायेंगे। फिर राजा खुद यहाँ आयेगा।

अगली सुबह जैसे कि देवी ने कहा था राजा वहाँ आया और एक पेड़ की ठंडी छाँह देखी। वह शिकार से बहुत थक गया था सो वह वहीं बैठ गया और आराम करने लगा। उसने पानी के तसले में अपने पैर धोये। फिर उसने फल खाये और ठंडा पानी पिया और कपूर खाया और आराम करने के लिये लेट गया।

जब वह आराम कर के उठा तो उसने अपने नौकरों से पूछा — "ऐसा कैसे हुआ कि जब मैंने अपने पैर धोये, फल खाये, ठंडा पानी पिया और कपूर खाया आराम किया तो मुझे कुछ ऐसी खुशबू आती रही जैसी कि रानी पद्माधवरानी लगाया करती थी।"

नौकर बोले — "सरकार आप नाराज न हों हमें माफ कर दें तो हम कुछ कहें।"

राजा ने कहा कि वह उन्हें कुछ कहेगा नहीं तो राजा के नौकरों ने राजा को बताया कि उन्होंने कैसे रानी पद्माधवरानी को ज़िन्दा छोड़ दिया था क्योंकि उन्होंने उनके हाथ से रोटी खायी थी और पानी पिया था इसलिये उन्होंने उनको नहीं मारा। तब राजा ने उन्हें उसको ढूँढने के लिये भेजा।

ढूँढते ढूँढते वे साधु की गुफा तक आ गये। वहाँ उनको रानी दिखायी दे गयीं तो वे भाग कर वापस राजा के पास पहुँचे। राजा उठा और साधु की गुफा की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने साधु को प्रणाम किया।

साधु ने राजा का प्रणाम तो स्वीकार कर लिया पर उसको बहुत डाँटा। तब साधु ने राजा से कहा कि उसे रानी के सामने खुद झुक कर उससे माफी माँगनी चाहिये।

राजा ने वैसा ही किया और साधु ने राजा को रानी को अपने घर ले जाने की आज्ञा दे दी। उसने फिर दोनों को आशीर्वाद दिया। राजा ने रानी को अपने रथ में बिठाया और उसे अटपट ले गया।

शहर के बाहर राजा ने अपना रथ रुकवाया और अपनी दूसरी रानी चीमादेवरानी को वहाँ बुलवाया। चीमादेवरानी नहायी धोयी तेल लगाया सिल्क के कपड़े पहने शाल ओढ़ा और अपने गहने पहने।

उसके आगे आगे अटपट के सारे तुरही बजाने वाले चले। जब वे अपने राजा से मिलने जा रहे थे तो वे अपनी अपनी तुरही अपनी सबसे ऊँची आवाज में बजा रहे थे।

राजा तो इतना सारा शोर सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया और चिल्ला कर बोला — “इतनी शान से कौन आ रहा है? क्या ये

पाताल की नाग कन्याऐं हैं या फिर जंगल की परियाँ जो जंगल में रहती हैं।"

राजा के नौकर बोले — "सरकार। न तो ये नाग कन्याऐं हैं और न ही ये जंगल की परियाँ हैं जो जंगलों में रहती हैं। यह तो रानी चीमादेवरानी है जिनको आने के लिये आपने कहा था।"

राजा पद्माधवरानी की तरफ घूमा और उससे कहा — "अगर तुम मुझसे इस रूप में मिलने के लिये आती बजाय इसके कि तुम मुझसे एक पागल औरत की तरह से मिलने आयीं तो तुम इस तरह से कभी दुख कभी नहीं उठातीं।"

रानी पद्माधवरानी ने कुछ नहीं कहा चुप ही रही पर फिर भी रथ में ही बैठी रही। राजा ने चीमादेवरानी को अपने रथ में बिठा लिया। तीनों शहर में घुसे। और जैसे ही वे अन्दर घुसे तो तुरही बजाने वालों ने इतनी ज़ोर से अपने अपने सींग बजाये कि करीब करीब सबके कान बहरे से हो गये।

उसके बाद सब लोग राज्य में खुशी खुशी रहे। राजा ने राज्य में इतना अच्छा राज किया जैसे खुद राजा राम अयोध्या में वापस आ गये हों।

8 टापू का महल[23]

एक बार की बात ही कि एक शहर था अटपट। उस शहर में एक ब्राह्मण रहता था। उसका एक शिष्य था जो रोज गॉव के तालाब पर नहाने और भगवान शिव की पूजा करने जाता था।

रास्ते में एक नदी पड़ती थी जिसमें एक रेत भरा टापू था। सो जब वह उस पार गॉव जाता था तो उसे वह नदी पार करनी पड़ती थी और साथ ही पार करना पड़ता था वह रेतीला टापू।

जब वह उस रेतीले टापू से हो कर घर वापस लौटता तो वह वहॉ टापू पर एक आवाज सुनता — "क्या मैं आऊॅ? क्या मैं आऊॅ? क्या मैं आऊॅ?" पर जब वह यह देखने के लिये चारों तरफ देखता कि यह कौन कह रहा है तो उसे कोई दिखायी नहीं देता।

आखिर ब्राह्मण का वह शिष्य इतना डर गया कि डर के मारे दुबला होता चला गया और कुछ ही दिन में वह सूखी डंडी की तरह हो गया।

ब्राह्मण बोला — "बेटे तुम्हारी खाने पीने की कोई इच्छा नहीं है ऐसी क्या बात है। तुम रोज ब रोज दुबले होते जा रहे हो।"

शिष्य बोला — "मुझे न भूख लगती है न प्यास लगती है और न ही मेरी कुछ खाने पीने की इच्छा है। पर अब तो मैं बहुत ज़्यादा डर गया हूॅ क्योंकि जब भी मैं नहा धो कर वापस घर लौटता हूॅ तो

[23] The Island Palace. (Tale No 8)

मेरे पीछे से एक आवाज आती है "क्या मैं आऊँ? क्या मैं आऊँ? क्या मैं आऊँ?" पर जब मैं यह देखने के लिये चारों तरफ देखता हूँ कि यह कौन कह रहा है तो मुझे कोई दिखायी नहीं देता।"

ब्राह्मण ने उसे समझाया — "बेटा तुम डरो नहीं। जब तुम्हें ऐसी आवाज सुनायी पड़े तो जितनी हिम्मत से बिना पीछे देखे तुम कहना "आओ मेरे साथ आओ। आओ मेरे साथ आओ।"

अगले दिन शिष्य फिर नदी पार गाँव में नहाने गया और शिव जी की पूजा करके जब वह वापस लौट रहा था तो टापू पर फिर से उसको आवाज सुनायी पड़ी "क्या मैं आऊँ? क्या मैं आऊँ? क्या मैं आऊँ?"

यह सुनते ही लड़का फिर बहुत डर गया पर कुछ पलों में ही उसने अपने डर पर काबू पा लिया और वह चीख कर बोला "आओ मेरे साथ आओ। मेरे साथ आओ। मेरे साथ आओ।"

आखिर वह यह बराबर कहते कहते और बिना पीछे देखे घर आ गया। जैसे ही ब्राह्मण का शिष्य घर आया तो उसने उसकी तरफ देखा तो देखा कि एक बहुत छोटी सी बच्ची उसके पीछे पीछे चली आ रही है।

गुरू जी ने तुरन्त ही उस लड़की की शादी अपने शिष्य से कर दी। अपने बराबर में ही उनके लिये एक घर बनवा दिया और उनको वहाँ रख दिया।

अब हुआ क्या कि सावन का महीना आया और आया सावन के महीने का पहला सोमवार। शिष्य ने अपने पत्नी से कहा — "मैं आज शिव जी की पूजा करने जा रहा हूँ। पर तुम मेरा इन्तजार मत करना। जब भी तुम्हें भूख लगे तब तुम अपना नाश्ता कर लेना।"

ऐसा कह कर शिष्य चला गया। थोड़ी ही देर में उसकी पत्नी को भूख लग आयी। हालाँकि वह जानती थी कि उसको अपने पति के कहने के बावजूद उनके बिना खाना नहीं खाना चाहिये क्योंकि वह शिव जी की पूजा कर रहे थे।

सो थोड़ी देर तो उसने उसका इन्तजार किया पर उसके बाद उसे इतने ज़ोर की भूख लग आयी कि वह उसका और ज़्यादा इन्तजार नहीं कर सकी।

वह अपना नाश्ता बनाने बैठी और उसका पहला कौर खाया ही था कि उसका पति बाहर वाले दरवाजे पर से चिल्लाया — "दरवाजा खोलो। दरवाजा खोलो।"

इससे वह लड़की डर गयी। उसने अपना बचा हुआ नाश्ता पलंग के नीछे छिपा दिया हाथ धोये और दरवाजा खोलने चली गयी। उसने अपने पति से कहा भी कि उसने उसका काफी देर तक इन्तजार किया। फिर उसने नाश्ता दोबारा बनाया जिसे उन्होंने एक के बाद दूसरे ने खाया।

अगले सोमवार को वैसा ही फिर से हुआ। छोटी लड़की ने अपना नाश्ता बनाया और उसका एक कौर मुँह में डाला ही था कि

बाहर के दरवाजे से आवाज आयी — "दरवाजा खोलो। दरवाजा खोलो।" उसने फिर से अपनी तश्तरी पलंग के नीचे छिपा दी और उससे कहा कि वह तो उसके आने का इन्तजार ही कर रही थी।

अगले दोनों सोमवारों को फिर ऐसा ही हुआ। उसने फिर से बहाना बना दिया कि वह तो उसका इन्तजार ही कर रही थी।

सावन के आखिरी रविवार को जब पति पत्नी लेटे हुए थे तो पति ने देखा कि पलंग के नीचे से कुछ रोशनी आ रही है तो उसने नीचे यह देखने के लिये झॉका कि वहॉ क्या है तो उसने वहॉ क्या देखा? कि वहॉ तो कई तश्तरी भर कर जवाहरात रखे थे।

उसने अपनी पत्नी से पूछा कि वे जवाहरात कहॉ से आये। अब वे तो क्योंकि उसकी बचे हुए नाश्ते की तश्तरी के थे सो भगवान शिव ने उनको सोने और जवाहरात में बदल दिया था।

यह सुन कर शरारती पत्नी डर गयी और उसने अपने पति को एक बहुत बड़ी कहानी सुना दी। वह बोली — "ये तो मेरे माता पिता ने मेरे लिये भेंटें दी हैं।"

पति ने पूछा — "पर तुम्हारे पिता का घर कहॉ है?"

तो पत्नी बोली — "रेतीले टापू पर जो नदी के बीच है।"

पति बोला — "तो एक दिन तुम मुझे अपने साथ वहॉ ले चलो न।"

अगली सुबह दोनों तैयार हो कर चले तो वह शरारती पत्नी तो मुश्किल से चल पा रही थी क्योंकि वह बहुत डरी हुई थी।

उसको मालूम था कि उसके पिता के पास कोई घर नहीं है। सो वह रास्ते भर भगवान शिव से प्रार्थना करती चली गयी "हे भगवान शिव। मेरे पिता को नदी के बीच में जो रेतीला टापू है उसमें एक घर दे दो। चाहे वह केवल आधे घंटे के लिये ही क्यों न हो।"

आखिर पति पत्नी दोनों उस रेतीले टापू पर आ गये। लो देखो उस टापू पर तो एक बहुत सुन्दर महल खड़ा था।[24] जब ये लोग वहाँ पहुँचे तो एक बहुत सुन्दर नौजवान शानदार पोशाक पहने उनका स्वागत करने आया। उसने ब्राह्मण का अपने जीजा की तरह स्वागत किया।

इसके अलावा एक और सुन्दर नाइट[25] बाहर आया जिसने ब्राह्मण शिष्य का अपने दामाद की तरह से स्वागत किया। एक नौजवान स्त्री भी आयी जो अपने आपको लड़की की बहिन बता रही थी। फिर बहुत सारे नौकर चाकर आये जो उनकी सेवा के लिये तैयार थे।

कुछ सिपाही महल के आस पास पहरा दे रहे थे। दरवाजों पर सन्तरी खड़े थे। वे जब वे अन्दर जा रहे थे तो उनके लिये रास्ता बना रहे थे। पति पत्नी को बैठने के लिये चौकियाँ दी गयीं। उन दोनों को बहुत बढ़िया खाना खिलाया गया।

---

[24] [My Note : The Brahman didn't get surprised to see that palace on the Island? Because the disciple was the regular visitor of the island. He should be surprised to see even that palace at the first place because he came only from that way daily two times and he had never seen the Palace there before.]

[25] Knight is at the high status in Imperial army. See his picture above.

जब वे खाना खा चुके तो चलने के लिये तैयार हुए। उन्होंने अपने सास और ससुर से विदा ली। उन्होंने पति पत्नी को फूलों की मालाऐं पहनायीं और पति पत्नी वहाँ से चल दिये।

जब पति पत्नी दोनों आधे रास्ते तक पहुँच गये तो अचानक पत्नी को याद आया कि उसने अपना फूलों का हार तो एक खूँटी पर टाँग दिया था और वह उसको वहाँ से अपने साथ लाना भूल गयी।

सो वह और उसका पति दोनों उस रेतीले टापू पर लौटे पर जब वे उस टापू पर आये तब वहाँ कोई महल नहीं था कोई नाइट नहीं था कोई सिपाही नहीं थे दरवाजे पर कोई सन्तरी नहीं था कोई दास दासियाँ नहीं थे।

बस वहाँ तो पड़ा था नंगा रेतीला टापू और उस पर वह फूलों की माला जो वह लड़की अपने साथ ले जाना भूल गयी थी। उसने उसे उठा कर अपने गले में पहन लिया।

पर उसके पति ने उससे पूछा — "तुम्हारे पिता का घर क्या हुआ?"

वह शरारती लड़की रो कर बोली — "जैसे वह आया था वैसे ही वह चला गया। पर अगर तुम मुझे माफ करने का वायदा करो तो मैं तुम्हें सब कुछ बताती हूँ।"

पति ने उसे माफ करने का वायदा किया तो उसने उसे बताया कि हर सोमवार को उसको इतनी भूख लगती थी कि उसको उसके आने से पहले ही अपना नाश्ता बनाना पड़ जाता था।

फिर जैसे ही वह उसमें से एक कौर खाती तो उसको अपने पति की आवाज सुनायी पड़ती तो वह उस बचे हुए नाश्ते को पलंग के नीचे खिसका देती। उसने उसको यह भी बताया कि भगवान शिव ने ही उसके उसके बचे हुए नाश्ते की तश्तरी को जवाहरातों से भर दिया था।

लेकिन जब तुमने मुझसे पूछा तो मैं डर गयी और डर के मारे मैंने कह दिया कि वे सब मेरे माता पिता ने भिजवाये हैं। फिर जब तुमने कहा कि तुम मेरे माता पिता से मिलना चाहते हो तब तो मैं बहुत ही डर गयी।

मैं रास्ते भर शिव जी की प्रार्थना करती गयी कि "हे भगवान मेरे पिता के लिये इस रेतीले टापू पर एक मकान बना दो चाहे वह आधे घंटे के लिये ही सही।" और भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली।"

पति ने यह सब सुन कर पत्नी को माफ कर दिया। पत्नी भी उसके बाद अच्छी हो गयी और उसने अपने पति से कोई कहानी बना कर नहीं सुनायी। वे लोग खुशी खुशी घर रहे।[26]

[26] [My Note : This story does not show who was the girl? Where did she come from? Who were her parents? Where did they live etc etc.]

9 साँपों का राजा नागोबा[27]

एक बार की बात है कि अटपट नाम का एक शहर था जिसमें एक ब्राह्मण रहता था जिसके सात बहुऐं थीं।

जब सावन का महीना आया तो उसमें आया नाग पंचमी का दिन। यह त्यौहार मनाने के लिये ब्राह्मण की एक बहू अपने बाबा के घर गयी। उसकी दूसरी बहू अपने दादा के घर गयी। एक और अपने पिता के घर गयी। इस तरह से सब बहुऐं अपने किसी न किसी रिश्तेदार के घर चली गयीं।

अब इनमें से रह गयी सबसे छोटी बहू। उसके माता पिता मर गये थे। सो अब न तो कोई उसका माता पिता था न ही कोई भाई था न कोई चाचा ताऊ था। उसके घर में तो न ही कोई बहिन थी और न ही कोई और रिश्तेदार जिसके घर वह चली जाती।

सो वह बहुत दुखी हुई और दुखी हो कर एक कोने में बैठ गयी और रोने लगी। कि उसे याद आया कि आज तो नाग पंचमी का दिन है। और यह दिन तो नागोबा की खुशी के लिये मनाया जाता है।

सो उसने अपने दिल ही दिल में उसकी प्रार्थना की और कहा कि "हे साँप देखो तुम मेरे पास आओ और ऐसे बन कर मेरे पास

---

[27] Nagoba the Snake King. (Tale No 9)
[My Note : Nag Panchami kI Kahani)

आओ जैसे कि तुम मुझे यानी अपनी बहिन को उसके माता पिता के घर ले जाने के लिये आये हो।"

सॉपों के राजा ने उसकी प्रार्थना सुनी और उस छोटी बहू के लिये वह बहुत दुखी हुआ जो एक कोने में बैठ कर रो रही थी। वह तुरन्त ही एक ब्राह्मण का वेश बना कर उसके घर आया और उससे बोला कि उसको उसके माता पिता ने घर बुलाने के लिये भेजा है।

अब ब्राह्मण ससुर तो यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसको शक था कि क्या वाकई वह आने वाला ब्राह्मण उसकी सबसे छाटी बहू का कोई रिश्तेदार भी था या नहीं। क्योंकि इससे पहले तो वह कभी यहॉ आया ही नहीं था।

आखिर उसने अपनी बहू से पूछा कि वह कौन था। अब बहू को तो ज़रा सा भी पता नहीं था कि वह कौन था। पर उसको देख कर वह खुश बहुत थी कि कम से कम उसे कोई लेने तो आया। उसकी प्रार्थना सुन ली गयी।

वह बोली — "ये मेरी मॉ के भाई हैं।"

उसके ससुर ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और उसको नागोबा के साथ भेज दिया। ब्राह्मण का वेश रखे रखे ही वह उसको अपने जमीन के नीचे वाले महल में के दरवाजे के पास ले गया। वहॉ जा कर उसने बताया कि वह कौन था।

फिर उसने अपना असली रूप रख लिया और अपने सिरों को फैलाते हुए उस लड़की को अपने सिरों पर बिठा कर उसे अपने

आलीशान महल के अन्दर ले गया। बीच वाले एक बहुत बड़े कमरे में उसे ले जा कर रानी से मिलवाया। और सारे साँप राजकुमारों से मिलवाया और उनसे कहा कि वे किसी भी हालत में उस लड़की को काटेंगे नहीं।

एक दिन साँप की रानी के बच्चे देने का समय आया तो वह एक कमरे में चली गयी। वहाँ उसने छोटी बहू से एक लैम्प अपने हाथ में ले कर अपने पास बैठने के लिये कहा। छोटी बहू ने वैसा ही किया।

कुछ ही देर में रानी साँप ने कुछ बच्चों को जन्म दिया। जब छोटी बहू ने उनको चारों तरफ रेंगते हुए देखा तो वह तो बहुत डर गयी। डर से उसका लैम्प उसके हाथ से नीचे गिर पड़ा। उसके नीचे गिरने से रानी साँप के सारे बच्चों की पूँछें उस आग में जल कर भस्म हो गयीं।

साँप की रानी उनको बहुत देर तक सहलाती रही और तसल्ली देती रही। पर जहाँ से साँप के बच्चों की पूँछ जली थी वहाँ उनको इतना दर्द हो रहा था कि रानी साँपिन को उनको आराम दे कर सुलाने में काफी देर लग गयी।

उस शाम जब राजा नाग घर वापस आया तो रानी ने राजा को सब बताया कि उसके पीछे क्या हुआ था। और वह छोटी बहू से इतनी नाराज थी कि राजा को रानी से वायदा करना पड़ा कि वह छोटी बहू को उसके घर छोड़ आयेगा।

कुछ दिन बाद नागराज ने फिर से एक ब्राह्मण का वेश बनाया बहू को बहुत सारी भेंटें दीं और उसको उसके पति के घर वापस ले चला।

जब साँप राजकुमारों ने अपनी माँ की बात सुनी तो उन्होंने भी इस लड़की से अपने भाइयों का बदला लेने की सोची। उन्होंने वह जगह पता की जहाँ वह रहती थी। फिर वहाँ उसको एक सन्देश भेजा कि वे उससे मिलने के लिये उसके पास आ रहे थे। पर वास्तव में वह उसको मारने के लिये नहीं काटने के लिये आ रहे थे।

वह लड़की तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी कि साँप राजकुमार उससे मिलने आ रहे हैं। जिस दिन से साँप राजा ने उसके मामा का रूप रखा था तभी से वह बिना पूँछ वाले छोटी पूँछ वाले और बड़ी पूँछ वाले सभी नाग राजकुमारों को वह अपने भाई समझती थी।

अब ऐसा हुआ कि जिस दिन वे नाग राजकुमार उसके घर आने वाले थे उस दिन नागपंचमी थी। छोटी बहू घर में अकेली बैठी बिना पूँछ वाले छोटी पूँछ वाले और बड़ी पूँछ वाले भाइयों का इन्तजार कर रही थी।

उनको आने में थोड़ी देर हो गयी थी सो वह बैठे बैठे अपनी खाने वाली मेज पर और दीवार पर नागराज नागोबा की तस्वीरें बनाने लगी। जब वह उनकी तस्वीरें बना चुकी तो उसने उनकी

पूजा की उनको दूध और खाना दिया और प्रार्थना की — “हे नागोबा सब मुश्किलों से मेरे भाइयों की रक्षा करो वे जहाँ कहीं भी हों।”

आखीर में उसने धरती पर लेट कर उन सब तस्वीरों को प्रणाम किया जो उसने दीवार और मेज पर खींची थीं।

इस बीच बिना पूँछ वाले छोटी पूँछ वाले और बड़ी पूँछ वाले सभी तरह के साँप वहाँ आ पहुँचे और छोटी बहू को पता भी नहीं चला। पर उन्होंने जब देखा कि वह बहू तो उनकी तरफ से उनके पिता की पूजा कर रही है तो उनका दिल पसीज गया और उन्होंने उसको काटने की इच्छा छोड़ दी।

बल्कि उन्होंने अपने आपको उसके सामने प्रगट किया और सारा दिन उसके घर में जितनी अच्छी तरह से उनसे हो सकता था रहे।

जब रात हुई तो उन्होंने दूध पिया जो छोटी बहू ने नागराज को चढ़ाया था। और उसकी जगह उन्होंने नौ रत्नों जड़ा एक हार छोड़ा। सुबह होने से पहले वे चुपचाप वहाँ से धरती के नीचे अपने पिता के घर चले गये।

सुबह को जब छोटी बहू सो कर उठी तो उसने देखा कि जहाँ उसने दूध रखा था वहाँ तो एक बहुत सुन्दर नौ रत्न जड़ा हार रखा हुआ है। उसके मुँह से खुशी की एक हल्की सी चीख निकल गयी।

उसने उसे उठा कर अपने गले में पहन लिया। जिस किसी ने भी उसको देखा वही उस पर मोहित हो गया।

उसके बाद से नाग राजकुमार फिर कभी उसे काटने नहीं आये और वे सब यानी छोटी बहू उसका पति उसका ससुर और बिना पूँछ वाले और कटी पूँछ वाले और बड़ी पूँछ वाले सभी नाग राजकुमार खुशी से रहे।

10 पार्वती जी और भिखारी[28]

एक बार की बात है कि अटपट शहर में एक ब्राह्मण रहता था जिसके सात बेटियाँ थीं। जब वे सब शादी के लायक हो गयीं तो उसने अपनी उन बेटियों से पूछा कि वह कौन है जो उनकी शादियाँ करायेगा उनके लिये सुन्दर सा लड़का उनके लिये ढूँढ कर लायेगा और उनकी किस्मत खोलेगा।

यह सुन कर उसकी बड़ी वाली छहों बेटियाँ बोली — "पिता जी आप। आप ही हमारी शादी तय करेंगे आप ही हमारे लिये सुन्दर पति ढूँढ कर लायेंगे और आप ही हमारी किस्मत बनायेंगे।"

पर सबसे छोटी बेटी थोड़ी सी शरारती लड़की थी वह बेकार में ही गुस्सा हो गयी। उसने अपना पैर पटका, पीछे मुड़ी और बोली — "मैं अपनी शादी अपने आप तय करूँगी और मैं अपने आप ही अपने लिये एक सुन्दर सा पति ढूँढूँगी और अपनी किस्मत खुद लिखूँगी।"

यह सुन कर ब्राह्मण उससे बहुत नाराज हुआ। तुम लोगा क्या सोचते हो कि उसने उस बेटी को फिर इस बात की सजा कैसे दी होगी।

उसने अपनी सबसे बड़ी छह बेटियों की शादी बहुत धूमधाम से बड़े अमीर घरों में और बहुत सुन्दर लड़कों से कर दी।

---

[28] Parwatee and the Beggar-Man. (Tale No 10)

पर इस सबसे छोटी बेटी की शादी उसने एक बहुत ही गरीब भिखारी से कर दी जितना गरीब कि तुमने पहले कभी कोई देखा भी नहीं होगा। उसके सारे शरीर पर कोढ़ के सफेद धब्बे थे। उसके हाथ और पैर सब सड़ गये थे।

अगर तुमने उस भिखारी को देख लिया होता तो जरूर ही तुम्हारे मुँह से निकला होता कि यह भिखारी आज नहीं तो कल जरूर ही मर जायेगा क्योंकि यह आदमी बेशक बहुत नहीं जी सकता।

जब छोटी बेटी की शादी उस भिखारी से हो गयी तो उसकी माँ ने उसकी गोद दाल से भर दी कि देखें अब यह किस तरह से अपनी किस्मत बनायेगी। कुछ ही दिन में वह भिखारी मर गया। लोग उसकी लाश को जलाने के लिये शमशान ले गये। उसके पीछे पीछे उसकी विधवा भी चली।

पर जब उसके पति के रिश्तेदार उसके शरीर को जलाने लगे तो उसने उनको रोक दिया और उनसे वहाँ से जाने के लिये कहा — "नहीं इसे अभी मत जलाओ। मेरी किस्मत तो अभी मेरा इन्तजार कर रही है वह जो कुछ भी है।"

वे सब उसके चारों तरफ इकट्ठा हो कर उसको समझाने लगे कि अब इस लाश के पास बैठे रहने से कोई फायदा नहीं है यह तो मर चुका है पर उसने उनका कहा नहीं माना। आखिर वे उसे समझाते

समझाते थक गये और जब वह नहीं मानी तो वे सब अपने अपने घर चले गये।

अब वह शमशान में अकेली बैठी रह गयी। उन सबके जाने के बाद उसने अपने पति की लाश अपनी गोद में ली और शिव जी की प्रार्थना की — "ओ भगवान शिव। मेरे माता पिता ने मुझे छोड़ दिया। मैं पैदा ही क्यों हुई। मैं तो रहने के लिये अनाथ भी हूँ और विधवा भी हूँ।"

जब वह प्रार्थना कर रही थी तो उसने उसकी माँ ने जो दाल उसे दी थी वह उसने लाश के मुँह में डाली। फिर वह वहाँ रोती हुई आधी रात तक बैठी रही।

इत्तफाक से उस दिन शिव और पार्वती जी अपने रथ में बैठे उस जगह के ऊपर से गुजर रहे थे। पार्वती जी ने अचानक अपने पति से कहा — "मुझे एक स्त्री के रोने की आवाज आ रही है। चलिये चल कर देखते हैं।"

सो शिव जी ने अपना रथ नीचे उतारा फिर खुद उसमें से नीचे उतरे और इधर उधर देखा तो ब्राह्मण की सबसे छोटी बेटी अपने पति की लाश अपनी गोद में रखे रो रही थी। उन्होंने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। तो उसने उनको सब कुछ बताया।

पार्वती जी को उस पर दया आ गयी वह बोलीं — "तुम्हारी चाची ने अपनी पवित्रता से बहुत पुन्य कमाया है। तुम उसके पास जाओ और उससे उसका सारा पुन्य माँग लो तो तुम्हारा पति फिर से

ज़िन्दा हो जायेगा।" उसके बाद शिव और पार्वती अपने रथ पर चढ़ गये और वहाँ से गायब हो गये।

अगली सुबह लड़की ने अपने पति के शरीर को वहीं छोड़ा और अपनी चाची के पास पहुँच कर उनसे उनका सारा पुन्य माँगा। और इस पुन्य माँगने की वजह भी बतायी।

उसकी चाची बहुत भली थी उसने उसको अपना सारा पुन्य दे दिया। बेटी उसका पुन्य ले कर वापस शमशान में गयी तो अपने पति को वापस ज़िन्दा पाया। वह ज़िन्दा हो गया पर अबकी बार जब वह ज़िन्दा हुआ तो उसको कोई कोढ़ नहीं था उसके हाथ पैर भी सब ठीक थे। सब कुछ बहुत सुन्दर था।

वह अपने पति को ले कर अपने पिता के घर गयी और बोली — "पिता जी पिता जी। देखिये आपने मुझे घर से बाहर निकाल दिया पर देवता लोग मुझे घर वापस ले आये। और मेरी अच्छी किस्मत भी आपके बिना लाये ही मेरे साथ आ गयी।"

उसके पिता का तो पार्वती जी के डर के मारे कोई बोल भी नहीं फूटा सो वह चुप खड़ा रह गया। उसके बाद वह छोटी लड़की और उसका भिखारी पति बहुत सालों तक सुख से रहे।

11 पार्वती जी और ब्राह्मण[29]

एक बार की बात हे कि अटपट शहर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। जब भाद्रपद का महीना आया तो सब घरों में पार्वती जी की मूर्ति खरीदी गयी और स्त्रियों ने गलियों में घूमना और पार्वती जी के गीत गाने शुरू कर दिये।

जब उस गरीब ब्राह्मण के बच्चों ने यह सब देखा तो वे अपनी माँ के पास दौड़े गये और बोले — "माँ माँ हमको भी पार्वती जी की छोटी छोटी मूर्तियाँ ला कर दो न जैसी और दूसरे बच्चों के पास है।"

माँ बोली — "पार्वती जी की मूर्तियों को खरीदने का क्या फायदा है। अगर हमने वे मूर्तियाँ खरीदीं तो हमें उनको कुछ न कुछ चढ़ाना पड़ेगा और हमारे घर में उनको देने के लिये कुछ नहीं है।

तुम अपने पिता के पास जाओ और उनसे कहो कि वे बाजार जा कर कुछ अनाज खरीद कर लायें। अगर वह कुछ अनाज खरीद कर लायेंगे तो मैं तुम्हारे लिये पार्वती जी की मूर्तियाँ खरीद दूँगी।"

वे दौड़े दौड़े पिता के पास गये और उनसे बोले — "पिता जी पिता जी। अगर आप माँ के लिये बाजार से अनाज ले आयेंगे तो माँ हमें पार्वती जी की मूर्ति खरीद देगी।"

---

[29] Parwati and the Brahman. (Tale No 12)

उनके पिता ने पहले घर देखा कि वहाँ कुछ है या नहीं पर उसको घर में कुछ नहीं मिला फिर उसने अपना बटुआ देखा तो उसमें भी बाजार से जा कर अनाज लाने के लिये पैसे नहीं थे। हालाँकि उसने अपने बच्चों को समझाने की बहुत कोशिश की पर उनकी समझ में कुछ नहीं आया।

वे चिल्ला कर बोले — "पिता जी पिता जी। माँ कहती है कि अगर आप हमारे लिये अनाज ला कर दे देंगे तो वह हमारे लिये पार्वती जी की मूर्ति खरीद देगी। पिता जी हम दूसरे बच्चों की तरह से पार्वती जी की मूर्तियाँ क्यों नहीं खरीद सकते।"

फिर उन बच्चों ने अपने पिता से इतनी जिद की कि वह बहुत चिन्तित हो गया। वह बोला — "मैं अपने बच्चों को इतना ही प्यार करता हूँ जैसे वे सोने के बने हों। पर मैं जो उनसे कह रहा हूँ वह उनकी समझ में ही नहीं आता।

उनकी यह समझ में ही नहीं आयेगा क्योंकि यह और कुछ नहीं केवल गरीबी है जिसकी वजह से मैं खाना नहीं खरीद पा रहा और पार्वती जी को खाना नहीं दे पा रहा हूँ। लगता है कि मुझे बाहर जा कर भीख माँगनी चाहिये। पर अगर मैं कुछ माँगने जाऊँगा भी तो मुझे कोई कुछ देगा भी नहीं। ऐसी ज़िन्दगी से तो मौत ही अच्छी।"

यह सोच कर वह उठा और इस इरादे से गाँव के तालाब की तरफ चल दिया कि वहाँ पहुँच कर वह उसमें डूब कर अपनी जान दे देगा।

वह अभी आधी दूर ही गया था कि उसको एक बुढ़िया मिली। उसने उसे आते हुए सुना तो उससे पूछा कि वह कौन था। उसने उससे अपनी सारी मुसीबतें कह दीं और कहा कि यह यहाँ अपने बच्चों से बच कर डूब कर जान देने के लिये आया है।

बुढ़िया ने उसे तसल्ली दी और उसे जिद कर के घर वापस जाने के लिये कहा। वह उस बुढ़िया को घर ले गया। उसकी पत्नी एक लैम्प ले कर बाहर दरवाजा खोलने आयी और दरवाजा खोल कर उससे पूछा — "यह कौन है?"

पति यह बताना नहीं चाहता था कि वह उसे सड़क पर मिल गयी थी इसलिये उसने उससे कहा "यह मेरी दादी हैं।"

यह सुन कर पत्नी ने उसका स्वागत किया और उसको अन्दर ले गयी। जब वह बुढ़िया वहाँ आराम से बैठ गयी तो ब्राह्मण की पत्नी कुछ निराश हो कर उठी और बेकार में ही अनाज के बर्तन देखने गयी क्योंकि उसको तो मालूम था कि वे सब बर्तन खाली थे फिर भी उसने सोचा कि वह एक बार उनको और देख लेती है।

पर लो देखो वे तो सारे बर्तन अनाज से लबालब भरे पड़े थे। यह देखते ही उसने अपने पति को बुलाया तो दोनों यह देख कर बहुत खुश हुए।

पत्नी ने उसमें से चावल निकाले और उनको पकाया। घर में सबने इतना चावल खाया कि उनके पेट तन गये। फिर वे सब खुशी खुशी सोने चले गये।

अगली सुबह बुढ़िया ने ब्राह्मण से कहा — "बेटा। ज़रा मेरे लिये नहाने का पानी रख देना और मेरे लिये बहुत बढ़िया सा खाना बनाना। और हॉ यह सब काम ज़रा जल्दी करना। कोई बहाना नहीं बनाना।"

ब्राह्मण उठा और वह अपनी पत्नी के साथ बुढ़िया के नहाने के लिये पानी लाया फिर वह बाहर भीख मॉगने चला गया। पहले तो जब वह बाहर जाता था तो कोई उसे भीख देता नहीं था पर आज तो हर आदमी उसको भीख में कुछ न कुछ दे रहा था – अन्न गुड़ पैसे खाना आदि आदि।

आज वह बहुत खुश था। खुशी खुशी वह घर वापस आया। उसकी पत्नी ने बहुत बढ़िया खाना बनाया। बच्चों ने भी उस दिन इतना ज़्यादा खाना खाया कि उनका पेट ढोल की तरह से तन गया।

नाश्ते के बाद बुढ़िया ने ब्राह्मण से कहा — "बेटा कल मुझे खाने में खीर चाहिये।"

ब्राह्मण बोला — "दादी मॉ। मेरे पास इतना सारा दूध कहॉ है।"

बुढ़िया बोली — "तू उसकी चिन्ता मत कर। जा तू अपने ऑगन में जितने चाहे उतने लकड़ी के बड़े बड़े कीले गाड़ना और जब शाम को तेरे जानवर घर लौटें तो गॉव भर की गायों और भैसों को उनके नाम से पुकारना।

वे सब तेरे पास आ जायेंगी। उनमें से तू जितनी चाहे उतनी गायें और भैंसें दुह लेना उतना दूध मेरी खीर के लिये काफी रहेगा।"

ब्राह्मण ने वैसा ही किया जैसा कि बुढ़िया ने कहा। शाम को उसने गायों और भैंसों को उनका नाम ले ले कर पुकार लिया तो वे सब तरफ से उसके पास चली आयीं। और उनके पीछे आये उनके बछड़े और कटरे[30]।

यहाँ तक कि ब्राह्मण का सारा आँगन उनसे भर गया फिर भी बहुत सारी गायें भैंसें बाहर ही खड़ी रह गयीं उनके लिये आँगन में कहीं जगह ही नहीं थी। उसने उनमें से बहुत सारी गायें और भैंसें दुह लीं।

अगले दिन जो उसकी खीर बनी वह इतनी सारी थी कि अगर कोई 1000 साल तक भी ज़िन्दा रहे तो किसी के यहाँ इतनी खीर बनती नहीं देख सकता। बच्चों ने तो वह इतनी खायी कि वे खाते खाते थक गये। उसके आगे तो वे कुछ कर ही नहीं सके और गहरी नींद सो गये।

पर उस शाम बुढ़िया ने कहा — "बेटे। मैं चाहती हूँ कि अब तू मुझे मेरे घर छोड़ आ।"

ब्राह्मण बोला — "पर दादी। मैं आपको आपके घर छोड़ कर कैसे आ सकता हूँ क्योंकि आप ही की वजह से तो मेरी इतनी

[30] A Buffalo's son is called Kataraa and her daughter is called Katiyaa.

अच्छी किस्मत आयी है। अगर आप चली जायेंगी तो मेरी इतनी अच्छी किस्मत भी चली जायेगी।"

बुढ़िया बोली — "डर मत क्योंकि मैं पार्वती हूँ। मैं तुझे आशीर्वाद देत ीहूँ कि तेरी यह खुशकिस्मती फिर कभी नहीं जायेगी। इसलिये अब तो तू मुझे मेरे घर तक छोड़ आ।"

ब्राह्मण बोला — "मैं अपनी खुशकिस्मती केवल रखना ही नहीं चाहता बल्कि इसे बढ़ाना भी चाहता हूँ।"

इस पर बुढ़िया बोली — "अगर तू मेरे साथ आयेगा तो मैं तुझे कुछ रेत दूँगी जिसे तू जब घर वापस आये तो अपने सारे घर में बिखेर देना अपने बर्तनों पर अपने ऑगन में सब जगह बिखेर देना। अपने बक्सों और आलमारियों में रख देना। तब तू देखेगा कि तेरी खुशकिस्मती जितनी अब है इससे कभी कम नहीं होगी।"

ब्राह्मण पार्वती जी की इन बातों से सन्तुष्ट हो गया। उसने बुढ़िया की पूजा की और उसको साथ ले कर गॉव के तालाब की तरफ चला। वह कुछ देर ही चला होगा कि बुढ़िया तो रास्ते में अचानक ही गायब हो गयी।

वह वापस घर लौट आया और रेत ला कर अपने सारे घर में बिखरा दिया आलमारियों और बक्सों में भी रख दिया। उस दिन से उसकी खुशकिस्मती ने उसका साथ नहीं छोड़ा। उसकी धन सम्पत्ति भी बढ़ी उसके बच्चे भी बढ़े। और वे सब बहुत साल तक खुशी रहे।

12 सोमा धोबिन[31]

एक बार की बात है कि अटपट गॉव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी धनवन्ती अपने सात बेटे और सात बहुओं के साथ रहता था। उसके एक बेटी भी थी जिसका नाम था गुणवन्ती।

जब भी कभी कोई साधु ब्राह्मण इसके घर आता तो इस घर का यह तरीका था कि कोई न कोई उसको कुछ न कुछ दान जरूर देता था और उसके आगे लेट कर उसको प्रणाम करता था।

एक दिन उनके यहॉ एक ब्राह्मण आया जो पेड़ की तरह से लम्बा था और सूरज की तरह चमक रहा था। तो रोज की तरह ब्राह्मण की सातों बहुऐं उसको दान देने के लिये दौड़ीं। उन्होंने उसको दान दिया और उसके पैरों में गिर कर प्रणाम किया।

ब्राह्मण ने उन सबको आशीर्वाद दिया और कहा — "तुम्हारे बहुत सारे बच्चे हों तुम्हारा घर धन धान्य से भरा रहे तुम्हारे पति तुम्हें ज़िन्दगी भर प्यार करते रहें।"

पर ब्राह्मण की बेटी गुणवन्ती कुछ आलसी किस्म की लड़की थी। जब यह ब्राह्मण उनके घर भीख मॉगने आया तो वह तभी भी बिस्तर में पड़ी सो रही थी।

उसकी मॉ धनवन्ती उसके पास गयी और उसको उठाते हुए बोली — "ओ गुणवन्ती उठ और चल कर ब्राह्मण को दान दे।"

[31] Soma the Washerwoman. (Tale No 12)

वह बेचारी हकबका कर उठ बैठी तुरन्त ही उसने दान में कुछ निकाला और ब्राह्मण को दिया उसके पैरों में लेट कर उसे प्रणाम किया। तो ब्राह्मण बोला — "बेटी धर्म का पालन करो।"

लड़की यह सुन कर भागी भागी माँ के पास गयी और बोली — "माँ माँ। भाटजी ने मुझे वैसा ही आशीर्वाद नहीं दिया जैसा मेरी भाभियों को दिया।"

उसकी माँ बोली — "जा थोड़ी सी भीख और ले जा और जा कर उसको दे दे फिर देख कि वह क्या करता है।"

लड़की फिर भागी गयी और उसने उसको कुछ और भीख दी और उसके सामने लेट कर उसको प्रणाम किया तो उसने फिर वही आशीर्वाद दिया — "बेटी धर्म का पालन करो।"

इस पर धनवन्ती ने उससे पूछा कि उसने उसकी बेटी को ऐसी अजीब सा आशीर्वाद क्यों दिया। तो साधु बोला — "इसकी शादी के बाद जल्दी ही इसके पति की मृत्यु हो जायेगी तो यह विधवा हो जायेगी।"

धनवन्ती तो यह सुन कर धरती पर गिर पड़ी और ब्राह्मण के पैर पकड़ कर रोते हुए बोली — "भगवन मुझे बताइये कि मैं ऐसे दुर्भाग्य से कैसे बच सकती हूँ। मैं अपनी बेटी को विधवा होने से कैसे बचा सकती हूँ।"

ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी तो वह बोला — "रो मत बेटी रो मत। मैं तुझे एक तरकीब बताता हूँ इससे तेरा यह दुर्भाग्य टल सकता है।

सात समुद्र पार एक टापू है। वहाँ सोमा नाम की एक धोबिन रहती है। अगर तू उसको अपनी बेटी की शादी में बुला सके तो वह अपने इस दुर्भाग्य से बच सकती है। बस तुझे इतना और करना पड़ेगा कि जब इसकी शादी खत्म हो जाये तो तुझे उसे पूरी इज़्ज़त के साथ उसके घर छोड़ना पड़ेगा।"

इतना कह कर उस साधु ने अपना झोला उठाया और दूसरी जगह भीख माँगने चला गया।

ब्राह्मण जब घर लौटा तो उसकी पत्नी ने उसको बताया कि उस दिन क्या हुआ था। फिर बोली — "किसी न किसी को सात समुद्र पार जा कर सोमा धोबिन को यहाँ ले कर आना चाहिये।"

सो माता पिता ने अपने सातों बेटों को बुलाया और बोले — "तुममें से वे लोग जो अपने माता पिता की इज़्ज़त करते हैं वे अपनी बहिन को सात समुद्र पार ले जायें और सोमा धोबिन को यहाँ ले कर आयें।"

पर सब बेटों ने अपनी माँ से कहा — "आप तो केवल अपनी बेटी की ही परवाह करती हैं। आप हमको तो ज़रा सा भी प्यार नहीं करतीं। हम लोग सात समुद्र पार केवल अपनी बहिन के लिये सोमा धोबिन को यहाँ ले कर नहीं आयेंगे।"

यह सुन कर माँ ने तो रोना शुरू कर दिया और पिता का झगड़ा शुरू हो गया। वह अपनी पत्नी तरफ घूमा और उससे बोला — आज के बाद तुम्हारा कोई बेटा नहीं है। मेरे लिये तो मेरे सातों बेटे अब ऐसे हो गये जैसे वे कभी पैदा ही नहीं हुए हों।

पर तुम्हें मेरी बेटी की चिन्ता करने की कोई की जरूरत नहीं है। मैं खुद सात समुद्र पार कर के उधर जाऊँगा जहाँ सोमा धोबिन रहती है और वहाँ से उसे ले कर आऊँगा।"

यह सुन कर सातों बेटों में से सबसे छोटा बेटा बोला — "पिता जी आप ऐसा मत कहिये कि आपके कोई बेटा नहीं है जबकि हम सातों यहाँ मौजूद हैं। मैं अपनी बहिन गुणवन्ती को अपने साथ वहाँ ले जाऊँगा। हम दोनों वहाँ जा कर सोमा धोबिन को ढूँढेंगे और उसे साथ ले कर आयेंगे।"

कुछ दिन बाद दोनों बच्चों ने माता पिता को प्रणाम किया और अपनी यात्रा पर रवाना हो गये।

चलते चलते वे समुद्र के किनारे आये पर हवा बहुत तेज़ चल रही थी लहरे बहुत ऊँची ऊँची उठ रही थीं झाग उठ उठ कर पत्थरों से टकरा रहा था। बहिन भाई की यही समझ में नहीं आ रहा था कि वे अपनी यात्रा कैसे जारी रखें।

वहाँ उनके आसपास कोई ऐसा नहीं था जो उनको खाना पानी दे देता। उनको तो बस इससे ज़्यादा कुछ और दिखायी ही नहीं दे रहा था कि वे वहीं लेट कर मर जायें।

फिर उन्होंने सोचा कि पहले वे शिव जी की पूजा कर लेते हैं। दोनो बच्चों ने शिव जी की प्रार्थना की — "हे भगवान शिव हमें इस मुश्किल से निकालो।"

प्रार्थना करने के बाद वे दोनों एक बरगद के पेड़ के नीचे जा कर बैठ गये। सारा दिन हो गया उनको न तो कुछ खाने को मिला न कुछ पीने को।

अब ऐसा हुआ कि उस बरगद के पेड़ की चोटी पर एक गरुड़ का घोंसला था। उसमें गरुड़ के कई छोटे छोटे बच्चे भी थे। शाम हुई तो माता गरुड़ और पिता गरुड़ घर लौटे और उन्होंने अपने बच्चों को खिलाना पिलाना शुरू कर दिया। पर वे छोटे छोटे गरुड़ के बच्चे खाने को हाथ भी न लगायें।

माता पिता ने उनसे पूछा कि क्या बात है वे खाना क्यों नहीं खा रहे हैं। वे बोले दो अजनबी हमारे घर आ कर ठहरे हैं वे हमारे पेड़ के नीचे ठहरे हैं उन्होंने सारा दिन कुछ खाया पिया नहीं है। यह सुन कर माता गरुड़ और पिता गरुड़ नीचे उतरे और लड़के से पूछा कि उनकी मुश्किल क्या है।

पिता गरुड़ फिर बोला — "तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारी कोई भी परेशानी क्यों न हो मैं सब ठीक कर दूँगा। तुम बिना खाना खाये हुए सोने नहीं जाना। मैं तुम दोनों के लिये कुछ फल ले कर आता हूँ। उनमें से कुछ तुम खा लेना और कुछ अपनी छोटी बहिन को दे देना।"

तब लड़के ने पिता गरुड़ को बताया कि उसकी क्या मुश्किल थी और क्यों उसे सात समुद्र पार करने थे।

पिता गरुड़ ने कहा — "तुम चिन्ता मत करो। कल सुबह को मैं तुम्हें सात समुद्र पार ले जाऊँगा और सीधे सोमा धोबिन के दरवाजे पर ले जा कर उतार दूँगा।"

यह सुन कर दोनों बच्चे बहुत खुश हुए और भगवान शिव को बहुत धन्यवाद दिया। फिर उन्होंने गरुड़ के दिये हुए फल खाये और उसके बाद पेड़ के नीचे लेट कर तुरन्त ही गहरी नींद सो गये।

अगले दिन पिता गरुड़ और माता गरुड़ दोनों नीचे आये। पिता गरुड़ ने लड़के को अपने ऊपर बिठाया और माता गरुड़ ने लड़की को अपने ऊपर बिठाया और सात समुद्र पार के लिये उड़ चले।

हवा अभी भी बहुत तेज़ थी पानी में लहरें अभी भी बहुत ऊँची थीं समुद्र के पानी का झाग अभी भी पत्थरों से टकरा रहा था। पर गरुड़ लोग आसमान में अभी भी उड़ते चले जा रहे थे जब तक कि वे सोमा धोबिन के दरवाजे तक नहीं आ गये।

उन्होंने लड़के और उसकी बहिन को वहाँ छोड़ा और अपने उसी पेड़ पर वापस लौट आये जहाँ उन्होंने अपने बच्चों को छोड़ा था और वे उनका इन्तजार कर रहे थे।

दोनों बहिन भाई को सोमा धोबिन के घर में घुसने में डर लग रहा था सो वे सारे दिन छिपे रहे। अगली सुबह सवेरे वे जल्दी उठे। उन्होंने उसका आँगन साफ किया उसका दरवाजा गोबर से

लीपा पोता। और इससे पहले कि कोई उनको देखता वे वहाँ से भाग गये और छिप गये। यह सब वे एक साल तक करते रहे।

एक दिन सोमा ने अपने सारे बच्चों को बुलाया और उनसे पूछा — "तुममें से कौन है जो इतनी सुबह उठता है मेरा आँगन बुहारता है मेरे फर्श साफ करता है।"

उसके सब बच्चों और सब बहुओं ने कहा कि यह काम उन्होंने नहीं किया। इससे सोमा की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी कि जब उसके अपने बच्चे यह काम नहीं करते तो फिर कौन करता है।

सो उस रात वह सोने नहीं गयी और रात भर इस इन्तजार में रही कि देखूँ सुबह को इतनी जल्दी से मेरा यह काम कौन कर जाता है। जैसे ही सुबह हुई तो उसने देखा कि एक लड़की आयी और उसका आँगन बुहारने लगी और उसका भाई उसके घर के फर्श साफ करने लगा।

सोमा अपनी जगह से उठी और उनसे पूछा — "बच्चों तुम लोग कौन हो?"

बच्चे बोले — "हम ब्राह्मण हैं।"

सोमा बोली — "पर मैं तो केवल धोबिन ही हूँ। मैं तो बहुत नीची जाति की हूँ। तुम लोग मेरा आँगन क्यों बुहार रहे हो। अगर मैं इस तरह से ब्राह्मणों से सेवा कराऊँगी तो इससे तो मेरे ऊपर पाप चढ़ेगा।"

लड़का बोला — “यह मेरी बहिन है। एक ब्राह्मण ने हमसे कहा है कि अगर आप हमारे घर इसकी शादी में नहीं आयेंगी तो यह बेचारी शादी के थोड़े दिन बाद ही विधवा हो जायेगी।

सो हमारे माता पिता ने कहा है कि हम आपको अपने घर ले चलें। आपको खुश करने के लिये हम आपके यहाँ नौकर की तरह से काम कर रहे थे।”

सोमा बोली — “बच्चों तुमको मेरे घर में इस तरह का काम करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी शादी में तुम्हारे घर जरूर चलूँगी।”

फिर उसने अपनी सब बहुओं को बुलाया और उनसे कहा — “देखो मैं इस बच्ची की शादी में जा रही हूँ। अगर मेरे पीछे मेरा कोई सम्बन्धी मर जाये तो तुम उसके शरीर को जलाना नहीं जब तक मैं वापस न आ जाऊँ।”

कह कर वह उन दोनों बच्चों के साथ समुद्र के किनारे चली गयी। हवा अभी भी बहुत तेज़ थी पानी में लहरें अभी भी बहुत ऊँची थीं समुद्र के पानी का झाग अभी भी पत्थरों से टकरा रहा था।

सोमा ने एक बच्चे को अपनी एक बगल में दबाया दूसरे बच्चे को दूसरी बगल में दबाया और ऊपर आसमान में छलाँग लगा दी। जब वह समुद्र के दूसरे किनारे पर पहुँची तो उसने बच्चों को नीचे जमीन पर उतार दिया और वे उसको अपने घर ले चले।

धनवन्ती ने उन सबका स्वागत किया और सोमा को बहुत बहुत धन्यवाद दिया कि वह उसके घर आयी।

सबसे छोटा भाई फिर उज्जैन गया और बहिन के लिये ठीक लड़का देख कर उसे शादी के लिये ले आया। शुभ दिन देख कर लड़की की शादी कर दी गयी।

पर जब दुलहा और दुलहिन एक दूसरे के ऊपर चावल फेंक रहे थे दुलहा बेहोश हो गया। वह जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश पड़ा रहा। दुलहिन बहुत डर गयी उसको तो पता ही नहीं था कि ऐसी हालत में वह क्या करे।

पर तब सोमा आगे आयी और बोली — "तुम चिन्ता मत करो बेटी यह कोई खास बात नहीं है।"

कह कर उसने अपने हाथ में थोड़ा पानी लिया और अपने ऊपर छिड़क लिया। सोमा की यही छिपी हुई ताकत थी जो उसने हर सोमवार को ये रस्में कर के हासिल की थी।

वह सुबह सवेरे उठती नहाती धोती चुपचाप कपड़े पहनती। ब्राह्मणों को तरह तरह की भेंटें देती। पीपल के पेड़ की **108** परिक्रमा[32] देती। पर इस समय अपने ऊपर पानी छिड़क कर उसने अपना सारा पुन्य गुणवन्ती को दे दिया था।

---

[32] Doing Parikrama is going round and round of somebody or something. In Hindus 108 number is very sacred. Many people do it 108 times. Three number is also most common.

इसलिये उसकी ताकत से गुणवन्ती ने अपने पति को ज़िन्दा किया। फिर खुशी खुशी शादी की रस्में पूरी हुईं।

इसके बाद सोमा ने वहाँ से विदा ली और अपने घर जाने के लिये समुद्र के किनारे आ पहुँची। जब वह समुद्र के किनारे पर पहुँची तो हवा अभी भी बहुत तेज़ थी पानी में लहरें अभी भी बहुत ऊँची थीं समुद्र के पानी का झाग अभी भी पत्थरों से टकरा रहा था।

पर क्योंकि उसने अपनी सारी ताकत गुणवन्ती को दे दी थी इसलिये अब उसके पास कोई ताकत नहीं बची थी जिससे वह आसमान में कूद कर उड़ सकती और उस पार अपने घर पहुँच जाती।

वह अकेली ही एक नदी के किनारे बैठ गयी। फिर वह उठी नदी में नहायी धोयी विष्णु भगवान की प्रार्थना की 108 रेत के कण अपने हाथ में लिये और नदी के पास ही खड़े पीपल के पेड़ की 108 बार परिक्रमा की। अब उसकी ताकत वापस आ गयी थी।

वह समुद्र के किनारे वापस चली गयी और वहाँ से आसमान में छलाँग लगा दी। सात समुद्र पार कर के वह सीधी अपने घर के दरवाजे पर उतर गयी।

उसको देख कर उसकी सब बहुऐं उसके पास दौड़ी आयीं — "माँ माँ। हम आपका इन्तजार ही कर रहे थे। जब आप यहाँ नहीं थीं तो आपके बेटे आपके दामाद आपके पति सब मर गये थे। पर

जैसा कि आपने हमसे कहा था कि हम उनके शरीरों को न जलायें सो हमने उनको जलाया नहीं घर में ही रखे रहने दिया। पर अब वे सब अचानक ज़िन्दा हो गये हैं।"

सोमा ने उनसे पूछताछ की तो उसे पता चला कि वे सब तभी मरे थे जब उसने अपने सारे पुन्य गुणवन्ती को दिये थे। और वे तभी ज़िन्दा हुए थे जब उसने पीपल के पेड़ की **108** बार परिक्रमा कर के अपने पुन्य वापस पाये।

सब लोग सोमा को अपने बीच पा कर बहुत खुश हुए। फिर वे बहुत समय तक खूब खुशी खुशी रहे। ब्राह्मण ने भी अपने दामाद के ज़िन्दा होने की खुशी अपने छहों बड़े बेटों को अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने के बावजूद माफ कर दिया और वे सब भी खुशी खुशी रहे।

13 वशिष्ठ जी और चार रानियाँ[33]

एक बार की बात है कि अटपट नाम का एक शहर था। उस शहर में एक राजा राज्य करता था जिसके चार रानियाँ थीं। वे हमेशा घर के काम के ऊपर झगड़ा करती रहती थीं। सो घर में कुछ शान्ति रखने के लिये उसने घर का काम उन चारों में बाँट दिया था।

पहली रानी को तो उसने दूध का सारा काम दे दिया था। दूसरी रानी को खाना बनाने का सारा काम दे दिया था। तीसरी रानी को बच्चों का काम दे दिया था और चौथी रानी को उसने शाही कपड़ों की देखभाल का काम सौंप दिया था।

पहले तो सब काम ठीक चलता रहा फिर पहली रानी ने तीसरी रानी से कहा — "तुमको बच्चों की देखभाल करने के लिये क्यों कहा गया। तुमको दूध का काम क्यों नहीं दिया गया।"

उधर दूसरी रानी ने चौथी रानी से कहा — "मैं ही खाने पीने का सारा काम क्यों करूँ।"

तीसरी रानी बोली — "मैं ही हमेशा बच्चों की देखभाल क्यों करूँ।" चौथी रानी अपना पैर पटक कर बोली — "मैं अब राजा के कपड़ों की देखभाल नहीं करूँगी।"

और उस दिन सारा दिन वे चारों रानियाँ आपस में लड़ती झगड़ती रहीं। एक दूसरे पर चिल्लाती रहीं।

---

[33] Vashishtha and the Four Queens. (Tale No 13)

बेचारा राजा तो अब पहले से भी ज़्यादा परेशान रहने लगा उदास रहने लगा। जबसे वह उठता था और जब तक वह सोता था वह इसी समस्या के बारे में सोचता रहता था कि किस तरह से वह उनमें आपस में मेल करवा सकता था।

एक दिन ऋषि वशिष्ठ जी राजा के पास आये तो राजा ने झुक कर उनको प्रणाम किया और बैठने के लिये सिंहासन दिया। वशिष्ठ जी ने राजा के चेहरे की तरफ देखा तो उन्हें लगा कि राजा बहुत उदास है। सो उसने राजा से पूछा कि "राजन आप इतने उदास क्यों हैं।" राजा ने उनको बताया कि उसको क्या परेशानी थी।

ऋषि उठे तो राजा भी उनके पीछे पीछे उठ लिये और दोनों चारों रानियों के महल की तरफ चल दिये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने राजा की चारों रानियों को बुलाया। ऋषि ने उनसे पूछा कि क्या झगड़ा था।

पहली रानी बोली — "दूध का काम मैं ही क्यों सँभालूँ।"

दूसरी रानी ने पूछा — "खाने का काम मैं ही क्यों देखूँ।"

तीसरी बोली — "मैं ही बच्चों को क्यों देखूँ।"

चौथी ने शिकायत की — "राजा के कपड़े मैं ही क्यों देखूँ।"

राजा बोला — "तुम लोग यह सब काम इसलिये करोगी क्योंकि ये काम मैंने तुम लोगों से करने के लिये कहे हैं।"

पर रानियों ने उसकी कोई बात सुनी बल्कि इतनी ज़ोर से चिल्लाने लगीं कि दोनों के कान ही फट गये।

कुछ देर तक तो वशिष्ठ जी सोचते रहे फिर उन्होंने पहली रानी के तरफ देखा और बोले — "तुमको दूध का काम सौंपा गया है न।"

रानी ने हाँ में सिर हिलाया तो वशिष्ठ जी उससे बोले — "तब तुम मेरी बात सुनो। क्योंकि पहले एक जन्म में तुम एक गाय थीं और जंगल में जहाँ तुम घास चरा करती थीं वहाँ शिव जी का एक मन्दिर था।

तुम रोज दोपहर को वहाँ आ कर खड़ी हो जाया करती थीं और अपने दूध से शिव लिंग को नहला देती थीं। इस तरीके से तुम शिव जी की पूजा करती थीं। इस पुन्य से तुम अटपट राज्य के राजा की रानी बनीं।

पर अपनी पुरानी ज़िन्दगी में तुमको उसका पूरा फल प्राप्त नहीं हुआ इसलिये भगवान शिव ने राजा को आदेश दिया कि वह तुम्हें दूध की देखभाल करने वाला बना दें। उन्होंने भगवान की शिव की आज्ञा का पालन किया और तम्हें दूध की देखभाल करने वाला बना दिया।

अब तुम्हें राजा की आज्ञा का पालन करना चाहिये और राजा का उसी तरह से आदर करना चाहिये जैसे तुम भगवान शिव का करती हो। इस तरह से तुम अपने काम का पूरा पूरा पुन्य प्राप्त कर लोगी।"

रानी की यह बात समझ में आ गयी और उसने वशिष्ठ जी के पैरों में सिर झुका कर प्रणाम किया और लड़ाई झगड़े का इरादा छोड़ कर अपना काम करने चली गयी।

उसके जाने के बाद वशिष्ठ जी ने दूसरी रानी से कहा — "तुम्हारा लड़ाई झगड़ा क्या है।"

दूसरी रानी बोली —"मुझे ही हर समय खाने का काम क्यों देखना चाहिये।"

ऋषि ने कुछ पल सोचा और बोले — "रानी। अपनी एक पुरानी ज़िन्दगी में तुम एक ब्राह्मण की पत्नी थीं और घर घर भीख माँगने जाया करती थीं पर हर सोमवार को तुम व्रत रखती थीं। दिन में जो कुछ तुम इकट्ठा करती थीं वही तुम शाम को पका कर भगवान को अर्पण कर के खा लेती थीं।

भगवान शंकर तुम्हारी इस भक्ति से बहुत प्रसन्न थे इसलिये उन्होंने तुम्हें इस जन्म में अटपट की रानी बनाया और क्योंकि तुम भगवान शंकर को पका हुआ खाना खिलाया करती थीं इसलिये उन्होंने राजा को यह आदेश दिया कि वह तुमको उसके रसोईघर की देखभाल करने वाला बना दे। इस तरह से तुम कैलाश[34] आसानी से जा सकोगी।"

[34] Kailash is a mountain in Tibet where God Shiva (Shankar) lives.

इसके बाद उन्होंने दूसरी रानी को आशीर्वाद दिया। उसने भी उनको सिर झुका कर प्रणाम किया और फिर उठ कर राजा की रसोई बनाने चली गयी।

फिर वशिष्ठ जी ने तीसरी रानी से पूछा — "तुम्हारा क्या झगड़ा है।"

तीसरी रानी बोली — "मैं ही हर समय बच्चों की देखभाल क्यों करूँ।"

वशिष्ठ जी ने कुछ पल ध्यान लगा कर कहा — "अपनी एक पुरानी ज़िन्दगी में तुम एक जंगली जाति की दासी के रूप में थीं। हर सोमवार को तुम खुद तो व्रत रखती ही थीं साथ में तुम उस दिन सबसे अच्छे फल भगवान शंकर को भेंट कर देती थीं।

इसके बदले में भगवान शंकर ने तुमको अटपट की रानी बनाया और भरोसा कर के तुम्हें उसके बच्चों की देखभाल करने वाला बनाया। अन्त में वह तुमको अपने साथ रखने के लिये कैलाश पर्वत पर रहने के लिये ले जायेंगे।"

यह कह कर ऋषि ने तीसरी रानी को भी आशीर्वाद दिया। तीसरी रानी ने भी खुश हो कर वहाँ से उनको सिर झुका कर चली गयी।

तब ऋषि ने चौथी और सबसे छोटी रानी से पूछा — "तुम किस बात पर झगड़ा कर रही हो।"

सबसे छोटी रानी बोली — "मैं ही हमेशा राजा के कपड़े देखने भालने वाली क्यों बनी रहूँ?"

वशिष्ठ जी कुछ सोच कर बोले — "रानी। तुम अपने किसी पुराने जन्म में काइट चिड़िया थीं जो आसमान से भी ऊँची उड़ती थीं।

जहाँ तुम इतनी ऊँची उड़ती थीं उसके नीचे शिव जी का मन्दिर था। तुम रोज दोपहर के समय अपने बड़े बड़े पंख फैला कर उन पर छाया करती थीं। यह देख कर भगवान शिव तुमसे बहुत प्रसन्न थे सो उसके बदले में उन्होंने तुमको इस जन्म में अटपट की रानी बना दिया।

और तुम्हारे पंख फैलाने के बदले में तुमको राजा के कपड़ों की देखभाल करने वाला बना दिया। कि जैसे तुमने उस जन्म में शिव जी के ऊपर अपने पंख फैला कर उनको छाया दी वैसे ही उन्होंने तुम्हें इस जन्म में तुम्हारे बिस्तर के ऊपर एक छत दी।

और जैसे तुमने उस जन्म में शिव जी की सेवा की वैसे ही इस जन्म में तुम अपने राजा की सेवा करो। इस ज़िन्दगी के बाद तुम्हारे पुन्य पूरे हो जायेंगे तो वे तुम्हें अपने साथ कैलाश पर्वत ले जायेंगे।"

कह कर वशिष्ठ जी ने चौथी रानी को आशीर्वाद दिया और रानी उनके पैरों में सिर झुका कर प्रणाम कर के अपने पति के कपड़े

सँभालने चली गयी। अब चारों रानियाँ पहले से कहीं ज़्यादा सन्तुष्ट थीं और राजा के साथ खुश खुश रहीं।

जो जो छोटी छोटी लड़कियाँ इस कहानी को सुनें उनको भी इस कहानी की रानियों की तरह से सन्तुष्ट रहना चाहिये।

14 दिये और राजा की बहू[35]

एक बार की बात है कि एक शहर था जिसका नाम था अटपट। उस शहर में एक राजा रहता था। उसके साथ उसकी छोटी सी बहू रहती थी। राजा की बहू बहुत लालची किस्म की लड़की थी।

एक दिन जब घर में सबके लिये कोई बहुत अच्छी मिठाई बनी तो वह चुपचाप वहाँ गयी और सारी मिठाई उसने खुद ही खा ली। पर खाने के तुरन्त बाद ही वह डर भी गयी क्योंकि उसको मालूम था कि अगर यह बात राजा को पता चली जो कि पता चलेगी ही तो राजा उसको बहुत मारेगा।

सो जब परिवार के लोगों ने मिठाई के बारे में पूछना शुरू किया कि मिठाई कहाँ थी तो उसने कहा कि उसे तो चूहे खा गये। सबने चूहों को गालियाँ देना शुरू कर दिया कि वे छोटे छोटे जानवर कितने नीच थे।

तो उनको ख्याल आया कि वहाँ अगर कोई बिल्ली होती तो कितना अच्छा होता। वह उनको पकड़ लेती और उनको खा जाती। पर जब चूहों ने यह सुना तो वे छोटी सी बहू से बहुत गुस्सा हुए कि उसने उनको झूठ में ही फँसाया।

उन्होंने अपनी एक सभा की और आपस में यह तय किया कि वे उससे इस बात का बदला जरूर लेंगे।

---

[35] Lamps and the King's Daughter-in-law. (Tale No 14)

कुछ दिन बाद राजा ने अपने घर में अपने एक मेहमान को बुलाया। उसी रात को चूहे राजा की बहू के कमरे में गये और उसका एक ब्लाउज़ वहाँ से ले आये और उसको मेहमान के बिस्तर पर रख दिया।

अब अगले दिन मेहमान के बिस्तर में बहू का ब्लाउज़ पाया गया तो इससे तो बहू की बहुत बदनामी हुई। उसके ससुर और देवरों ने उसको बहुत ज़ोर से डाँटा। और डाँट फटकार कर उसे घर के बाहर निकाल दिया।

अब ऐसा हुआ कि जिस दिन से वह इस घर में आयी थी तबसे राजा के दियों की देखभाल वही करती थी। हर सुबह वह उनको घिस घिस कर साफ करती उनकी बत्तियाँ ठीक करती। वह उन्हें अपने हाथ से जलाती और दीवाली के दिन उनकी ठीक से पूजा करती और उनको चढ़ावा चढ़ाती।

पर जबसे छोटी बहू को महल से बाहर निकाल दिया गया था तबसे अब कोई उन दियों की देखभाल नहीं करता था।

अगली दीवाली के दिन राजा शिकार से लौट रहा था तो वह एक पेड़ के नीचे रुक गया। अचानक उसने क्या देखा कि अटपट शहर के सारे दिये उस पेड़ की शाखाओं पर आ कर बैठ गये हैं।

एक के बाद एक दिया अपने घर की कहानी सुना रहा था कि एक दिन उसके घर में शाम को एक दावत थी जिसमें क्या क्या बना

था कौन कौन आया था किस तरह से उन सबकी देखभाल की जा रही थी और उन्हें क्या क्या इज़्ज़त मिली।

जब सब दियों ने अपनी अपनी कहानी कह ली तो राजा के महल के एक बड़े दिये ने अपनी कहानी कहनी शुरू की — "मेरे दिये भाइयो। मुझे नहीं मालूम कि मैं अपनी कहानी कैसे शुरू करूँ। तुममें से कोई भी दिया इतना अभागा नहीं होगा जितना कि मैं हूँ।

पहले मैं अटपट के राजा के महल का कभी बहुत ही खुशकिस्मत दिया हुआ करता था। एक दिन राजा की बहू ने राजा के महल में बनी सारी मिठाई खा ली और कह दिया कि उसे चूहे खा गये। चूहे इस झूठे इलजाम से बहुत नाराज हुए और उन्होंने उससे बदला लेने की सोची।

यह उन्होंने ऐसे किया कि एक बार राजा के यहाँ कोई मेहमान आया तो उन्होंने बहू का ब्लाउज़ उसके पलंग पर डाल दिया और इस तरह उसको बदनाम करने की कोशिश की। राजा ने उसको महल से निकाल दिया।

जैसे ही उसने राजा का महल छोड़ा तो मेरे ऊपर तो मुसीबत ही आ गयी क्योंकि वही मुझे रोज रोज साफ करती थी। हर साल दीवाली पर मेरी पूजा करती थी और मुझे चढ़ावा चढ़ाती थी। अब वह जहाँ भी है मैं उसके भले की इच्छा करता हूँ और उसे अपना आशीर्वाद देता हूँ।"

दियों के बीच की बातें राजा बड़े ध्यान से सुन रहा था। इस तरह से उसने यह जान लिया कि उसकी बहू बिल्कुल बेकुसूर थी। वह घर गया और जा कर पता किया कि उसके ब्लाउज़ के अलावा उसके खिलाफ क्या और कोई सबूत भी था।

जब उसे पता चला कि उसके खिलाफ कोई और सबूत नहीं था और किसी ने भी उसके और मेहमान के बीच कुछ और होते नहीं देखा तो उसने अपना एक दूत भेज कर तुरन्त ही उसको महल वापस बुला लिया।

उसने उसको उस पुरानी घटना के लिये माफ कर दिया और अपने घर की सारी जिम्मेदारी उसे दे दी। राजा ने भी अयोध्या के राजा रामचन्द्र की तरह बहुत सालों तक राज्य किया।

अगर कोई हमारे खिलाफ कोई झूठा इलजाम लगाता है तो हम दियों से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी उसी तरह से रक्षा करें जैसे उन्होंने राजा की बहू की की।

15 पार्वती जी और पुजारी[36]

एक बार की बात है कि एक अटपट नाम का एक शहर था। उसमें शिव जी का एक मन्दिर था। एक दिन जब भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती जी के साथ घूम रहे थे तो इत्तफाक से इस मन्दिर के पास आ निकले।

वे वहाँ पास में ही बैठ गये और चौसर खेलने लगे। कुछ देर तक तो वे दोनों खेलते रहे पर फिर कुछ समय बाद पार्वती जी को एक पुजारी वहाँ दिखायी दे गया। उन्होंने उससे पूछा "बताओ हममें से कौन जीतेगा शिव जी या मैं।"

पुजारी बिना सोचे समझे बोला — "शिव जी।"

पार्वती जी यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गयीं। उन्होंने उसको शाप दिया और वह कोढ़ी हो गया। और उसकी वजह से उसको जो दर्द हुआ वह तो उसको सहन ही नहीं हो पा रहा था।

एक दिन स्वर्ग से वहाँ अप्सराओं[37] का एक झुंड आया तो उन्होंने देखा कि उस मन्दिर के पुजारी को तो कोढ़ है। उन्होंने उससे इस बात की वजह पूछी तो उसने उनको बताया कि किस तरह से पार्वती जी के शाप से वह कोढ़ी हो गया था।

---

[36] Parwati and the Priest. (Tale No 15)

[37] Apsara is the heavenly woman who is very beautiful

उन्होंने उससे कहा कि उसको डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है अगर वह उनका कहा माने तो। उनका कहा मानने से उसका रोग हमेशा के लिये चला जायेगा।

तब उन्होंने उससे कहा — "अगले सोमवार को दिन भर तुम व्रत रखना। शाम को नहा धो कर शिव जी की पूजा करना। एक पाव गेहूँ का आटा लेना उसमें घी और शहद मिला लेना और उसको अपने शाम के खाने में खा लेना। तुम कुछ भी करना पर उस दिन तुम नमक नहीं खाना।

ऐसा तुम **16** सोमवार तक करना। सत्रहवें सोमवार को तुम ढाई सेर आटा लेना और उसमें शहद और घी मिला कर शिव जी पर चढ़ाना। फिर उसके तीन हिस्से करना। उसका एक हिस्सा तो तुम भगवान के पास छोड़ देना।

दूसरा हिस्सा तुम ब्राह्मणों को दे देना और तीसरा हिस्सा तुम अपने और अपने परिवार के लिये ले जाना।"

इतना कह कर सब अप्सराऐं गायब हो गयीं।

कुछ दिनों बाद शिव जी और पार्वती जी उस मन्दिर में फिर आये तो पार्वती जी तो यह देख कर दंग रह गयीं कि उस मन्दिर के पुजारी का कोढ़ तो बिल्कुल ठीक हो चुका है। तो उन्होंने उस पुजारी से पूछा कि वह ठीक कैसे हुआ।

उसने पार्वती जी को सब सच सच बता दिया कि उसने अपनी बीमारी से छुटकारा कैसे पाया।

यह सुन कर पार्वती जी को बहुत आश्चर्य हुआ तो उन्होंने सोचा कि ऐसा करने से शायद वह अपने बेटे कार्त्तिकेय को वापस पा लें। कार्त्तिकेय उनसे लड़ कर गुस्सा हो कर दूर चले गये थे।

उन्होंने ऐसा ही किया तो **17**वें सोमवार को कार्त्तिकेय अचानक ही माँ पार्वती के सामने प्रगट हो गये और दोनों में सुलह हो गयी।

कुछ दिन बाद कार्त्तिकेय जी ने माँ पार्वती से पूछा कि उन्होंने उनको वापस लाने के लिये क्या किया तो पार्वती जी ने उनको भी बता दिया कि उन्होंने उनको पाने के लिये क्या किया।

कार्त्तिकेय जी का एक ब्राह्मण दोस्त था जो किसी दूर देश गया हुआ था। कुछ दिन बाद ही अचानक उनको उनका वह दोस्त मिल गया तो कार्त्तिकेय जी ने उसको भी यह बता दिया कि कैसे तो एक पुजारी का कोढ़ ठीक हो गया था और कैसे उनमें और उनकी माँ में सुलह हो गयी थी।

तो उस ब्राह्मण ने भी **17** सोमवारों की वह रस्म की और उसके बाद वह फिर दूर देश चला गया। जब वह इस तरह से वहाँ घूम रहा था तो एक बार वह एक शहर में आया।

वहाँ आ कर उसने देखा कि उस शहर के राजा की बेटी की शादी होने वाली है और इसके लिये सारे शहर को सजाया जा रहा है। दूर दूर देशों से बहुत सारे राजकुमार उससे शादी की इच्छा से आये हुए हैं। राजा ने इस काम के लिये एक बहुत ही बड़ा तम्बू गड़वा रखा है।

उसे यह भी पता चला कि राजा खुद अपनी बेटी के लिये पति नहीं चुनेगा। उसने एक हथिनी की सूँड़ में माला दे रखी थी। वह अपनी बेटी की शादी उसी लड़के से करेगा जिसके गले में हथिनी माला डालेगी।

हथिनी अपनी सूँड़ में माला ले कर चली और चलते चलते वहाँ तक आ गयी जहाँ ब्राह्मण खड़ा हुआ था क्योंकि यह ब्राह्मण भी दूसरे लोगों के साथ साथ राजकुमारी का स्वयंवर देखने के लिये आया हुआ था।

तो पहले तो हाथी ने राजा की सभा का एक चक्कर काटा और फिर अपनी माला ब्राह्मण के गले में डाल दी। राजा ने अपनी बेटी का ब्याह उससे कर दिया और ब्राह्मण को वहाँ से बाहर निकलने का आदेश दे दिया।

कुछ साल बाद जब राजकुमारी बड़ी हो गयी तो उन दोनों ने एक साथ रहना शुरू कर दिया। तब राजकुमारी ने ब्राह्मण से पूछा कि उसने ऐसा कौन सा पुन्य का काम किया था जो उसे पाया। ब्राह्मण ने उसे बता दिया कि उसने **16** सोमवार के व्रत रखे थे इसी लिये उसे पाया सो राजकुमारी ने भी उनको रखना शुरू कर दिये।

राजकुमारी के व्रत रखने के नौ महीने बाद राजकुमारी ने एक बहुत सुन्दर बेटे को जन्म दिया। जब वह बड़ा हो गया तो राजकुमारी ने उसे भी **16** सोमवार रखने की तरकीब बता दी और

कहा कि इसी तरकीब से उसने अपने बेटे को प्राप्त किया था। सो उसने भी **16** सोमवार के व्रत शुरू कर दिये।

सोलहवें सोमवार को वह विदेश की यात्रा पर निकला। चलते चलते वह एक देश में आया जहाँ के राजा के एक ही बेटी थी और कोई बेटा नहीं था।

बहुत दिनों से राजा अपनी बेटी के लिये एक सुन्दर गुणवान दुलहे की खोज में था। उसने सोच रखा था कि जैसे ही उसको ऐसा कोई लड़का मिल जायेगा तो वह उसके हाथों में अपनी बेटी का हाथ दे कर चैन की साँस लेगा।

ब्राह्मण के बेटे ने जब शहर में कदम रखा तो राजा ने उसे देखा तो बहुत खुश हो गया। बस तुरन्त ही उसने अपनी बेटी की शादी कर दी और उसे अपनी राजगद्दी पर बिठा दिया।

अगला सोमवार **17**वाँ सोमवार था क्योंकि ब्राह्मण के बेटे ने तो **16** सोमवार तभी से शुरू कर दिये थे जबसे अप्सराओं ने उसके पिता को बताया था।

उस दिन वह नहाया धोया मन्दिर गया और वहाँ से अपने घर अपनी पत्नी को एक सन्देश भेजा कि वह उसको शहद और घी मिला हुआ पाँच सेर आटा भिजवा दे।

पर उसकी पत्नी बड़ी घमंडी थी। उसको लगा कि अगर उसने शहद और घी मिला हुआ पाँच सेर आटा नौकरों के हाथ अपने पति

को भेजा तो लोग उस पर हँसेंगे। सो उसने एक तश्तरी में **500** रुपये रख कर भेज दिये।

पर क्योंकि राजा को शहद और घी मिला आटा नहीं भेजा गया था इसलिये वह अपनी पूजा की रस्में पूरी नहीं सका। उसकी पूजा अधूरी रह गयी। इस बात से भगवान शिव खुश तो खैर हुए ही नहीं बल्कि और उनको गुस्सा आ गया।

भगवान शिव ने राजा से कहा कि अगर उन्होंने अपनी इस पत्नी को अपनी रानी बना कर रखा तो उनका राज्य चला जायेगा और वह एक भिखारी की तरह मरेंगे।

अगले दिन राजा ने अपने मन्त्री को बुला कर उसे सब हाल बताया और उससे सलाह माँगी तो मन्त्री ने कहा — "राजा साहब। यह राज्य तो रानी जी के पिता का है। अगर आप उनको बाहर निकाल देंगे तो आपकी जनता आपको नफरत की निगाह से देखने लगेगी।"

राजा बोला — "पर मन्त्री जी। भगवान की आज्ञा का पालन न करना भी तो खराब बात है।"

आखिर मन्त्री को राजा की बात से सहमत होना पड़ा और रानी को राज्य से बाहर निकाल देने का हुक्म दे दिया गया। रानी अब गली गली गरीब भिखारी की तरह से भटकने लगी।

रानी एक दूसरे शहर में भटकते भटकते एक बुढ़िया के घर पहुँच गयी। वह वहीं जा कर रुक गयी। वहाँ उसे खाना पानी

मिला। एक दिन बुढ़िया ने उसे फलों की चाट बेचने के लिये भेजा।

जैसे ही वह बाजार पहुँची कि एक तूफान सा आया और उसके साथ साथ उसकी सारी चाट उड़ गयी। जब वह घर वापस लौट कर आयी तो उसने बुढ़िया को बताया कि उसके साथ बाजार में क्या हुआ था। बुढ़िया ने तुरन्त ही उसको घर से बाहर निकाल दिया।

रानी चलते चलते एक नदी के पास आयी जिसमें बहुत पानी था पर जैसे ही रानी की नजरें उस नदी पर पड़ीं तो उसका तो पानी ही सूख गया और नदी की तली दिखायी देने लगी।

वह वहाँ से फिर आगे बढ़ी तो एक झील के पास आयी। जब झील पर उसकी नजर पड़ीं तो वह उसको बहुत सारे कीड़े मकोड़े भरी दिखायी दी। उसके पानी में से बदबू आ रही थी।

जब जानवर चराने वाले अपने जानवरों को पानी पिलाने के लिये वहाँ आये तो जानवरों ने वह बदबूदार पानी नहीं पिया। वे बेचारे प्यासे ही घर चले गये।

इत्तफाक से एक गोसाँई जी[38] घूमते घामते उधर आ निकले तो वहाँ उन्होंने रानी को खड़े देखा तो उससे पूछा कि वह वहाँ इस तरह क्यों खड़ी है। इस पर रानी ने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी।

---

[38] Gosain Ji is a holy man

वह गोसॉई उसको अपने घर ले गया और उसे अपनी बेटी की तरह रखने लगा। रानी भी उसकी बहुत वफादारी से सेवा करने लगी। पर वह जिधर भी अपनी निगाह डालती उधर से वह चीज़ या तो गायब हो जाती या फिर कीड़ें से भरी हुई हो जाती।

गोसॉई जी ने ध्यान लगा कर देखा तो उनको पता चला कि यह सब शिव जी की पूजा को पूरा न करने की वजह से हुआ है जिसे अप्सराओं ने ब्राह्मण को बताया था।

सो उन्होंने शिव जी की पूजा की प्रार्थना की क्योंकि जब तक शिव जी प्रसन्न नहीं होंगे तब तक यह सब खत्म नहीं होगा। शिव जी की पूजा प्रार्थना के बाद भगवान शिव उनसे प्रसन्न हुए।

जब उन्होंने रानी की तरफ से शिव जी की प्रार्थना की तो शिव जी ने कहा कि रानी उस पूजा को पूरा करे जो उसका पति कर रहा था और उसने वह पूजा अधूरी छोड़ दी थी। रानी ने वैसा ही किया जैसा कि शिव जी ने उससे करने के लिये कहा था। इससे शिव जी उससे प्रसन्न हो गये।

अचानक ही राजा के दिल में यह इच्छा जागी कि वह अपनी रानी से मिले। सो उसने अपने बहुत सारे आदमी इधर उधर उसको ढूँढने के लिये भेजे। आखिर एक आदमी ने रानी को एक साधु की कुटिया में पा लिया।

उसने वापस जा कर राजा को बताया तो राजा अपने मन्त्री के साथ उन साधु के पास आया और उनके पैरों में पड़ गया। उसने उनको बहुत सारी भेंटें दीं। साधु यह देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने राजा से कहा कि उसने रानी की उसी तरह से देखभाल की है जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो। वह यहाँ ऐसे ही रही है जैसे कि वह अपने पिता के घर में रह रही हो। अब तुम इसको वापस अपने घर ले जाओ और फिर उससे दोबारा शादी कर लो।"

राजा ने हामी भर दी और रानी को अपने साथ ले कर घर आ गया। उनकी वापसी को बड़े धूमधाम से मनाया गया और जब तक राजा ज़िन्दा रहा तब तक वह बहुत अच्छे से राज्य करता रहा।

16 ऋषि और ब्राह्मण[39]

एक बार की बात है कि अटपट नाम के शहर में एक ब्राह्मण रहता था। बहुत सालों तक वह बहुत सुख से रहा और गेहूँ और चावल की खेती करता रहा।

एक दिन उसकी पत्नी ने कह दिया कि उसके ऊपर कोई रोकटोक न लगायी जाये। इसका फल यह हुआ कि ब्राह्मण का सारा घर उलट पुलट हो गया और उस पर काले बादल मँडराने लगे।

उसके पति ने उसे इस बात पर घर से बाहर निकाल दिया होता पर उसका दिल ऐसा नहीं कहता था। इस वजह से अपनी पत्नी के पापों का फल उसको भी भुगतना पड़ा। समय पूरा होने पर दोनों मर गये।

अगले जन्म में पति ब्राह्मण तो बैल बन कर पैदा हुआ और उसकी पत्नी कुतिया बन कर पैदा हुई। भगवान ने उन दोनों को उनके अकेले बेटे के घर में ला कर रख दिया।

उनका बेटा एक बहुत ही अच्छे स्वभाव का आदमी था और वह अपनी सब धामिक रस्में बड़ी भक्तिपूर्वक पूरी करता था। वह देवताओं की पूजा करता था अपने मरे हुए माता पिता का तर्पण[40]

[39] Rishi and the Brahman. (Tale No 16)

[40] Memorial honors to his parents

करता था और जो भी ब्राह्मण उधर से गुजरता उसे अपने घर बुलाता।

एक साल उसने अपनी पत्नी से अपने पिता की याद में खीर बनाने के लिये कहा और बहुत सारे ब्राह्मणों को अपने घर वह खीर खाने के लिये बुलाया। उसकी पत्नी भी बहुत अच्छी थी और हमेशा ही अपने पति का कहना मानती थी सो उसने बहुत सारी खीर बनायी सब्जियाँ बनायीं और फल काट कर रखे।

लेकिन जैसे ही वह यह सब कर के अपने पति और उसके ब्राह्मणों को बुलाने वाली थी और वे सब खाना शुरू करने ही वाले थे कि तभी एक साँप चुपचाप से गेहूँ रखने वाले बर्तन में घुस गया। उस बर्तन का ढक्कन ठीक से बन्द नहीं था।

अन्दर पहुँचते ही उसने अपना जहर गेहूँ के ऊपर छोड़ दिया जिससे दूध की खीर बनी थी। कुतिया ने यह देख लिया। उसने सोचा कि अगर इस अनाज की बनी खीर ब्राह्मणों ने खा ली तो ब्राह्मण इसको खाने से मर जायेंगे और ब्राह्मण हत्या का पाप इस ब्राह्मण के बेटे को लगेगा।

सो वह कुतिया गयी और अपने दायाँ पैर खीर के बर्तन में डाल दिया। यह देख कर बेटे की पत्नी को बहुत गुस्सा आया।

उसने एक जलता हुआ कोयला उठा कर कुतिया को मारा जो उसकी पीठ के बीच में लगा जिससे वह पीठ के बल गिर गयी और उसकी पीठ में एक बड़ा सा छेद हो गया।

उसके बाद बेटे की पत्नी ने एक नये दूध की खीर बनायी और उसके बाद ही वह ब्राह्मणों को खाना खिला सकी। इसके बाद भी वह कुतिया से इतनी गुस्सा थी कि उस दिन उसने उसको खाना भी नहीं दिया।

उस रात वह उस बैल के पास गयी जो पहले जन्म में उसका पति था और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी तो बैल ने उससे पूछा कि क्या बात थी वह इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों चिल्ला रही थी।

कुतिया बोली कि कैसे उसने एक साँप को अनाज में अपना जहर मिलाते देखा और फिर कैसे उसने खीर में अपना पंजा डाल कर ब्राह्मणों की जान बचायी और कैसे अपने बेटे को ब्राह्मण हत्या के पाप से बचाया। फिर कैसे उनकी बहू ने उसको एक जलते हुए अंगारे से मारा और फिर खाना भी नहीं दिया।"

बैल बोला — "तुमको यह सब इसलिये सहना पड़ रहा है क्योंकि तुम पिछले जन्म में अपने ही घर में मनमानी करती रहीं। और क्योंकि मैंने तुम्हें घर से बाहर नहीं निकाला और तुम्हें छूता भी रहा इसलिये मैं भी उस पाप का भागी बन कर सहन कर रहा हूँ। मैं बैल बन कर पैदा हुआ।

आज ही मेरे बेटे ने मुझे हल में जोता है और मेरा मुँह बाँध कर मुझे पीटा है। मुझे भी तुम्हारी तरह सारा दिन खाना नहीं मिला। इस तरह मेरे बेटे ने जो मेरी याद में ये सब रस्में की हैं वे सब बेकार गयीं।"

इत्तफाक से उनका बेटा जहॉ वे बॅधे थे वहॉ से गुजर रहा था। उसने उनकी ये बातें सुनी। वह तुरन्त गया और बैल के लिये कुछ घास ले कर आया और कुतिया के लिये कुछ खाना ले कर आया। फिर वह उनके लिये पानी भी ले कर आया। उसके बाद वह बड़े दुखी मन से सोने चला गया।

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और जंगल की तरफ चल दिया। वह एक ऋषि की झोंपड़ी के पास आया और उन्हें लेट कर प्रणाम किया। ऋषि ने उससे पूछा — "बेटा क्या बात है।"

ब्राह्मण का बेटा बोला — "ऋषि महाराज। मेरे पिता एक बैल की शक्ल में पैदा हो गये हैं और मेरी मॉ एक कुतिया के रूप में। आप मुझे बतायें कि मैं उन दोनों को इन योनियों से कैसे छुड़ाऊॅ।"

ऋषि महाराज बोले — "उनको इन योनियों से छुड़ाने का केवल एक ही उपाय है। तुमको सप्तर्षि मंडल[41] के सातों ऋषियों की पूजा करनी चाहिये।"

कह कर उन्होंने ब्राह्मण को पूजा की रस्में भी बता दीं और यह भी बता दिया कि किस तरह से उसको भाद्रपद या सितम्बर के महीने में सात साल तक उनकी पूजा करनी चाहिये।

ब्राह्मण के बेटे ने ऐसा ही किया तो सातवें साल के आखीर में बैल तो एक सुन्दर नौजवान में बदल गया और कुतिया एक सुन्दर नौजवान स्त्री में बदल गयी।

---

[41] The Seven Stars in "Great Bear" – Mareechi, Atri, Angira, Pulah, Kratu, Pulastya and Vashishth

वे दोनों एक स्वर्गीय रथ पर चढ़ कर हमेशा के लिये सप्तर्षि मंडल में रहने चले गये।
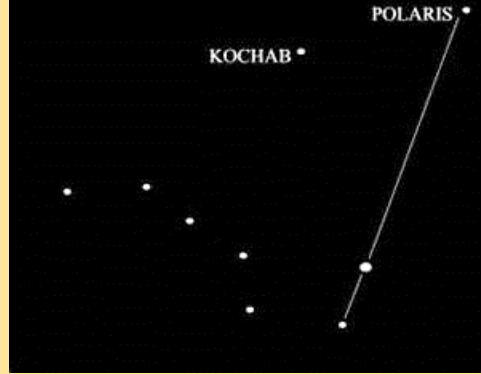
17 राजा और पानी की देवियाँ[42]

एक समय की बात है कि एक अटपट नाम का शहर था। वहाँ एक राजा राज्य करता था। एक बार उसने एक नया गाँव बसाया और उसके पास में पानी का एक तालाब बनवाया। उसने कितनी भी कोशिश क्यों नहीं कर ली पर वह उसमें पानी नहीं ला सका।

सो उसने पानी की देवियों से प्रार्थना की कि वह उसकी उस गाँव में पानी लाने में सहायता करें। पानी की देवियाँ राजा की प्रार्थना सुन कर बहुत खुश हुईं।

उन्होंने कहा — "ओ राजा। तुम अपनी बहू के सबसे बड़े बेटे की भेंट हमें दे दो तो तुम्हारा तालाब पानी से भर जायेगा।"

राजा ने यह सुना और परेशान हो कर अपने घर चला गया। हालाँकि वह अपने सबसे बड़े पोते को बहुत चाहता था फिर भी वह उसकी बलि देने को तैयार था क्योंकि इस तरह से एक जान दे कर वह सैकड़ों जानें बचा सकता था।

साथ में उसको यह भी पता था कि उसकी बहू इस बात के लिये कभी राजी नहीं होगी।

आखिर उसके दिमाग में एक चाल आयी और वह अपनी बहू के पास गया और बोला — "बहूरानी तुम बहुत दिनों से अपने मायके नहीं गयी हो। अच्छा हो तुम अपने माता पिता से मिल

[42] The King and the Water Goddesses. (Tale No 17)

आओ। तुम अपने बड़े बेटे को यहीं छोड़ कर जा सकती हो। यहॉ उसकी देखभाल मैं करूॅगा।"

बहू मान गयी और अपने बेटे को राजा के पास छोड़ कर अपने माता पिता के घर चली गयी।

राजा ने एक शुभ दिन का इन्तजार किया। फिर उस दिन अपने पोते को नहलाया धुलाया। उसके लिये उसने एक दावत भी दी। फिर वह उसको तालाब में ले गया और उसकी तली पर लिटा दिया और उससे कहा कि वह हिले भी नहीं।

कि तभी तालाब में गड़ गड़ करता पानी भर गया और वह तालाब ऊपर तक पानी से लबालब भर गया।

कुछ समय बाद बहू घर वापस आयी तो साथ में उसका भाई भी आया। आते ही उन्होंने पूछा कि उनका बेटा कहॉ है पर उनको उसके बारे में कुछ भी पता नहीं चला।

जब भी वे राजा से पूछते तो राजा हमेशा ही यह बताता कि तालाब में पानी कैसे आया। और वह तालाब कितना सुन्दर था। और उसने सारे गॉव वालों को कितना खुश कर रखा था।

आखिर बहू ने अन्दाजा लगा लिया कि उसके पीछे क्या हुआ होगा। जब सावन के महीने की शुद्ध सातें आयी तो वह और उसका भाई तालाब के किनारे गये और पानी की देवियों की पूजा करने लगे।

उसने खीरे का एक पत्ता लिया उस पर उसने कुछ दही और चावल रखे और एक सुपारी के बराबर घी डाला और अपने भाई से उनकी प्रार्थना करने के लिये कहा।

"ओ देवी, सबकी माँ। अगर हमारे परिवार का कोई आदमी इस तालाब में डूबा हो तो आप उसे हमें वापस दे दें।" भाई ने यह कह कर पानी की देवियों से प्रार्थना की और दही चावल तालाब में डाल दिये।

फिर वे घर जाने के लिये मुड़े तो जैसे ही वे मुड़े बहू को लगा कि किसी ने उसका पैर पकड़ कर खींचा। उसने नीचे देखा तो वह तो उसका खोया हुआ बेटा था। देखते ही उसने उसको अपनी पूरी ताकत लगा कर तालाब से बाहर खींच लिया।

जब राजा ने सुना कि उसकी बहू उसको पोते को साथ ले कर आ रही है तो उसको बहुत आश्चर्य हुआ और वह उसके पैरों पर पड़ गया। वह बोला — "ओ मेरी बहू। मैंने तो तुम्हारे बेटे को पानी की देवियों को दे दिया था फिर यह वापस कैसे आ गया।"

बहू बोली — "पिता जी मैंने पानी की देवियों की पूजा की भेंट चढ़ायी तो उन्होंने खुश हो कर मेरा बेटा वापस कर दिया। मैंने इसको किनारे पर से उठाया और यहाँ ले आयी।" राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ फिर वे सब खुशी खुशी रहे।

18 पवित्र डिब्बे का ढक्कन[43]

एक बार की बात है कि अटपट नाम के शहर में एक ब्राह्मण रहता था जिसके दो जुड़वाँ बेटे थे। जब वे काफी छोटे ही थे कि उनके माता पिता मर गये। उनके रिश्तेदारों ने उनकी जायदाद आदि छीन ली और उन्हें घर से बाहर निकाल दिया।

वे बेचारे घूमते रहे घूमते रहे। घूमते घूमते वे एक शहर में आ पहुँचे। उस समय दोपहर हो रही थी। दोनों बच्चे थके हुए थे और भूखे और प्यासे भी थे।

जब वे शहर में घुसे तो एक ब्राह्मण अपने घर में से कौओं को खाना खिलाने के लिये बाहर निकला तो उसने सामने ही दो बच्चे देखे तो उनको अन्दर बुला लिया। उसने उनको खाना खिलाया और फिर उनसे अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा।

उनकी कहानी सुन कर उसने तय किया कि वह उनको अपने पास रख लेगा। सो उसने उनको अपने घर में रख लिया। उनको वेद पढ़ना सिखाया।

ललिता पंचमी को ब्राह्मण ने कुछ संस्कार किये तो उसके शिष्यों ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा था। ब्राह्मण ने जवाब दिया कि ऐसा करने से धन सम्पत्ति बढ़ती थी मन की इच्छाऐं पूरी होती थीं और ज्ञान प्राप्त होता था।

---

[43] The Lid of the Sacred Casket. (Tale No 18)

बच्चों ने उससे विनती कि वह यह सब उनको भी सिखा दे। उसने सिखा दिया तो बच्चों ने भी उसे बहुत जल्दी ही सीख लिया।

कुछ समय बाद जब वे बड़े हो गये तो ब्राह्मण ने उनकी शादी कर दी। वे लोग अपने शहर वापस लौट गये। बहुत पैसा कमाया और खुशी खुशी रहे।

एक दो साल बाद दोनों भाई अलग अलग हो गये। पर बड़ा भाई बहुत होशियार था वह हर ललिता पंचमी को पार्वती जी की पूजा करना नहीं भूलता था। सो जो कुछ भी उसने कमाया था वह उसने खोया नहीं।

पर छोटा वाला थोड़ा बेवकूफ सा था और उसके बारे में सब कुछ भूल गया सो पार्वती जी उससे गुस्सा हो गयीं। उसका सारा पैसा खो गया। वह इतना गरीब हो गया कि उनको अपना घर भी छोड़ देना पड़ा। अब वह अपने बड़े भाई की दया पर जी रहा था।

एक दिन बड़े भाई की पत्नी छोटे भाई से कुछ इतना गुस्से से और बुरा भला बोली कि छोटे भाई को लगा कि वह अब वहाँ और नहीं रह सकता था।

और फिर उसे याद आयी कि उसने तो कई सालों से पार्वती जी की पूजा ही नहीं की है। उसने तय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाये वह अबकी बार देवी की कृपा दृष्टि पा कर ही रहेगा। सो वह अपनी पत्नी को ले कर अपने भाई के घर से चला गया और एक दूसरे दूर देश में चला गया।

वहाँ जा कर जब वह एक शहर में पहुँचा तो उसे एक चरवाहा मिल गया। उसने उससे पूछा कि उस शहर का नाम क्या था। चरवाहा बोला कि उस शहर का नाम "उपांग"[44] है। उसने फिर पूछा कि वहाँ का राजा कौन था तो चरवाहे ने बताया कि उसके राजा का नाम भी उपांग था।

भाई ने उससे पूछा क्या यहाँ कोई ऐसी जगह है जहाँ वह अपनी पत्नी के साथ ठहर सके तो चरवाहे ने उसे बताया कि वहाँ से कुछ दूर शहर में पार्वती जी का मन्दिर है और उसके पास ही एक धर्मशाला है जहाँ वह आराम से ठहर सकता था। फिर उसने उनको धर्मशाला का रास्ता भी बता दिया।

छोटा भाई अपनी पत्नी साथ वहाँ पहुँच गया। रात को सोने से पहले उसने पार्वती जी की प्रार्थना की और उनसे माफी माँगी कि उसने उनकी पूजा इतने सालों से नहीं की।

पार्वती जी को उसके बारे में जान कर बहुत दुख हुआ सो उन्होंने उसको उसी रात सपने में कहा कि वह राजा उपांग के महल जाये और उससे उसके पवित्र डिब्बे का ढक्कन माँगे जिसमें उसकी पूजा का सामान रखा रहता है। उसके बाद वह हमेशा ही उसकी पूजा करता रहे।

सुबह उठते ही वह राजा से उसके पूजा के डिब्बे का ढक्कन माँगने गया तो राजा ने पहले तो मना कर दिया पर जब उसने उसे

[44] Upang – name of the city

अपना सपना बताया तो उसने उसे तुरन्त ही उसको अपना ढक्कन दे दिया।

छोटा भाई उस ढक्कन को ले कर घर आ गया और उसकी रोज पूजा करने लगा जैसा कि पार्वती जी ने उसको सपने में बताया था। देवी ने उसके मन की इच्छा पूरी की। उसकी जायदाद पैसा सब कुछ उसको वापस मिल गया। एक साल बाद उसके एक बेटी ने जन्म लिया।

समय गुजरता गया और लड़की बड़ी होती गयी। एक दिन उसने वह ढक्कन उठाया और अपनी सहेलियों के साथ खेलने चली गयी। खेलते खेलते वह एक नदी के पास पहुँच गयी।

अचानक उसने देखा कि एक ब्राह्मण की लाश नदी में तैरती आ रही है सो उसने उस डिब्बे का ढक्कन उठाया और खेल खेल में उसके ऊपर नदी का पानी उठा उठा कर गिराने लगी।

अब उस ढक्कन की ताकत इतनी थी कि तुरन्त ही उस लाश में जान पड़ने लगी और कुछ ही पलों में वह ज़िन्दा हो गया। अब वह सूरज की तरह चमकता हुआ एक सुन्दर नौजवान बन चुका था।

उसको देखते ही उस लड़की को उससे प्यार हो गया और उसको लगा कि उस नौजवान से उसकी शादी हो जानी चाहिये। ब्राह्मण नौजवान बोला "पर यह मैं कैसे करूँगा।"

लड़की बोली — "शाम को तुम मेरे घर खाना खाने आना। आ कर अपने हाथ में "आपोशनि"[45] लेना पर उसे पीना नहीं। तब मेरे पिता तुमसे पूछेंगे — "भाट जी भाट जी आप अपना यह पानी क्यों नहीं पीते।"

तुम उसका जवाब देना "मैं आपके साथ खाना खाने के लिये तैयार तो हूँ अगर आप अपनी बेटी की शादी मेरे साथ कर दें नहीं तो फिर मैं उठ जाऊँगा और चला जाऊँगा।" इस बात पर वह मेरी शादी तुमसे करने पर राजी हो जायेंगे।"

सो ब्राह्मण शाम को उस लड़की के साथ उसके पिता के घर पहुँचा। सारा कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि लड़की ने कहा था। मेहमान को बिना खाना खाये जाने के पाप से बचने के लिये लड़की का पिता अपनी बेटी की शादी उस नौजवान से करने पर राजी हो गया।

शुभ दिन देख कर उन दोनों की शादी करा दी गयी। जब लड़की कुछ और बड़ी हो गयी तब उसको उसकी ससुराल भेज दिया गया। जब वह अपने घर गयी तो राजा उपांग का दिया हुआ पूजा के डिब्बे का ढक्कन भी वह अपने साथ ले गयी।

---

[45] Aaposhani is about one gulp of water taken in the hand and sipped by a Brahman before and after taking the meal. In Northern India this water is called "Aachman".

अब क्योंकि वह ढक्कन घर में से चला गया था लड़की का पिता अपनी जायदाद और सम्पत्ति सब खो बैठा। अब वह फिर से बहुत गरीब हो गया था।

उसकी पत्नी अपनी बेटी के घर उसको वापस लाने के लिये गयी पर उसकी बेटी ने उसे देने से मना कर दिया। माँ को अब अपने दामाद से दिनों दिन ज़्यादा नफरत होने लगी। पर दामाद के लिये उसने सोचा कि उसकी बेटी की शादी उससे नहीं हुई होती और वह उस ढक्कन को चुरा कर नहीं ले गयी होती।

एक दिन लड़की की माँ की मुलाकात अपने दामाद से सड़क पर हो गयी तो उसने उसके गाल पर इतने ज़ोर का चाँटा मारा कि वह नीचे गिर पड़ा और तुरन्त ही मर गया। लड़की की माँ ने उससे डिब्बे का ढक्कन छीन लिया जो इत्तफाक से उस समय उसके हाथ में था और घर भाग आयी।

लड़की का पति वहीं उसी जगह पड़ा रहा जब तक कि उसकी पत्नी उसको ढूँढती हुई वहाँ नहीं आ पहुँची। जब उसने अपने पति को पा लिया तो उसने देवी से प्रार्थना की और साथ में उन पुन्यों के सहारे जो उसने उस ढक्कन की पूजा करके कमाये थे अपने पति को ज़िन्दा कर लिया।

अब छोटा भाई और उसकी पत्नी गरीब और और गरीब होते जा रहे थे। आखिर वे अपने बड़े भाई के पास गये और उससे पूछा

कि वह छोटा भाई दिनों दिन गरीब क्यों होता जा रहा था जैसे वह इतनी जल्दी अमीर हुआ था।

बड़े भाई ने उसका पूरा हाल सुना और बोला — "मुझे इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होता। पहली बात तो तुमने डिब्बे का ढक्कन खोया फिर उसको वापस लेने के लिये तुम्हारी पत्नी ने एक ब्राह्मण का खून किया।

अब तुम्हारे पास यही एक आखिरी मौका है कि तुम पार्वती जी की पहले से भी ज़्यादा पूजा करो। हो सकता है कि आखीर में तुम उनकी कृपा से अपनी पुरानी फिर से पा सको।"

यह सुन कर छोटा भाई घर लौट गया और पहले से भी ज़्यादा उत्साह से उनकी पूजा करने लगा। आखिर वह खुश हुईं और खुश हो कर उन्होंने उसको उसका खोया हुआ सब कुछ वापस कर दिया। फिर वह और उसकी पत्नी दोनों आनन्द से रहे।

19 एक ब्राह्मण पत्नी और उसके सात बेटे[46]

एक बार की बात है कि अटपट नाम का एक शहर था जिसमें एक ब्राह्मण रहता था जो सावन के महीने के आखिरी दिन अपने पितरों का श्राद्ध बड़ी भक्ति से करता था। उस दिन वह दूसरे ब्राह्मणों को खाना भी खिलाता था।

पर कुछ ऐसा हुआ कि उसके पिता की मौत के बाद से हर साल सावन के महीने के आखिरी दिन उसकी बहू एक बच्चे को जन्म देती थी और जब वह खाना खाने बैठता था तो वह बच्चा मर जाता था सो श्राद्ध की सारी रस्में उसे रोक देनी पड़ती थीं और खाने के लिये बुलाये ब्राह्मणों को भूखे ही वापस भेज देना पड़ता था।

अब यह लगातार छह साल तक चलता रहा। पर जब सातवाँ बेटा केवल मरने के लिये जन्मा तो जब ब्राह्मण खाना खाने वाले ही थे तो उसने बहू को बच्चे को दे कर उसे और बच्चे दोनों को घर से बाहर एक जंगल में निकाल दिया।

वह बेचारी स्त्री चलते चलते एक घने जंगल में आ गयी। वहाँ उसको एक भूत की पत्नी मिली तो उसने उस स्त्री से पूछा — "ए तुम किसकी पत्नी हो और तुम यहाँ क्यों घूम रही हो।

[46] The Brahman Wife and Her Seven Sons. (Tale No 19)

यहाँ से जितनी जल्दी से जल्दी हो सके भाग जाओ क्योंकि अगर मेरे पति ने तुम्हें कहीं देख लिया तो वह तुम्हारे टुकड़े कर कर के खा जायेगा।"

बेचारी बहू बोली कि वह एक ब्राह्मण की बहू है। फिर उसको उसने यह भी बताया कि कैसे पिछले छह सालों से वह सावन के महीने के आखिरी दिन एक बच्चे को जन्म देती रही और कैसे वह श्राद्ध के खाने के बीच मरता रहा। फिर कैसे आज उसके ससुर ने उसको श्राद्ध के खाने से पहले ही घर से बाहर निकाल दिया।

भूत की पत्नी फिर बोली — "अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रा सी भी परवाह है तो यहाँ से तुरन्त ही भाग जाओ।"

ब्राह्मण की बहू ने फिर रोना शुरू कर दिया। आखिर भूत की पत्नी को उसके ऊपर दया आ गयी और वह बोली — "ठीक है डरो नहीं। यहाँ से कुछ दूर चलने पर तुम्हें भगवान शिव का एक मन्दिर मिलेगा। उसके बराबर में ही बेल फल का एक पेड़ खड़ा है। तुम उस पर चढ़ जाना और उसकी पत्तियों में छिप जाना।

आज की रात पाताल लोक से नाग कन्याऐं और जंगल की परियाँ वहाँ भगवान शिव की पूजा करने आयेंगी। उनके साथ सात राक्षस भी होंगे वे भी भगवान शिव की पूजा करेंगे। पूजा करने के बाद वे आवाज लगायेंगे "क्या यहाँ कोई बिन बुलाया मेहमान है जिसको हम कुछ दे सकें।"

तो तुम तुरन्त ही यह कहना कि "हाँ मैं हूँ।"

यह सुन कर पाताल की नाग कन्याऐं और जंगल की परियों को बड़ा आश्चर्य होगा। वह तुमसे कुछ सवाल पूछेंगी तो तुम उनको अपनी सारी कहानी बता देना।"

ब्राह्मण की बहू राजी हो गयी और भगवान शिव के मन्दिर की तरफ चल दी। कुछ दूर चलने पर ही भगवान शिव का मन्दिर आ गया। वहाँ उसको बेल का एक पेड़ खड़ा मिल गया सो वह उस बेल के पेड़ पर चढ़ गयी और उसकी पत्तियों के बीच छिप कर पाताल की नाग कन्याओं जंगल की परियों और सात राक्षसों का इन्तजार करने लगी।

वह वहाँ आधी रात तक बैठी रही। आधी रात को वे सब वहाँ आये और भगवान शिव की पूजा करने लगे। पूजा के बाद वे बोलीं "क्या कोई ऐसा बिन बुलाया मेहमान है जिसे हम कुछ दे सकें।"

ब्राह्मण की बहू तुरन्त ही बोली — "हाँ मैं हूँ।"

यह सुन कर पाताल की नाग कन्याऐं और जंगल की परियाँ बहुत आश्चर्यचकित हुई और उससे पूछा कि वह कौन थी। वह पेड़ से नीचे उतर आयी और उनको अपनी सारी कहानी बतायी।

तब पाताल की नाग कन्याऐं और जंगल की परियों ने अपने सातों राक्षसों को चारों तरफ भेजा कि वे जायें और ब्राह्मण के बच्चों को ढूँढ कर लायें।

सातो राक्षसों ने अपने अपने घोड़ों को सब दिशाओं में दौड़ा दिया। थोड़ी देर में ही उनमें से उनका सरदार एक छह साल के बच्चे को ले कर चला आ रहा था।

उसके आने के कुछ देर बाद ही एक और राक्षस एक दूसरे पॉच साल के बच्चे को लिये चला आ रहा था। और फिर इसके बाद एक चार साल के बच्चे को लिये फिर एक तीन साल के बच्चे को लिये और फिर दो और एक एक साल के बच्चे को लिये चला आ रहा था।

आखीर में सातवॉ राक्षस एक नये पैदा हुए बच्चे के साथ उठ कर खड़ा हो गया। राक्षसों ने सारे शरीर पाताल लोक की नाग कन्याओं के सामने ला कर रख दिये।

कुछ पलों में सबसे पहले वह छह साल वाला बच्चा ज़िन्दा हुआ और अपनी मॉ के पास भाग गया। फिर उसके बाद पॉच साल वाला ज़िन्दा हुआ। उसके बाद चार साल वाला फिर तीन साल वाला फिर दो साल वाला ज़िन्दा हुआ और अपनी मॉ के पास चला गया।

उसके बाद फिर एक साल वाला ज़िन्दा हुआ पर क्योंकि वह बहुत छोटा था इसलिये मॉ के पास भाग कर नहीं जा सका। वह अपनी पीठ के बल लेटा लेटा ही पैर चलाता रहा।

और आखीर में नया पैदा हुआ बच्चा ज़िन्दा हो गया। पर वह तो अपने पैर भी नहीं चला सका।

पर वे सब अपनी माँ को देख कर बहुत खुश थे और माँ तो अपने सारे बेटों को देख कर बहुत ही ज़्यादा खुश थी। पर पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों ने उससे कहा कि वह **64** योगिनियों की प्रार्थना जरूर करे जो मृत्यु की देवी दुर्गा देवी की सेवा में हर समय खड़ी रहती हैं नहीं तो उसके बच्चे उससे फिर से छीन लिये जायेंगे।

साथ में उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह उनकी प्रार्थना बहुत ज़्यादा करे क्योंकि उसकी प्रार्थना को धरती के नीचे पाताल तक यात्रा करनी पड़ेगी।

सो उस बेचारी ब्राह्मण की बहू ने उनकी बहुत ज़्यादा प्रार्थना की और फिर पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों और सातों राक्षसों की उन सबके सामने लेट कर प्रार्थना की।

फिर उसने अपने एक साल के बच्चे को अपनी कमर पर रखा अपने नये पैदा हुए बच्चे को अपनी बाँहों में उठाया और बाकी पाँच बच्चों को साथ ले कर अपने गाँव चल दी।

जब गाँव वालों ने उसे गाँव की तरफ आते देखा तो वे ब्राह्मण के पास दौड़े गये और उसे बताया कि "भाट जी भाट जी आपकी बहू घर वापस आ रही है।"

ब्राह्मण यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने सोचा कि उसको घर आने दो मैं उसको घर से फिर बाहर निकाल दूँगा और वह उसका इन्तजार करता रहा।

जब वह उसको दिखायी दी तो उसने देखा कि सबसे आगे एक छह साल का लड़का चला आ रहा था। उसके बाद एक पाँच साल का फिर एक चार साल का उसके पीछे एक तीन साल का और सबसे पीछे एक दो साल का लड़का चला आ रहा था। एक बच्चा उसकी पीठ पर था और सातवाँ उसकी गोद में।

वह तुरन्त ही उठा एक लोटा पानी लाया और एक मुट्ठी भर चावल लाया। चावल भरी मुट्ठी उसने अपनी बहू और पोतों के सिर पर वार फेर कर के जमीन पर बिखेर दी और पानी बहू के घर में घुसने से पहले अपने घर के दरवाजे के दोनों तरफ छिड़का और पानी से उन सबके पैर धोये तब उनका घर में स्वागत किया।

तब उसने बहू से उसकी सारी कहानी सुनी और फिर सब अपने घर में बहुत खुश खुश रहे।

20 सोने का मन्दिर[47]

एक बार की बात है कि एक शहर था अटपट। उस शहर के राजा की चार बहुऐं थीं। वह अपनी तीनों बड़ी बहुओं को तो बहुत प्यार करता था पर उसकी चौथी बहू थोड़ी बदसूरत थी।

वह तीनों बड़ी बहुओं को अच्छा खाना और कपड़े देता था पर अपनी चौथी बहू को खाने के लिये अपनी मेज से बचा खुचा खाना देता था और पहनने के लिये मोटे झोटे कपड़े देता था।

वह अपनी तीनों बहुओं को घर के अन्दर सुलाता था पर चौथी बहू को घुड़साल में सुलाता था और उससे गाय चरवाता था। चौथी बदसूरत बहू बेचारी एक बार इतनी दुखी हुई कि अगली बार जब सावन के महीने का सोमवार आया तो वह महल से भाग गयी।

वह शहर से भी भाग गयी और वहाँ तक भागती चली गयी जहाँ तक उसकी मोटी टाँगें उसको ले कर भागती रहीं। आखिर वह एक जंगल में चली गयी।

अब हुआ यह कि इत्तफाक से उस दिन पाताल लोक से नाग कन्याओं का एक झुंड आया। कुछ देर जंगल में घूमने और नदियों में नहाने के बाद कुछ जंगल की परियाँ भी उनके साथ हो लीं। अब वे सब उसी की तरफ बढ़ी चली आ रही थीं।

---

[47] The Golden Temple. (Tale No 20)

पहले तो उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला पर फिर बाद में हिम्मत कर के उसने उनसे पूछा कि वे कहाँ जा रही थीं। उन्होंने जवाब दिया कि वे सब भगवान शिव के मन्दिर उनकी पूजा करने के लिये जा रही थीं। क्योंकि इस पूजा से उनको अपने अपने पतियों से ज़्यादा प्यार मिलेगा बच्चे मिलेंगे और उनके मन की इच्छा पूरी होगी।

जब चौथी बहू ने नाग कन्याओं और जंगल की परियों से यह सुना कि वे सब क्या करने जा रही थीं तो उसने सोचा मैं भी इनके साथ चल कर भगवान शिव की पूजा करने चलती हूँ। शायद मैं भी अपने ससुर का प्यार पा जाऊँ। सो उसने उनसे कहा कि वह भी उनके साथ भगवान शिव की पूजा करने चलेगी।

वे सब जंगल में गहरे और गहरे चलती चली गयीं। वहाँ जा कर उन सबने चावल सुपारी धूप दीप फल और बेल के पत्तों से उनकी पूजा की।

पूजा करने के बाद बहू रो कर बोली — "हे भगवान शिव। आपने मेरी पूजा स्वीकार की। अब मेरी प्रार्थना भी स्वीकार करो कि मेरे ससुर सास ननद जेठानी सब मुझको उससे ज़्यादा प्यार करें जितनी कि वे सब अभी मुझसे नफरत करते हैं।"

उस शाम को वह अपने घर वापस चली गयी। शाम को राजा ने उसको अपनी खाने की मेज से जो बचा हुआ खाना दिया वह

उसने अपनी गाय को खिला दिया और खुद भगवान शिव की पूजा करने बैठ गयी।

अगले सोमवार को वह फिर से महल से बाहर शहर से बाहर जंगल में चली गयी। वहाँ उसे फिर से पाताल की नाग कन्याऐं और जंगल की परियाँ मिलीं। वह उनके साथ फिर से जंगल के बीच में शिव जी के मन्दिर चली गयी।

पहली बार जब वह उनके साथ शिव जी की पूजा करने गयी थी तो उन्होंने उसे अपने पास से अपने चावल फूल बेल के पत्ते आदि दिये थे जिनसे उसने उनकी पूजा की थी पर साथ में उन्होंने उससे यह भी कहा था कि अगली बार जब वह पूजा करने आये तब उसे वह सब सामान अपना लाना चाहिये।

इसलिये जब वह दूसरे सोमवार को महल से पूजा करने के लिये गयी तो वह अपना पूजा का सामान ले गयी। उससे पूजा करने के बाद उसने भगवान शिव की एक बार और प्रार्थना की — “हे भगवान शिव मेरी प्रार्थना एक बार और सुनो। मेरे ससुर सास ननद जेठानी सब मुझको उससे ज़्यादा प्यार करें जितनी कि वे सब अभी मुझसे नफरत करते हैं।”

उसके बाद वह घर चली गयी और व्रत किया। अपना पूरा खाना उसने अपनी प्यारी गाय को खिला दिया और खुद वह बैठ कर भगवान शिव की पूजा करती रही।

उस शाम राजा ने उससे पूछा कि वह किस भगवान की पूजा कर रही थी और वे कहाँ रहते थे।

बदसूरत बहू ने जवाब दिया — "मेरा भगवान बहुत दूर रहता है। उसके पास जाने का रास्ता भी बहुत कठिन है काँटों से भरा हुआ है। वहाँ साँप भी बहुत सारे हैं और चीते भी चारों तरफ घूमते रहते हैं। ऐसी जगह उनका मन्दिर है।"

तीसरे सोमवार को बदसूरत बहू फिर से जंगल जाने के लिये तैयार हुई। उसने अपना पूजा का सामान लिया धूप फूल चावल सुपारी बेल के पत्ते आदि पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों से मिलने चल दी।

इस बार राजा और बहू के दूसरे आदमी रिश्तेदार भी उसके पीछे पीछे चले। उन्होंने उससे कहा कि वह उनको भी अपना भगवान दिखाये।

पर शिव जी का मन्दिर राजा के महल से बहुत दूर था। सो बहू को तो इस बात का ज़्यादा पता नहीं चला क्योंकि उसको तो तकलीफों की आदत थी। वह तो मन्दिर दो बार पहले भी जा चुकी थी। उसके पैर तो इतने सख्त हो गये थे जैसे दो छोटे पत्थर।

पर राजा और दूसरे लोग तो मरे जैसे हो रहे थे। उनके सबके पैर तो जैसे हाथी के पैर जैसे हो रहे थे।

उनके सबके शरीरों पर बहुत सारे कॉटे लगे हुए थे जैसे साही[48] की पीठ पर लगे रहते हैं। वे सब आपस में कहते जा रहे थे "यह बदसूरत लड़की इतना कैसे चल लेती है और वह भी जंगल में।

बहू को उन सबके लिये बहुत दुख हुआ तो उसने भगवान से प्रार्थना की वह अपना एक मन्दिर वहीं पास में ही बनवा दें। भगवान ने उसकी सुनी और अचानक ही पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों की सहायता से उन्होंने वहाँ असली चमकते पीले सोने का मन्दिर बनवा दिया।

उसके खम्भे जवाहरातों से जड़े हुए थे। उसमें जो बर्तन रखे हुए थे वे क्रिस्टल के थे। उस मन्दिर के बीच में शिव जी की मूर्ति खड़ी हुई थी। इस सबके बाद में भगवान शिव ने राजा और उसके साथ आने वालों को अपनी पूरी शान के साथ दर्शन दिये।

उन सबने उनको केवल एक पल के लिये ही देखा क्योंकि उसके बाद वह सब गायब हो गये। राजा और उसके साथियों की तो सिट्टी पिट्टी ही गुम हो गयी तो वे तो कुछ बोल ही नहीं सके।

पर इस बीच चौथी बहू ने उनको लेट कर प्रणाम किया और प्रार्थना की — "हे भगवान शिव मेरी प्रार्थना एक बार और सुनो। मेरे ससुर सास ननद जेठानी सब मुझको उससे ज़्यादा प्यार करें जितनी कि वे सब अभी मुझसे नफरत करते हैं।"

---

[48] Translated for the word "Porcupine"

जब राजा ने उसकी यह प्रार्थना सुनी तो बहू की तरफ से उसका दिल पिघल गया। वह बड़ी नर्मी से अपनी बहू से बोला और उसको बहुत सारा गहना और छोटी छोटी चीज़ें दीं।

कुछ पल बाद उसने अपने सिर से अपनी पगड़ी उतार कर मन्दिर में लगी एक खूँटी पर रखी और एक सुन्दर झील देखने चला गया जो वहॉ पास में ही बिना किसी को पता चले प्रगट हो गयी थी। राजा के पीछे पीछे उसके साथी भी चले गये।

पर जैसे ही वे सब ऑखों से ओझल हो गये तो सोने का मन्दिर भी उनके पीछे पीछे ओझल हो गया। झील देख कर राजा अपनी पगड़ी लेने के लिये मन्दिर वापस लौटा पर उसको तो वह असली सोने का जवाहरात जड़े खम्भों वाला और क्रिस्टल के बर्तनों वाला वह मन्दिर कहीं दिखायी नहीं दिया।

उसने अपनी बहू से इस तरह उस मन्दिर के गायब हो जाने की वजह पूछी। वह कुछ नहीं बोली और जंगल में और गहरे जंगल में चलती चली गयी। राजा और उसके साथ जो थकान के मारे मरे जा रहे थे अपनी बहू के पीछे पीछे चलते रहे।

आखिर वे उस मन्दिर में आ पहुॅचे जिसमें उनकी बहू पाताल की नाग कन्याओं और जंगल की परियों के साथ शिव जी की पूजा करती थी। यह एक छोटा सा मन्दिर था और उसके अन्दर एक ऊबड़ खाबड़ सी मूर्ति थी।

उसके पैरों में वे फूल रखे हुए थे जो उनकी बहू ने भगवान को चढ़ाये थे। उसके पास की एक खूँटी पर उसकी छोड़ी हुई पगड़ी लटकी हुई थी।

राजा ने अपनी बहू से फिर पूछा कि यह सब क्या हुआ तो बहू बोली — "यह मेरा अपना छोटा सा मन्दिर है पर मेरी प्रार्थना सुन कर भगवान ने अपने आपको आपको दिखाने के लिये एक सुन्दर मन्दिर बनाया और उसमें अपने आपको आपको दिखाया।"

जब राजा ने अपनी बहू का यह जवाब सुना तो वह तो अपनी उस बहू से बहुत ही खुश हो गया जिससे वह पहले इतनी ज़्यादा नफरत करता था।

और जब उसको यह पता चला कि उसकी बहू की प्रार्थना पर भगवान ने उसे दर्शन दिये तब तो वह बहुत ही खुश हो गया। उसने उसके लिये शाही पालकी मँगवायी और शाही शान से घर ले गया।

अब उसकी सबसे ज़्यादा नफरत वाली बहू उसकी सबसे ज़्यादा प्यारी बहू बन गयी थी। उसकी तीनों जेठानियाँ अब उससे जलने लगी थीं। पर राजा और छोटी बहू ने इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया और वे सब खुशी खुशी बहुत सालों तक ज़िन्दा रहे।

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen	**Shuk Saptati.**
No 29	By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot". शुक सप्तति — ।
c1323	**Tales of Four Darvesh**
No 24	By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes. किस्सये चहार दरवेश
1868	**Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23	By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889). पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ
1872	**Indian Antiquary 1872**
No 34	A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.
1880	**Indian Fairy Tales**
No 30	By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales. हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ
1884	**Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
	By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.
1887	**Folk-tales of Kashmir.**
No 11	By James Hinton Knowles. 64 Tales. काश्मीर की लोक कथाऐं
1889	**Folktales of Bengal.**
No 4	By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales. बंगाल की लोक कथाऐं
1890	**Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18	By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. 26 Tales सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं
1892	**Indian Nights' Entertainment**
No 32	By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales. भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें : hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरेल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022